December II 2014

Every Fortnight

मूल्य ♦
दस रुपए

क्रिसमस

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन क्रिसमस विशेष वर्ष- 29 अंक- 11 15-31 दिसम्बर, 2014 पृष्ठ- 68

घमंडी दीपक
एक दीपक था। बड़ा घमंडी...।
हुम्...इस घर में हर कोई मुझे चाहता है। मेरे बिना किसी का काम नहीं चलता।
तुम भी मेरे बिना कुछ नहीं कर सकते।
हम्म्....यह दीपक तो बड़ा ही घमंडी हो गया है।
देखो, मूर्खतापूर्ण बातें मत करो। तुम्हारा वजूद तो मेरी वजह से है।
रहने दो...अभिमान मत करो...।
अचानक, तेज हवा चली और दीपक बुझ गया।
बहुत इतराते थे..अब कहां गई तुम्हारी लौ...!
?!
जल्दी ही घर की मालकिन आयी और फिर से दियासलाई से दीपक जलाया।
यह दीपक तो थोड़ी हवा से बुझ जाता है। अच्छा हुआ जो जल्दी ही माचिस मिल गई।
हा...हा...
मुझे घमंड नहीं करना चाहिये था।

वर्ष- 29 अंक-11

दिसम्बर (द्वितीय) 2014, जयपुर

विविध

कविताएं- 5
गुदगुदी- 12-13
सीख सुहानी- 14
सैरसपाटा- 16-17
इल्यूजन- 18-19
बोलें अंग्रेजी- 21
तथ्य निराले- 22-23
सामान्य ज्ञान- 24-25
क्रिसमस न्यूज़- 27
बालहंस पोस्टर- 34-35
देश-विदेश में क्रिसमस- 36-38
हैप्पी क्रिसमस- 39
मैरी क्रिसमस- 40-41
क्रिसमस ट्री की मान्यताएं- 42-43
क्रिसमस पर सजावट- 44
क्रिसमस की डिक्शनरी- 45
क्यों और कैसे/
कमाल है- 46
क्रॉसवर्ड पजल्स- 47
बालमंच- 48
नॉलेज बैंक- 49
आर्ट जंक्शन- 50-51
माथापच्ची- 52-53
किड्स क्लब- 54
ठिकाना तो बताना- 55
चीन के सबसे खतरनाक
सांप- 56-57
ढूंढो तो...- 61
अंतर बताओ- 62
कैसा लगा- 66

प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम-58
ज्ञान प्रतियोगिता-59
रंग दे प्रतियोगिता-60

कहानियां

ताकिन- 6
बिछड़ी हुई गुड़िया- 7-9
छींक आती रही- 10-11
क्रिसमस का कैसा उपहार- 15
सेंटा की एंजल- 26
जादुई जूते- 28-29

चित्रकथा

परिश्रम और भाग्य
30-33
शेर की सुरक्षा
63-65

क्रिसमस विशेष

संपादक
आनन्द प्रकाश जोशी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

संपादकीय सहयोग
किशन शर्मा

चित्रांकन

पृष्ठ सज्जा: **शेरसिंह**
फोटो एडिटिंग: **संदीप शर्मा**

संपादकीय सम्पर्क

बालहंस (पाक्षिक)
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
दूरभाष: 0141-3005857
e-mail: balhans@epatrika.com

ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं।
वार्षिक- 240/-रुपए
अर्द्धवार्षिक- 120/-रुपए

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिए 0141-3005825 पर संपर्क करें।

अब बालहंस एक क्लिक पर, **log on** करें : **balhans.patrika.com**
फेसबुक पर पढ़िये: **www.facebook.com/patrikabalhans**

वो व्यक्ति जिसके मन में क्रिसमस नहीं है, वो कभी भी पेड़ (क्रिसमस) के नीचे उसे नहीं ढूंढ़ सकता।

संपादकीय

दोस्तो,

क्रिसमस आने वाला है। सेंटा क्लॉज का इंतजार शुरू हो चुका है। देखें वे इस बार क्या लेकर आते हैं। वे भले ही कोई गिफ्ट लेकर प्रत्यक्ष रूप में आएं, न आएं, पर प्रेम का संदेश तो वे लेकर आते ही हैं। आप सब सोचते होंगे कि आखिर सेंटा क्लॉज ढेर सारे उपहार लेकर एक ही रात में दुनियाभर के सभी घरों में कैसे पहुंच सकता है! दोस्तो, हम सब के बीच ही एक सेंटा छुपा होता है, लेकिन हम उसे पहचान ही नहीं पाते। सेंटा बिना किसी स्वार्थ के सब के जीवन में समान भाव से खुशियां ले कर आता है। हमें भी उस से एक सबक लेना चाहिए कि हम भी किसी को खुशी दे सकें। यदि ऐसा हम कर सकें तो शायद इस क्रिसमस पर्व के सच्चे अर्थों को समझ पायेंगे। तो क्यों न हम अपने जरूरतमंद दोस्तों की मदद करने के लिये आज ही आगे आयें। सेंटा से उपहार की आशा हम रखते हैं, यदि हम किसी गरीब के लिये सेंटा बन जाए तो क्या यह हमारे लिये क्रिसमस के उपहार से कम होगा? शायद यह उससे भी बढ़कर हो। हैप्पी क्रिसमस!

तुम्हारा बालहंस

क्रिसमस

देखो-देखो बरफ गिरी है
कितनी प्यारी मखमल-सी है
बर्फ के गुड्डे मन को भाए
चलो सभी के संग बनाएं।
गोल-मोल से लगते प्यारे
गाजर नाक लगाये सारे
आया जो क्रिसमस का मौसम
घर बाहर को कर दें रोशन।
राजू क्यों है आज उदास
आओ चल कर पूछें पास,
मम्मी बोली उसकी अब के
होंगे नहीं क्रिसमस पे तोहफे
उसने मां को खूब सताया
इसीलिये ये दंड पाया।
सेंटा उनको तोहफा देते
मम्मी का जो कहना सुनते
हम अच्छे बच्चे बन जाएं
सुंदर-सुंदर तोहफे पाएं।

–मानोशी चटर्जी

सेंटा आया है

बर्फ सी सफेद झक दाढ़ी,
रेंडियर खींचते जिसकी गाड़ी।
सेंटा क्लॉज आया है,
उपहारों का थैला लाया है।
थैले में टीना की बॉल,
साथ में है रीना की डॉल।
चुन्नू-मुन्नू दोनों आओ,
मीठी-मीठी चॉकलेट पाओ।
संदेश यीशु का सेंटा लाया,
बच्चे-बड़े सबको समझाया।
द्वेष-घृणा से दूर रहो,
सभी प्राणियों से प्रेम करो।

–शिववरण सरोहा

लौटा दो बचपन

कांधे झोला लेकर सेंटा
गली-गली में घूम रहा है।
बच्चों को आवाज लगाकर
उपहारों की पूछ रहा है।
उन्हें दिखाता भालू-बंदर
मोटरगाड़ी गुड्डे-गुड़िया।
तरह-तरह की नई किताबें
बिस्किट चॉकलेट और टॉफियां।
पर बच्चे तो बड़े हुए ज्यों
ये सब तोहफे नहीं ले रहे।
स्मार्ट फोन और नोट बुक की
वे फरमाइश आज कर रहे।
प्यारे सेंटा ये उपहार
भले ही तुम वापस ले जाओ।
क्रिसमस पर बच्चों का बचपन
पर तुम फिर लौटाकर जाओ।

–कुसुम अग्रवाल

ताकिन

कहानी

पहाड़ी जंगल में एक ताकिन जोड़ा रहता था। उनके यहां एक बच्चा पैदा हुआ। वे उसे नन्हे कहते हैं। नन्हे की देखभाल उसकी मां करती है। धीरे-धीरे नन्हे बड़ा होने लगा, और चरने के लिए जंगल में जाने लगा। जंगल में उसे कई जानवर दिखाई दिये। उसने यह बात अपनी मां को बताई।

'तुम मांसभक्षियों से सावधान रहना!'

'मांसभक्षी कौन होते हैं मां?'

'शेर, भेड़िये, कु□ा, लकड़बग्घे आदि जो जानवर शिकार करते हैं, वे मांसभक्षी होते हैं। वे तु□हें मार कर □ा जाएंगे।' मां ने समझाया।

नन्हे ने यह बात अच्छी तरह समझ ली। वह केवल घास-पात खाने वाले जानवरों के साथ ही चरने लगा। वहां चरने वाले जानवरों के साथ उसकी अच्छी जान-पहचान हो गयी। एक दिन नन्हे ने अपनी मां से पूछा, 'मैं अन्य जानवरों से अलग दिखाई देता हूं। ऐसा □यों है?' मां ने हंसते हुए कहा, 'बेटा, सभी जानवर एक-दूसरे से भिन्न होते हैं! इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है।' 'नहीं, मेरा अर्थ यह है कि हिरण हिरण की तरह होता है।' नन्हे ने अपनी बात समझाने का प्रयास किया, 'लेकिन मैं दो जानवरों की तरह लगता हूं।'

नन्हे की मां अच्छी तरह जानती है कि नन्हे □या जानना चाहता है। फिर वह हंसते हुए बोली, 'तुम भी ताकिन के सामने नजर आते हो। फिर अलग कैसे हुए?' नन्हे ताकिन ने सोचते हुए कहा, 'हिरणों का सिर और धड़ दोनों ही हिरणों के होते हैं। लेकिन मेरा सिर और धड़ अलग-अलग □यों हैं? वे दो भिन्न जानवरों के समान हैं।'

'तु□हें आज रात एक कहानी सुनाऊंगी। तब तुम यह बात समझ जाओगे।' मां ने उसे आश्वासन दिया। शाम होते ही नन्हे अपनी मां के पास लेटते हुए बोला, 'अब तुम वह कहानी सुनाओ। मैं जानना चाहता हूं कि ताकिन के सिर और धड़ दो भिन्न जानवरों के □यों होते हैं?'

मां ने कहानी सुनाई। बहुत दिनों पहले की बात है। यहां जंगल के पास पहाड़ी गांव में एक संन्यासी आया। उसने लोगों को प्रवचन दिया। गांव वालों ने संन्यासी से कहा, 'पहले तुम प्रमाण दो कि सच्चे संन्यासी हो।' संन्यासी ने मुस्कराते हुए पूछा, '□यों? सच्चे संन्यासी की पहचान □या होती है?' 'सच्चा संन्यासी चमत्कार कर सकता है।' भोले-भाले गांववासियों ने कहा। 'ठीक है। मैं तु□हें कुछ ऐसा करके दिखाता हूं कि तु□हें मुझ पर विश्वास हो जाये। परन्तु फिर तुम जानवरों को नहीं मारोगे। उन पर दया करोगे।' संन्यासी ने ग्रामवासियों से वचन लिया।

'हां, हम तु□हारी बात मानेंगे।' उन्होंने संन्यासी को आश्वासन दिया। 'अच्छा तुम कोई दो जानवरों के अंग ले आओ।' संन्यासी ने कहा। कई लोग गांव के बाहर फेंके गये, एक बकरे का सिर और मरी हुई गाय का धड़ ले आये। वे अंग संन्यासी के सामने रख दिये गये। उसने कुछ मंत्र पढ़े और दोनों जानवरों के साथ रखे अंगों पर फूंक दिया।' इतनी कहानी सुनाते हुए मां चुप हो गई। 'फिर □या हुआ? □या दोनों मृत जानवर जीवित हो गये?' नन्हे ने आश्चर्य से पूछा।

'बकरे के सिर और गाय के धड़ जुड़ते हुए एक जानवर जीवित हो गया। तब संन्यासी ने उस विचित्र जानवर से कहा, 'तुम बहुत कमजोर और सूखे हो। जाओ और जंगल में चरते हुए अपना स्वास्थ्य बनाओ।' संन्यासी का आदेश सुनते ही वह विचित्र प्राणी जंगल में चला गया। 'मैं समझ गया।'

नन्हे ने कहा, 'मुझे आज पता चल गया कि मेरा सिर बकरे और धड़ गाय के समान □यों है?' लोगों को ताकिन जानवरों पर दया करने का वचन याद दिलाता है। आज भी उस पहाड़ी क्षेत्र में कोई भी शिकार नहीं करता है। बकरे के सिर और गाय के धड़ वाले ताकिन का

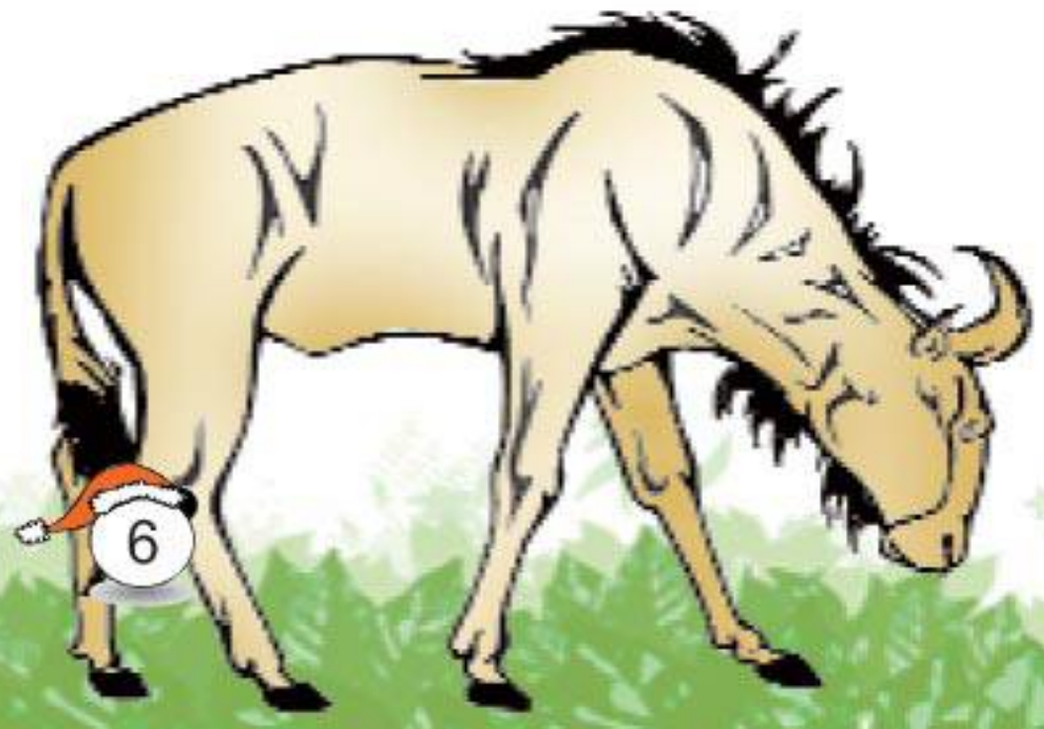

बिछड़ी हुई गुड़िया

आज सुबह से ही मौसम बड़ा सुहावना हो चला था। थोड़े-थोड़े बादल और धूप हो रही थी। इससे डा.मधुसूदन और उनकी पत्नी जमनाप्रिया के मन में निरंतर खुशी की लहरें उठ रही थीं। पूरे पांच वर्ष बाद उनका लाड़ला बेटा परिमल रूस से आ रहा था।

अच्छे न□बर पाने के कारण उसे अच्छे वेतन पर रूस बुला लिया गया था। वहीं उसने एक रूसी युवती वार्या से शादी कर ली थी। ढाई-तीन साल पहले उनकी बेटी लाज मैरी का जन्म हुआ था। सभी आ रहे थे। उनके स्वागत में घर को खूब सजाया गया था। नौकर-चाकर बड़ी मुस्तैदी से काम कर रहे थे। इस पर भी जमनाप्रिया ने अपने हाथों से मेवे डालकर खीर तैयार की थी। परिमल को खीर बहुत पसंद थी।

स्टेशन पास ही पड़ता है। गाड़ी दस बजे आनी थी। कार में जाते देर ही कितनी लगती। वे बार-बार बड़ी बेताबी से घड़ी देख रहे थे। अभी-अभी नौ चालीस ही हुए थे कि परिमल सपरिवार आ पहुंचा। कहा, 'गाड़ी समय पर पहुंच गई।' उसने माता-पिता के पांव छुए। उसे देखकर वार्या ने भी दोनों के पांव छुए। लाजमैरी नन्हे हाथों से नमस्ते कर रही थी। उसे सिखाकर लाया गया था।

डा.साहब ने आगे बढ़कर उसे अपनी गोद में ले लिया। अहा कितनी सुंदर प्यारी गुड़िया है। उसके मुलायम गोरे गालों को थपथपाते हुए बोले, 'तू मेरी गुड़िया है ना।' जमनाप्रिया उनके हाथों से मैरी को छीन लेती है, हूं आपकी? नहीं यह मेरी गुड़िया है। मैं दादी हूं। पहला हक मेरा बनता है। लाजमैरी! यही नाम है ना तेरा। लाजमैरी हाथ ऊपर उठा कर बोलती है, 'बी ओवा ओचिन खरोशीय।'

यह □या बोलती है। हमारी तो कुछ समझ में नहीं आता। परिमल ने बताया, 'यह कह रही है, आप दोनों बहुत अच्छे हैं।' आप तो वार्या की बातें भी नहीं समझ पाएंगे। फिर दोनों ने कहा, 'कोई बात नहीं। हम भाषा नहीं समझ सकते तो □या हुआ भाव तो समझ ही सकते हैं। बाकी तुम समझा दिया करोगे। □यों परिमल?'

परिमल उत्साहित स्वर में बोला, 'इसमें □या दि□कत है। मैं वहां सभी से रूसी भाषा में ही बात करता हूं। हां अगर कोई भारतीय मिलता है, तो उसे अपनी मातृभाषा में बात करना बहुत ही सुहाता है।' मां बोली, 'हां बेटे अपनी भाषा को सदा मह□व देना चाहिए। लो चाय आ गई।

पृष्ठ सं□या 8-9 पर जारी...

पृष्ठ संया 7 से जारी...

'ओह यस प्यारी म□मी,' परिमल मां से लिपटने लगता है। लाजमैरी प्यार भरी मुस्कान बिखेरती हुई कुछ कहती है।

परिमल उसे समझाता है। जिस तरह वार्या तु□हारी म□मी है, उसी प्रकार यह मेरी म□मी है। और यह है मेरे पापा। तेरे दादी-दादा। हं...हं...हं..., लाजमैरी के मुंह से खुशी से किलकारी निकलती है।

शाम को लाजमैरी बड़ी खिड़की खोलती है। सामने, हरा-भरा मैदान है। बहुत सारे बच्चे, भागते-दौड़ते खेल रहे हैं। वह दादी को इशारा करती है। जमनाप्रिया उसकी अंगुली पकड़ कर बच्चों के बीच ले जाती है। बोली, 'इसे भी अपने साथ खिलाओ।' सब के सब बच्चे लाजमैरी को देखकर बहुत खुश होते हैं। एक बच्चा, 'वाह इतनी प्यारी, गोरी, गोरी गोलमटोल गुड़िया।' दूसरा बच्चा, 'हां, हां यह हमारे साथ जरूर खेलेगी।' तीसरा बच्चा, 'खेलेगी ना गुड़िया?' संकेत समझ कर मैरी अपना सिर ऊपर-नीचे करती है।

एक बड़ी लड़की बोली, 'गुड़िया तेरा नाम □या है?' दादी बताती है, 'इसका नाम लाजमैरी है। रूस से आई है।' सभी बच्चे एक साथ, 'लाजमैरी। लाजमैरी। यह बस मेरी गुड़िया है। और किसी की नहीं।'

इसी प्रकार हर शाम को मेरी गुड़िया, मेरी गुड़िया की होड़ लगी रहती है। बच्चे हिलमिल कर खेलते रहते हैं। लाजमैरी खूब बातें करती हैं, जो किसी की भी समझ में नहीं आती। बच्चे हिलमिल कर खेलते रहते हैं। पर मैरी यही समझती है कि सब बच्चे उसकी बातें समझ रहे हैं। जैसे छोटे बच्चे, चिड़ियों, कु□ा, बंदरों, कूबतरों आदि से बातें करते हैं और समझते हैं कि वे सब सुन-समझ रहे हैं।

ठीक इसी प्रकार से सभी बच्चे हिन्दी में, मैरी से बोलते-बतियाते रहते हैं, जो लाजमैरी की समझ में नहीं आती। इस पर दोस्ती तो प□की होती जाती है। भावनाओं के कारण।

इसी तरह दस दिन बीत जाते हैं। परिमल अपने माता-पिता से बोला, 'हम दोनों की छुट्टियां समाप्त हो चली हैं। हमें कल वापस रूस लौटना होगा।' लाज मैरी दादा-दादी से लिपट कर जोर से रोने लगी। 'मैं नहीं जाऊंगी आप ही के पास रहूंगी।' दादी ने कहा, 'इससे हम दोनों का भी मन लगा रहेगा।' वार्या का मत था। बिना माता-पिता के बच्चा ज्यादा समय तक और कहीं रह नहीं पाता। सोच-समझ लीजिए। अंत में लाजमैरी की जिद के सामने किसी की न चली। परिमल वार्या उसे वहीं छोड़कर रूस चले गये। दस-पन्द्रह दिन तो मजे से बीत गये। फिर लाजमैरी उदास रहने लगी। दादा-दादी

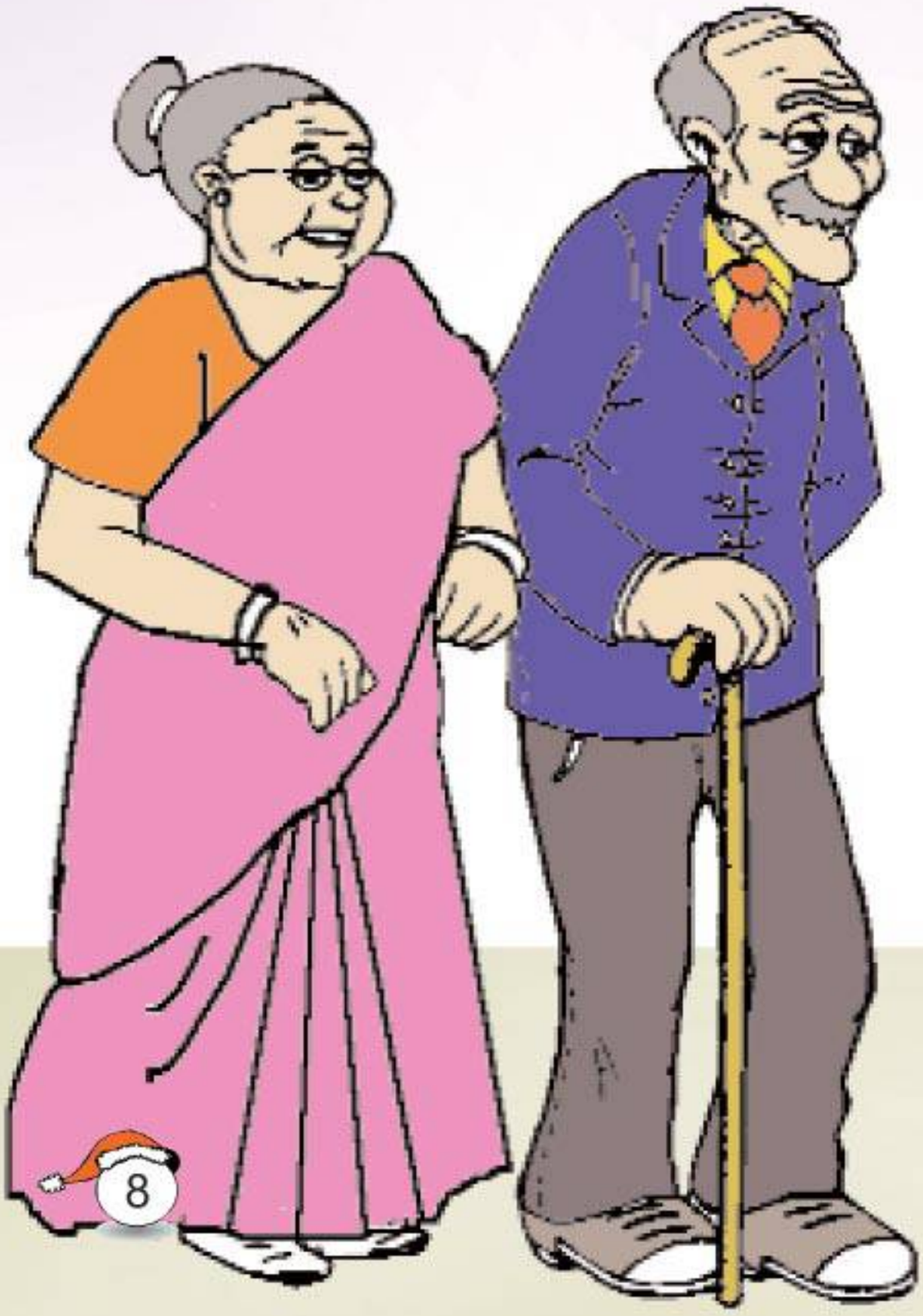

उसे समझाते, 'दूर का रास्ता है। तेरे पापा को इतनी छुट्टी नहीं मिल सकती।' हर तरह से उनका मन बहलाने की चेष्टा करते। मोहल्ले के बच्चों को घर भी बुलाने लगे। सब उसको खिलाते। टॉफियां देते। खेतों में घुमाने ले जाते। कुछ समय के लिए नन्ही परी सी मैरी बहल जाती। फिर उदास होने लगती। इसी प्रकार दस दिन और गुजर गये।

कहानी

एक दिन आसमान काले बादलों से भरा हुआ था। हल्की-हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी। सुबह का व□त था। दादा-दादी अभी उठे नहीं थे। लाजमैरी आंखें मलती हुई रेल्वे स्टेशन जा पहुंची। सामने एक गाड़ी थी। उसमें जा बैठी। गाड़ी चल दी। दिन का उजास हो गया। सूरज भी दिखाई देने लगा।

चार-पांच स्टेशनों के बाद, एक स्टेशन के बाहर भवनों और खेतों को देखकर लाजमैरी खिल उठी, 'अहा वोत इसदिस झे येस्त दोम' (अहा यहीं तो हमारा घर है)। वह गाड़ी से उतर जाती है। गाड़ी चल देती है। मैरी खेतों-पगडंडियों की ओर चल देती है। बढ़ती ही चली जाती है। पर उसे अपना घर कहीं दिखाई नहीं देता। सामने बहुत सारे बच्चे खेल रहे हैं। सभी एक साथ कह उठते हैं, 'कितनी प्यारी जापानी गुड़िया है।' यश और दूसरे बच्चे उसे प्यार करते हैं। गुड़िया हमारे साथ खेलो। लाजमैरी सब कुछ भूलकर उनका संकेत पाते ही उनके बीच खेलने लगती है।

कुछ देर बाद खेल समाप्त हुआ। सब बच्चे अपने-अपने घर वापस जाने लगे। कुछ बच्चे रुक गये। पूछा, 'गुड़िया तुम कहां जाओगी? तु□हारा घर कहां है?' लाजमैरी थोड़ा घबरा गयी। इधर-उधर देखकर कुछ संकेत किये। कुछ बोली, पर किसी की समझ में कुछ न आया। मैरी कह रही थी, 'नी जन्ना यू' (पता नहीं)।

अब बच्चों की समझ में आया। यह तो कोई विदेशी बेबी है। भटक कर यहां आ पहुंची है। यश ने उसे अपने से सटा लिया, 'यह गुड़िया मेरे साथ जाएगी। मेरी बहन नहीं। मैं इसे अपनी बहन बनाऊंगा।' वह मैरी की उंगली थामे अपने घर ले गया। यश के माता-पिता बड़े खुश हुए। फिर बाद में यश के पिता घबरा गए। बच्चा चुराने के शक पर उन पर कोई संकट आ सकता है। वे अपने मित्र पुलिस इंस्पे□टर दिनेश यादव के पास पहुंचे। उन्हें घर पर बुला लाए। सारा हाल बताया।

इंस्पे□टर साहब बोले, 'आप घबराए नहीं। इसे अपने यहां रखे रहें। मैं केस दर्ज कर लूंगा और खोज-बीन कराएंगे।' पांच-सात दिनों में बच्ची, परिवार और मोहल्ले वालों से हिलमिल गई।

उधर दादी का रोते हुए बुरा हाल था। दादा भी कम परेशान नहीं थे। वे भाग-दौड़ कर रहे थे। बेटे-बहू को □या मुंह दिखाएंगे। फोन कर उन्हें और परेशानी में नहीं डालना चाहते थे। इतनी दूर बैठे वे कुछ कर तो नहीं सकते। इसलिए वे थोड़ी प्रतीक्षा कर लेना चाहते थे।

रतन श्रीवास्तव इसी गांव का विद्यार्थी था। वह राजधानी में कॉलेज में पढ़ता था। राजधानी यहां से ज्यादा दूर नहीं पड़ती थी। वह गांव आया हुआ था। उसे जब यह सब मालूम हुआ तो वह यश, लाजमैरी व दो और बच्चों को लेकर राजधानी गया। एक के बाद एक दूतावासों के च□कर काटे। अंत में रूस के राजदूत ने लाजमैरी की बात समझी। उन्होंने फोन पर फोन मिलाए। पर यह काम बहुत आसान नहीं था। उन्होंने कहा, 'हमारे देश की सीआईडी पुलिस बहुत मुस्तैद है। जल्दी पता चल जाएगा। तब तक आप अपना पता ठिकाना नोट करा कर मिस मैरी को अपने यहां रखे रहें।'

डा.मधुसूदन ने अंततः परिमल को फोन कर दिया था। वे भारतीय और रूसी दूतावास से संपर्क बनाए हुए थे। पांचवें दिन सब को सफलता मिल गई। वार्या और परिमल पहली उड़ान से भारत आ गए। पहले अपने माता-पिता के घर पहुंचे। फिर सब मिलकर यश के घर। अभी सुबह के सात ही बजे थे। यश का दरवाजा बज उठा। सभी ने बाहर आकर देखा। बहुत सारे लोग हैं। जो लाजमैरी को लेने आए थे। मैरी, म□मी, पापा, दादा, दादी से लिपट लिपट जाती। यश के घर वालों ने उनका स्वागत किया, नाश्ता कराया।

वार्या बोली, 'पायदोमा लाजमैरी दामोई' (लाजमैरी चलो घर)। लाजमैरी ने कहा, 'मैं यहीं रहूंगी। वह यश के साथ लिपट कर रोने लगती है। यश रोने लगता है, 'मैं अपनी बहन को नहीं ले जाने दूंगा।' वार्या और परिमल यश को प्यार करते हैं। समझाते हैं। बच्चे मां-बाप के बिना नहीं रह सकते। यह तु□हें रा□ी भेजा करेगी। हम तु□हें इससे मिलने, रूस घुमाने बुलाया करेंगे। बड़ी मुश्किल से यश और लाजमैरी मान जाते हैं। विदाई के समय सबकी आंखें नम हो जाती हैं।

वह गरीब औरत, उस यात्री के इन श□दों का कोई अर्थ नहीं समझ पायी। समझने की उसने कोई आवश्यकता भी महसूस नहीं की। औरत ने सोचा कि वह गरीब बूढ़ा आदमी शायद वैसे ही कुछ बड़बड़ाता हुआ-सा चला गया है।

उस यात्री के जाने के बाद, औरत ने सोचा कि बच्चों के लिए कम से कम एक कपड़ा तो होना ही चाहिए। उसे अचानक याद आया कि उसके पास थोड़ा-सा कपड़ा पहले का पड़ा हुआ है। शायद उसी से बच्चों का काम चल जाये। उसने एक गठरी में रखे हुए उस कपड़े को निकाला। मगर कपड़ा नापने के लिए उसके पास फीता नहीं था। सो, वह अपने पड़ोस की अमीर औरत के यहां गयी और उससे थोड़ी देर के लिए फीता मांग लाई।

फीता लाकर उस गरीब औरत ने अपने कपड़े को नापना शुरू किया तो यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि जितना कपड़ा वह नापती थी, उतना ही वह और बढ़ जाता था। कपड़ा नापते हुए उसे सारा दिन बीत गया। जब रात्रि हुई, तभी उसका कपड़ा पूरा हो गया। अब वह औरत, बूढ़े यात्री के श□दों का अर्थ भलीभांति समझ गयी। वह मन ही मन उस यात्री को दुआएं देने लगी।

अब उसके पास इतना अधिक कपड़ा हो गया था कि वह उससे अपने लिए और अपने बच्चों के लिए न केवल खूब सारे कपड़े बना सकती थी, बल्कि उसे बेचकर अपनी अन्य आवश्यकताएं भी पूरी कर सकती थी।

रात्रि को जब वह फीता लौटाने के लिए अमीर पड़ोसन के यहां गई तो वह बड़ी नाराज हो रही थी। कपड़े नापने में लगे रहने के कारण वह गरीब औरत न तो फीता ही समय पर लौटा पायी और न अमीर पड़ोसन के यहां झाड़ू-बुहारी का ही काम कर पायी थी। उसकी नाराजगी का यही कारण था। क्षमा-याचना करते हुए उस गरीब औरत ने जब अपना सारा किस्सा साफ-साफ कह

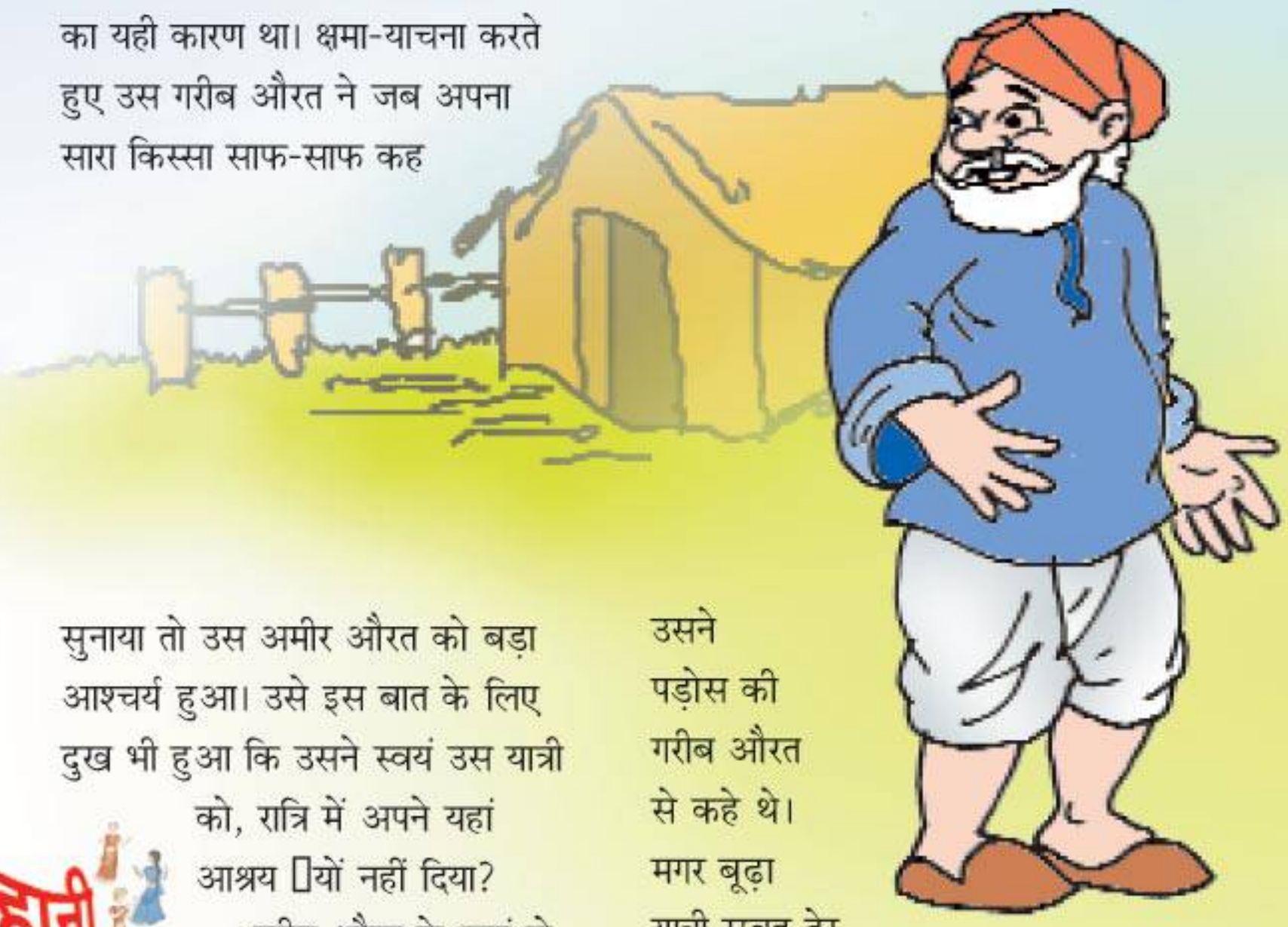

सुनाया तो उस अमीर औरत को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसे इस बात के लिए दुख भी हुआ कि उसने स्वयं उस यात्री को, रात्रि में अपने यहां आश्रय □यों नहीं दिया?

कहानी

गरीब औरत के वहां से जाते ही अमीर औरत ने अपने नौकर को तत्काल उस बूढ़े यात्री को ढूंढने के लिए भेजा। उसे यह भी स्पष्ट कह दिया कि अगर वह बूढ़े यात्री को ढूंढकर नहीं ला सका तो उसे नौकरी से निकाल दिया जाएगा।

बेचारा आतंकित नौकर रात्रि में ही बूढ़े यात्री की तलाश में निकल पड़ा। रात्रिभर वह चलता रहा। दूसरे दिन सुबह जाकर उसे वह यात्री एक बस्ती में मिल गया। यात्री ने पहले तो लौटने के लिए साफ मना कर दिया। मगर जब उस नौकर ने अपनी मजबूरी बतलायी तो उस पर दया करके वह लौट आया।

इस बार अमीर औरत ने बूढ़े यात्री का बड़े जोर से स्वागत किया। उसने अपनी पिछली भूल के लिए क्षमा मांगी। बूढ़े यात्री को स्वादिष्ट भोजन कराया, और रात्रि को आराम के लिए उसे मकान का सबसे अच्छा और सजा-धजा कमरा दिया गया। दूसरे दिन अमीर औरत प्रातः जल्दी ही उठ गई।

उसने बहुत अच्छा रेशमी कपड़ा और नापने के लिए फीता तैयार कर लिया। उसे उ□मीद थी कि बूढ़ा यात्री अब जल्दी ही लौट जायेगा और जाते हुए उसे वैसे ही श□द कहेगा, जैसे उसने पड़ोस की गरीब औरत से कहे थे। मगर बूढ़ा यात्री सुबह देर तक सोता रहा। फिर उठकर दैनिक कार्यों से निवृ□ा हुआ, और भोजन करके वहां फिर सो गया। संध्या को भी यही कार्यक्रम रहा। दूसरे दिन और तीसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। अमीर औरत तंग आ गयी। उसके उत्साह में कमी आने लगी। अंत में चौथे दिन प्रातःकाल बूढ़ा यात्री, जब वहां से चलने लगा तो अमीर औरत ने बड़ी राहत महसूस की। मगर यह देखकर उसे बड़ा आश्यर्च हुआ कि वह बूढ़ा यात्री उससे बिना कुछ कहे हुए ही घर छोड़कर जा रहा है। वह दौड़कर आगे बढ़ी और उसे रोककर पूछा, '□या आप मुझे कुछ भी नहीं कहेंगे।'

बूढ़े यात्री ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा और कहा, 'जो भी काम सुबह शुरू करोगी, वह रात्रि तक करती ही रहोगी।' यह सुनकर वह अमीर औरत तेजी से भागकर मकान में उस स्थान पर आयी, जहां उसने रेशमी कपड़ा और फीता रखे हुए थे। मगर इसी बीच उसे छींक आ गयी। बस, इसके बाद तो रात्रि तक उसे लगातार छींक ही आती रही और उसका एक ही काम रहा,

–योगेश चन्द्र शर्मा

ट्रेन में वार्निंग लिखी थी बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्री होशियार।
चिंटू- वाह! और जो टिकट लेकर यात्रा कर रहे हैं वो सब बेवकूफ हैं...

राम (श्याम से)- हमारे देश की औसत मृत्यु दर क्या है?
श्याम- शत-प्रतिशत
राम- कैसे?
श्याम- जो पैदा होता है वो मर ही जाता है।

पुलिस (झंडु से)- तुम्हें कल सुबह 5 बजे फांसी दी जाएगी।
झंडु- हा... हा... हा...
पुलिस- क्यों हंस रहे हो?
झंडु- मैं तो उठता ही सुबह 9 बजे हूं।

बिल्लू रेडियो ठीक करवाने गया। मैकेनिक ने देख कर कहा- ये ठीक है, मौसम खराब है, इसलिए नहीं चल रहा।
बिल्लू- ले 100 रुपए, मौसम नया डाल दे।

पागलखाने का डॉक्टर अपनी पत्नी को कहता है- पागलों के साथ रह-रह कर मैं आधा पागल तो हो ही गया हूं।
पत्नी- कभी कोई काम पूरा भी कर लिया करो।

डॉक्टर (शर्मा जी से)- आपका और आपकी पत्नी का ब्लडग्रुप एक ही है?
शर्मा जी- होगा, जरूर होगा 25 साल से मेरा खून जो पी रही है...

डॉक्टर ने एक पागल से पूछा- तुम छत से क्यों लटक रहे हो?
पागल- मैं एक बल्ब हूं।
डॉक्टर- तुम जल क्यों नहीं रहे?
पागल- बेवकूफ लाइट गयी हुई है।

एक आदमी लंगड़ाता हुआ आ रहा था। उसे देखकर दो डॉक्टर आपस में झगड़ने लगते हैं।
पहला डॉक्टर- लगता है उसके पैर की हड्डी टूट गयी है।
दूसरा डॉक्टर- लगता है उसका अंगूठा टूट गया है।
दोनों में काफी बहस हो रही होती है तो तीसरा डॉक्टर बोलता है, चलो उससे ही पूछ लेते हैं।
डॉक्टर- क्या तुम्हारे पैर की हड्डी टूट गयी है?
व्यक्ति- नहीं मेरी चप्पल टूटी हुई है।

अध्यापक (मोनू से)- तुम लेट क्यों आए हो?
मोनू- मम्मी-पापा लड़ रहे थे...
अध्यापक- वो लड़ रहे थे तो तुम क्यों लेट आये?
मोनू- मेरा एक जूता मम्मी के पास था और दूसरा पापा के पास...!

मुकेश (डॉक्टर से)- साहब, मुझे एक समस्या है?
डॉक्टर- क्या?
मुकेश- बात करते वक्त आदमी दिखाई नहीं देता।
डॉक्टर- ऐसा कब होता है?
मुकेश- फोन करते वक्त!

बिंटू सड़क पर बाइक पर बहुत तेजी से जा रहा था।
पुलिस- ओए तुझे 'नो एंट्री' का बोर्ड नहीं दिखा।
बिंटू- मैंने सोचा कि यह फिल्म का पोस्टर है।

चिंटू (मिनी से)- मंदिर के बाहर चप्पल रखने में और मिस कॉल देने में क्या चीज कॉमन है?
मिनी- दोनों में डर लगा रहता है कि कोई उठा न ले।

लता (सरिता से)- अचानक ही तुम बचत करने लगी हो।
सरिता- हां यही मेरे पति की आखिरी ख्वाहिश थी। डूबते समय वे यही कह रहे थे बचाओ-बचाओ।

☺

ड्राइवर (देबू से)- पूरा पेट्रोल खत्म हो गया है, अब आगे नहीं बढ़ सकते।
देबू- ठीक है, गाड़ी पीछे लो और घर वापस चलो।

☺

डॉक्टर (अफसोस जताते हुए)- अगर एक घंटे पहले आप इन्हें यहां ले आते तो इनकी जान बच जाती।
रमेश- अभी आधे घंटे पहले तो इनका एक्सीडेंट हुआ था।

☺

मानू का जब अंतिम समय आया और आखिरी वक्त में उसके बेटों ने पूछा- 'आप बताये कि आपको हम जलाएं या दफनाएं?'
मानू- मुझसे मत पूछो, सरप्राइज देना...

☺

मरीज (डॉक्टर से)- मैं एक महीने से रोज 50 रुपये की दवा ले रहा हूं पर कोई फायदा नहीं हुआ।
डॉक्टर- कोई बात नहीं कल से मैं तुम्हें 40 रुपये की दवा दूंगा, 10 रुपये का फायदा होगा।

बीमार पति से पत्नी बोली-इस बार इलाज जानवरों के डॉक्टर से करवाना।
पति- क्यों?
पत्नी- रोज सुबह मुर्गे की तरह उठ जाते हो, घोड़े की तरह भाग कर ऑफिस जाते हो, गधे की तरह दिनभर काम करते हो, लोमड़ी की तरह इधर-उधर से सूचना लेकर रिपोर्ट बनाते हो, बंदर की तरह बॉस के इशारे पर नाचते हो, घर आकर परिवार पर कुत्ते की तरह चिल्लाते हो, और फिर भैंस की तरह सो जाते हो। ....तो क्या इंसानों का डॉक्टर खाक इलाज कर पाएगा?

मिंटू- अरे पिंटू, रात को मोबाइल चार्ज मत करो, ये ब्लास्ट भी हो सकता है।
पिंटू- तू टेंशन मत ले, मैंने बैटरी निकाल दी है।

विचारों की शक्ति

विख्यात ब्रिटिश लेखक मार्क रुदरफोर्ड के बचपन की घटना है। एक दिन वह समुद्र के किनारे बैठे थे। दूर सागर में एक जहाज लंगर डाले खड़ा था। वह जहाज तक तैरकर जाने के लिए मचल उठे। मार्क तैरना तो जानते ही थे। समुद्र में कूद पड़े और तैरकर जहाज तक पहुंच गए। मार्क ने जहाज के कई चक्कर लगाए। मन खुशी से झूम उठा। विजय की खुशी और सफलता से आत्मविश्वास बढ़ा। लेकिन जैसे ही उन्होंने वापस लौटने को किनारे की तरफ देखा तो निराशा हावी होने लगी, किनारा बहुत दूर लगा।

बहुत अधिक दूर। सफलता के बाद भी निराशा बढ़ रही थी। अपने ऊपर अविश्वास हो रहा था। जैसे-जैसे मार्क के मन में ऐसे विचार आते रहे, उनका शरीर वैसा ही शिथिल होने लगा। फुर्तीले नौजवान होने के बावजूद बिना डूबे ही डूबता-सा महसूस करने लगे। लेकिन जैसे ही उन्होंने संयत होकर अपने विचारों को निराशा से आशा की तरफ मोड़ा। क्षण भर में ही चमत्कार-सा होने लगा। वह अपने अंदर परिवर्तन अनुभव करने लगे। शरीर में एक नई शक्ति का संचार हुआ। वह तैरते हुए सोच रहे थे कि किनारे तक नहीं पहुंचने का मतलब है मर जाना। और किनारे तक पहुंचने का प्रयास है, डूब कर मरने से पहले का संघर्ष। इस सोच से जैसे उन्हें संजीवनी मिल गई।

उन्होंने सोचा कि जब डूबना ही है तो सफलता के लिए संघर्ष क्यों न करें। भय का स्थान विश्वास ने ले लिया। इसी संकल्प के साथ वह तैरते हुए किनारे तक पहुंचने में सफल हुए। इस घटना ने उन्हें आगे भी काफी प्रेरित किया।

सीख : जीवन में सफलता पाने के लिए संघर्ष अत्यावश्यक है।

सीख सुहानी

संकल्प का प्रभाव

लंदन की एक बस्ती में एक अनाथ लड़का रहता था। वह अखबार बेचकर अपना गुजारा करता था। जब यह काम उसके हाथ से निकल गया तो उसे एक जिल्दसाज की दुकान पर जिल्द चढ़ाने का काम मिल गया। उसे पढ़ने का बहुत शौक था। वह पुस्तकों पर जिल्द चढ़ाते समय उनकी महत्त्वपूर्ण जानकारियों को ध्यान से पढ़ता था। एक दिन उसकी नजर विद्युत संबंधी एक लेख पर पड़ी। वह लेख उसे बहुत मनोरंजक लगा। वह उससे बहुत प्रभावित हुआ।

उसने दुकान के मालिक से पुस्तक मांग ली और रात भर में उस लेख के साथ ही पूरी पुस्तक पढ़ डाली। इससे विद्युत संबंधी प्रयोग करने में उसकी जिज्ञासा बढ़ती गई। धीरे-धीरे वह प्रयोग-परीक्षण के लिए विद्युत संबंधी छोटी-मोटी चीजें भी जुटाने लगा। लोग उसकी प्रतिभा के कायल होते जा रहे थे। एक ग्राहक तो उससे बहुत ही प्रभावित हुआ। उसने तय किया कि वह उसे आगे बढ़ने में हरसंभव मदद करेगा। वह एक दिन उसे अपने साथ भौतिकशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान डेवी का भाषण सुनवाने ले गया। लड़के ने डेवी की बातें ध्यान से सुनीं और उन्हें नोट भी किया। इसके बाद उसने उनके भाषण की समीक्षा करते हुए अपने परामर्श लिखकर डेवी के पास भेज दिए। डेवी को लड़के के सुझाव बहुत पसंद आए। उन्होंने उसे यंत्रों को व्यवस्थित करने के लिए अपने पास रख लिया। लड़का उनके सहयोगी और नौकर, दोनों की भूमिका निभाता रहा।

वह दिनभर अपने कामों में लगा रहता। रात को अध्ययन करता। वह भौतिकी के क्षेत्र में कुछ असाधारण करने का संकल्प ले चुका था। वह दिन-रात अध्ययन-शोध में लगा रहता था। आगे चलकर वह माइकल फैराडे के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सीख : हमें एक लक्ष्य निर्धारित कर, उसे पाने के लिए अपनी संपूर्ण शक्ति लगा देनी चाहिए।

क्रिसमस का कैसा उपहार

कहानी

एक गांव में पारस अपनी बेटी लता के साथ रहता था। लता जब छोटी थी, तभी उसकी मां चल बसी थी। पारस मुखौटे और कठपुतलियां बनाने का काम करता था। हर कोई उसकी कारीगरी देख कर दंग रह जाता था। उसके बनाए मुखौटों की बाजार में बहुत मांग थी।

24 दिसम्बर को लता का जन्मदिन था। इस बार पारस उसे बढ़िया-सा उपहार देना चाहता था। पर क्या दे, समझ नहीं पा रहा था। अचानक उसके मन में एक योजना आई। लता के जन्मदिन के दूसरे दिन 25 दिसम्बर को क्रिसमस डे था। उसने अपनी बेटी को सेंटा क्लॉज का खिलौना और क्रिसमस-ट्री सजा कर देने का निश्चय किया। पारस चुपचाप जंगल में गया और दो हरे-भरे पेड़ काट लाया। उसने दिन-रात मेहनत करके एक पेड़ को सुंदर सेंटा क्लॉज के रूप वाला खिलौना बना दिया और दूसरे पेड़ को क्रिसमस ट्री जैसा सजा दिया। जन्मदिन से पहले रात के समय दोनों को घर के बाहर रख दिया।

अगले दिन उसने बेटी को बधाई दी। फिर उसे घर के बाहर ले आया। इतने सुंदर-सुंदर उपहारों को देख कर लता फूली न समाई।

पारस ने खिलौने से सुंदर संगीत सुनाने के लिए उस पर नाक की तरह बने बटन को दबाया। पर खिलौने से संगीत की जगह रोने की आवाज आने लगी। कोई सिसक-सिसक कर कह रहा था, 'पारस, हम दोनों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था, जो तुमने हमको काट कर हमें अपने साथियों से जुदा कर दिया। अपनी बेटी को उपहार देने के लिए तुमने हम दो हरे-भरे पेड़ों को ही काट दिया। चाहते तो तुम यह सेंटा क्लॉज वाला खिलौना किसी सूखे पेड़ से और क्रिसमस ट्री पेड़ की एक डाली तोड़ कर भी बना सकते थे।'

यह सुन कर पारस और लता बहुत दुखी हुए। लता बोली, 'पिताजी, मुझे ऐसा उपहार नहीं चाहिए, जो किसी पेड़ की हत्या करके बनाया गया हो। इनमें भी हमारी तरह जान होती है।'

पारस ने मन ही मन प्रण किया कि अब वह कभी किसी पेड़ को नहीं काटेगा। पारस के गलती मान लेने पर लता खुशी से उसके गले लग गई। पारस को मिली सीख उसके लिये जन्मदिन और क्रिसमस का बड़ा उपहार थी।

–नरेन्द्र देवांगन

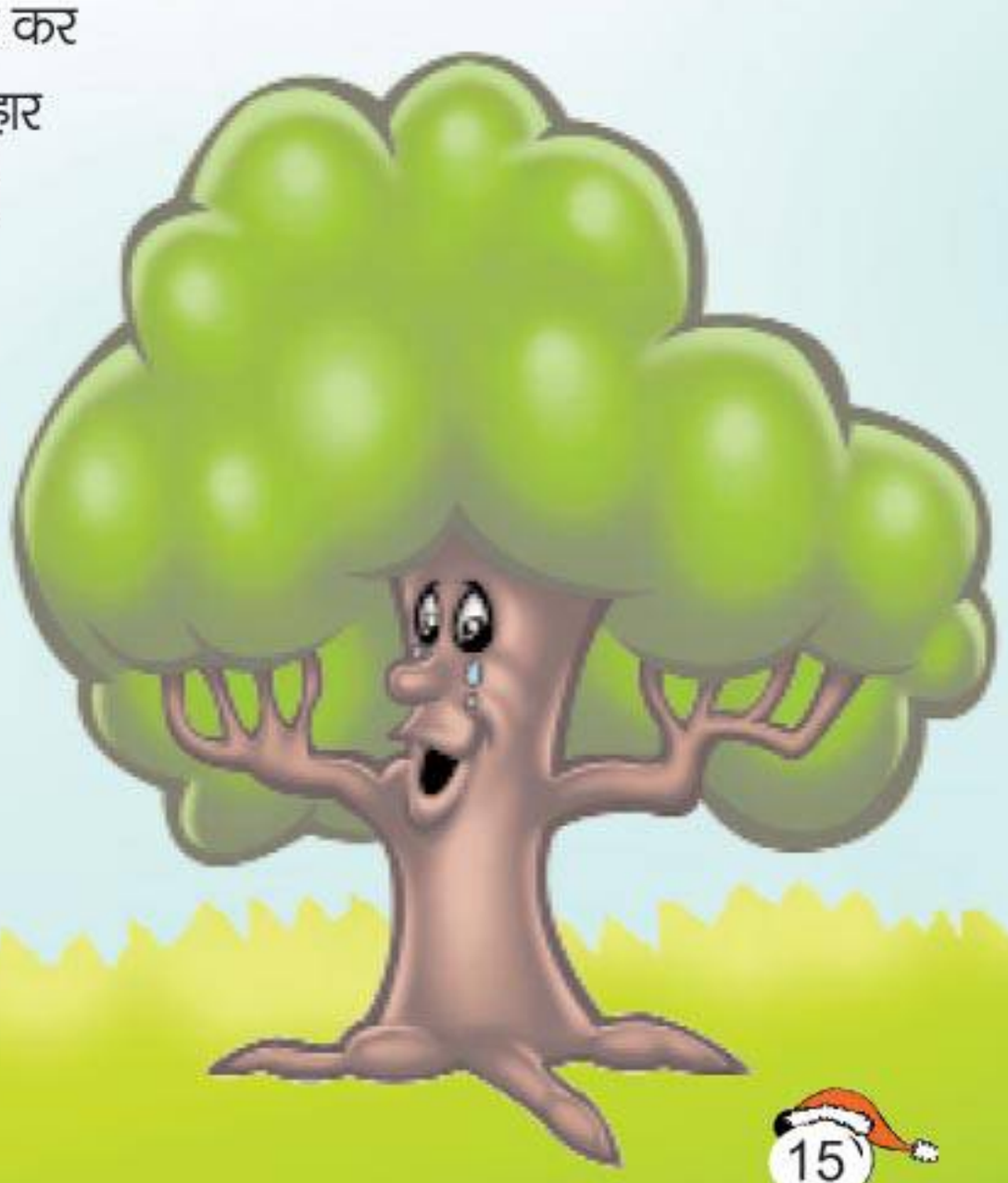

येरुशलम

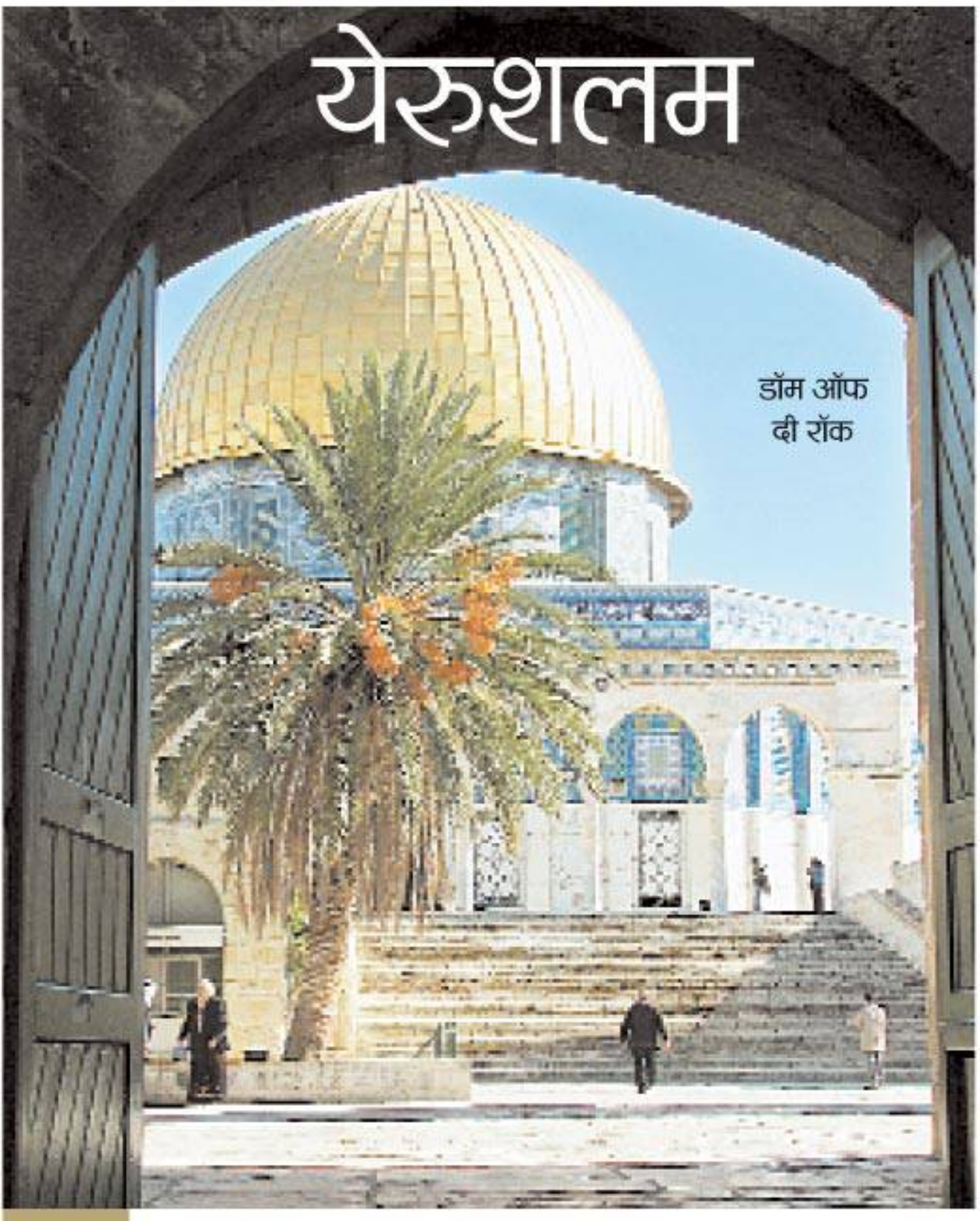
डॉम ऑफ दी रॉक

सैर सपाटा

भूमध्य सागर और मृत सागर के बीच इजराइल की सीमा पर बसा येरुशलम एक शानदार शहर है। इस शहर की सीमा के पास दुनिया का सबसे ज्यादा नमक वाला डेड-सी यानी मृत सागर है। कहते हैं, यहां के पानी में इतना नमक है कि इसमें किसी भी प्रकार का जीवन नहीं पनप सकता और इसके पानी में मौजूद नमक के कारण इसमें कोई डूबता भी नहीं है। इजराइल का एक हिस्सा है गाजा पट्टी और रामल्लाह। जहां फिलिस्तीनी मुस्लिम लोग रहते हैं और उन्होंने इजराइल से अलग होने के लिए विद्रोह छेड़ रखा है। ये लोग येरुशलम को इजराइल के कब्जे से मुक्त कराना चाहते हैं। वैसे इस शहर के बारे में जितना लिखा जाए कम है। काबा, काशी, मथुरा, अयोध्या, ग्रीस, बाली, श्रीनगर, जाफना, रोम, कंधार आदि प्राचीन शहरों की तरह ही इस शहर का इतिहास भी बहुत महत्त्व रखता है।

माउंट ऑफ ओलि□स पर खड़े होकर आप सामने येरुशलम के प्राचीन शहर को देखते हैं, तो उसके मनोरम और भव्य दृश्य का नजारा देख आप मंत्रमुग्ध होकर सोचना बंद कर देते हैं। ओलि□स पहाड़ी से सुंदर गुंबद और गुंबदों के पीछे दीवार नजर आती है। एक वर्ग किलोमीटर की पहाड़ी दीवारों से घिरा हजारों सालों का इतिहास लिए यह शहर दुनिया की आधी से ज्यादा आबादी की आस्था का केंद्र है।

हिब्रू में लिखी बाइबिल में इस शहर का नाम 700 बार आता है। यहूदी और ईसाई मानते हैं कि यही धरती का केंद्र है। राजा दाऊद और सुलेमान के बाद इस स्थान पर बेबीलोनियों तथा ईरानियों का क□जा रहा। फिर इस्लाम के उदय के बाद बहुत काल तक मुसलमानों ने यहां पर राज्य किया। इस दौरान यहूदियों को इस क्षेत्र से कई बार खदेड़ दिया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इजराइल फिर से यहूदी राष्ट्र बन गया तो येरुशलम को उसकी राजधानी बनाया गया, और दुनियाभर के यहूदियों को पुनः यहां बसाया गया। यहूदी दुनिया में कहीं भी हों, येरुशलम की तरफ मुंह करके ही उपासना करते हैं।

येरुशलम एंट्रेस ब्रिज

टॉम्ब ऑफ डेविड

जियोन स्क्वायर पर लाइट ट्रेन

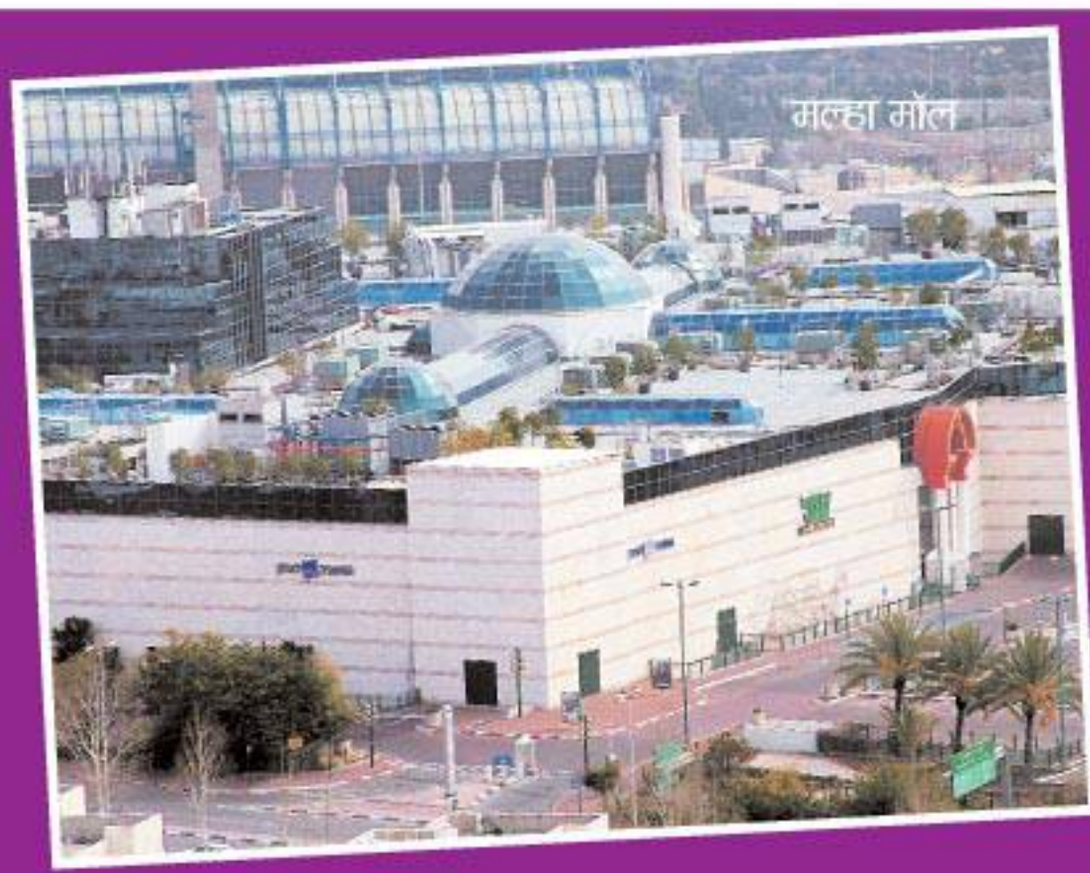
मल्हा मॉल

ओल्ड सिटी : वेस्टर्न वॉल

धार्मिक स्थलों के अलावा यहां प्राचीन एवं धार्मिक ग्रंथों का 'द इजराइल' □यूजियम है। इजराइल का होलोकॉस्ट □यूजियम, जिसे 'याद वशेम' कहा जाता है, इसका खासा मह□व है। यहां पर येरुशलम के इतिहास से संबंधित दस्तावेज और शहीदों के स्मारक व स्मृति चिह्नों आदि के बारे में जानकारी है। दोनों ही □यूजियम का इतिहास बहुत पुराना है।

मुस्लिम इलाके में स्थित 35 एकड़ क्षेत्रफल में फैले नोबेल अभयारण्य में ही अल अ□सा मस्जिद, डोम ऑफ द रॉक, फव्वारे, बगीचे, गुंबद और प्राचीन इमारतें बनी हुई हैं। इसके अलावा छोटे से गॉर्डन ऑफ गेथेमिन की खूबसूरती भी देखने लायक है। इसके अलावा याद वशेम का इलाका भी यरुशलम के जंगल के नाम से प्रसिद्ध है।

किलेनुमा चारदीवारी से घिरे पवित्र परिसर में यहूदी प्रार्थना के लिए इकट्ठे होते हैं। इस परिसर की दीवार बहुत ही प्राचीन और भव्य है। यह पवित्र परिसर ओल्ड सिटी का हिस्सा है। पहाड़ी पर से इस परिसर की भव्यता देखते ही बनती है। इस परिसर के ऊपरी हिस्से में तीनों धर्मों के पवित्र स्थल हैं।

येरुशलम में लगभग 1204 सिनेगॉग, 158 गिरजाघर, 73 मस्जिदें, बहुत-सी प्राचीन कब्रें, 2 □यूजियम और एक अभयारण्य है। यहां एक प्राचीन पर्वत है जिसका नाम 'जैतून' है। इस पर्वत से येरुशलम का खूबसूरत नजारा देखा जा सकता है। इस पर्वत की ढलानों पर बहुत-सी प्राचीन कब्रें हैं।

यरुशलम चारों तरफ से पर्वतों और घाटियों वाला इलाका नजर आता है। यदि आपको धर्म और आस्था के

Drawing Illusion

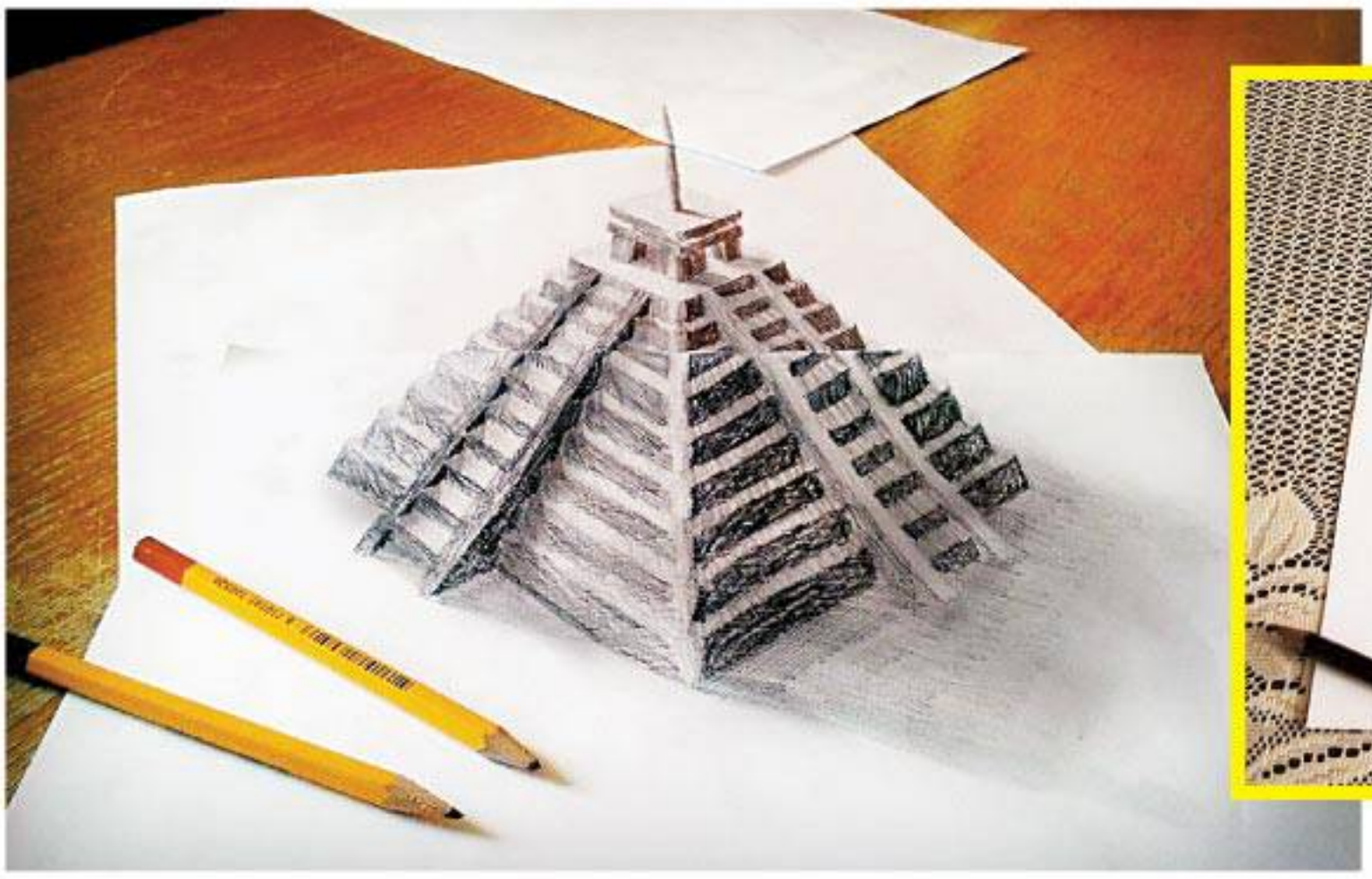

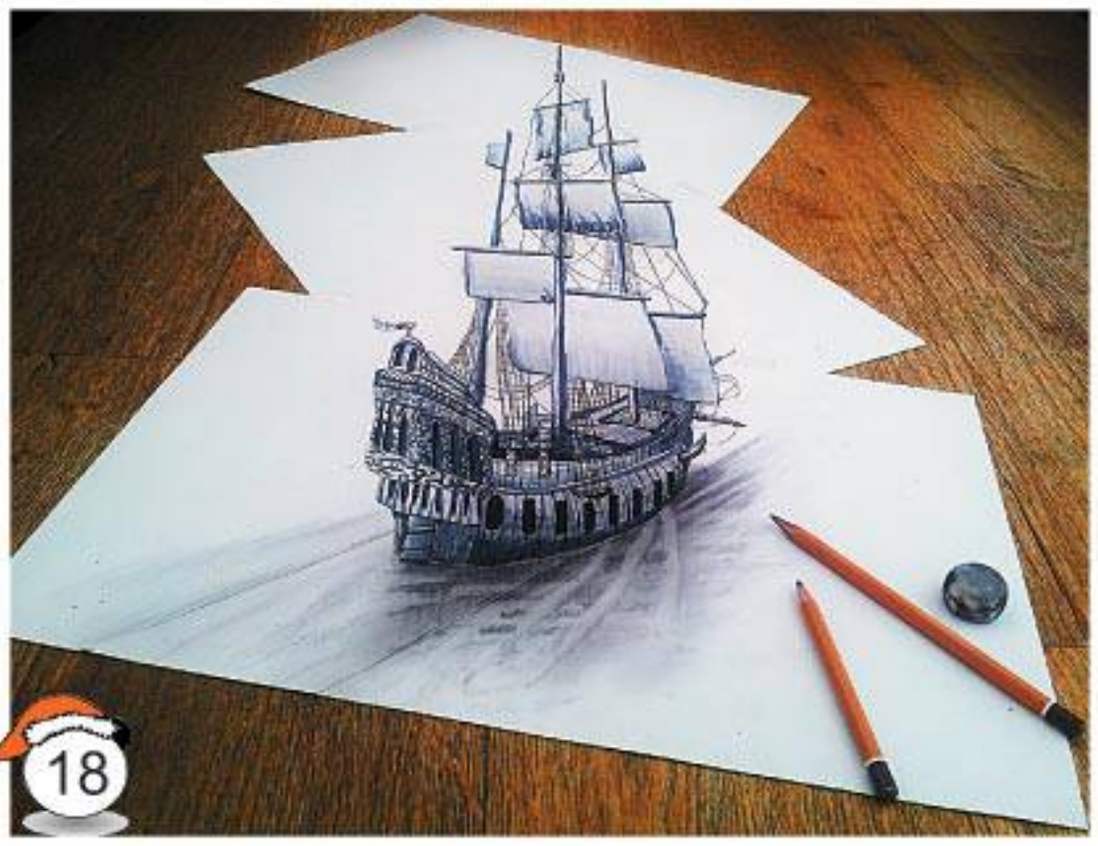

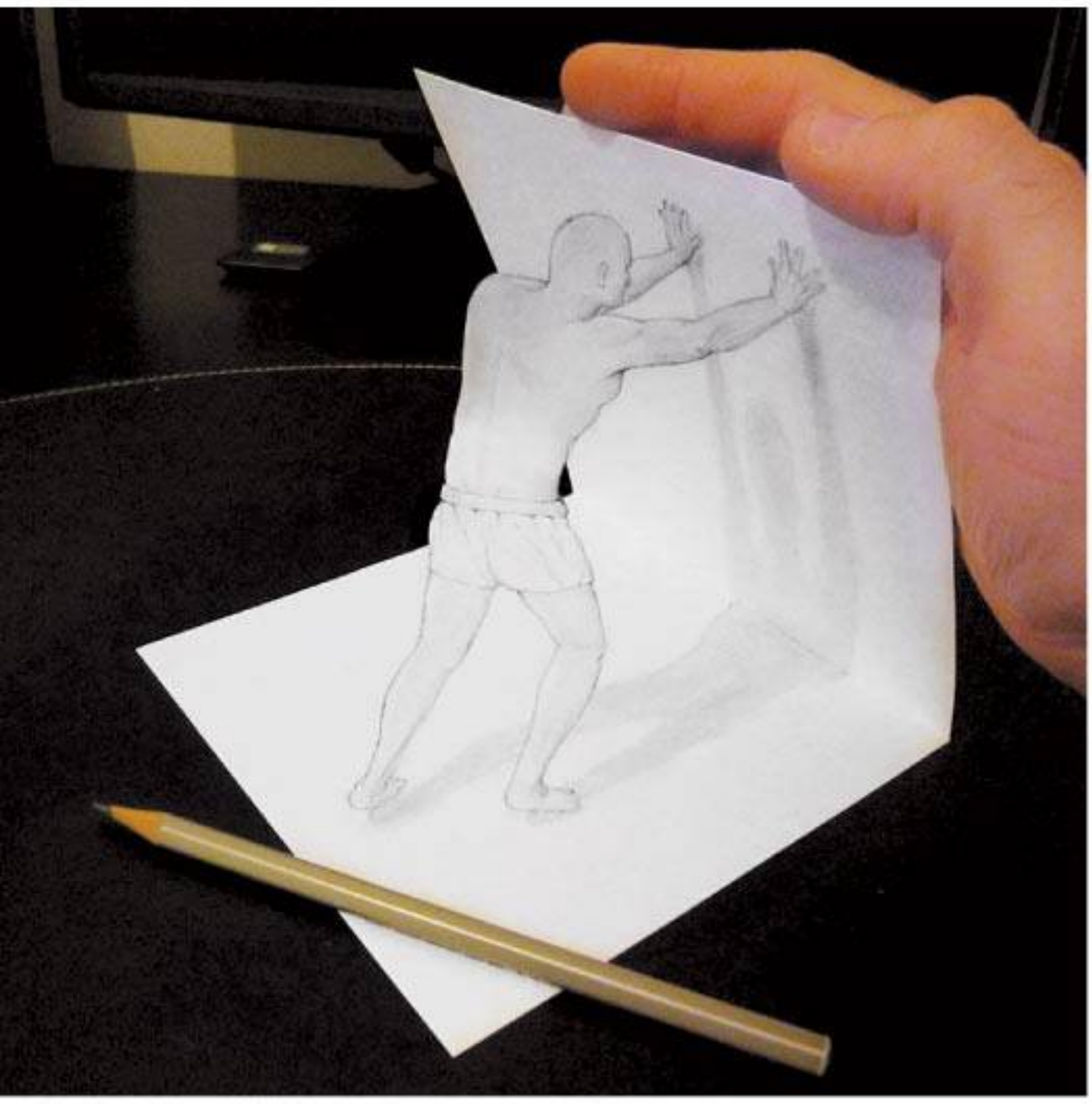

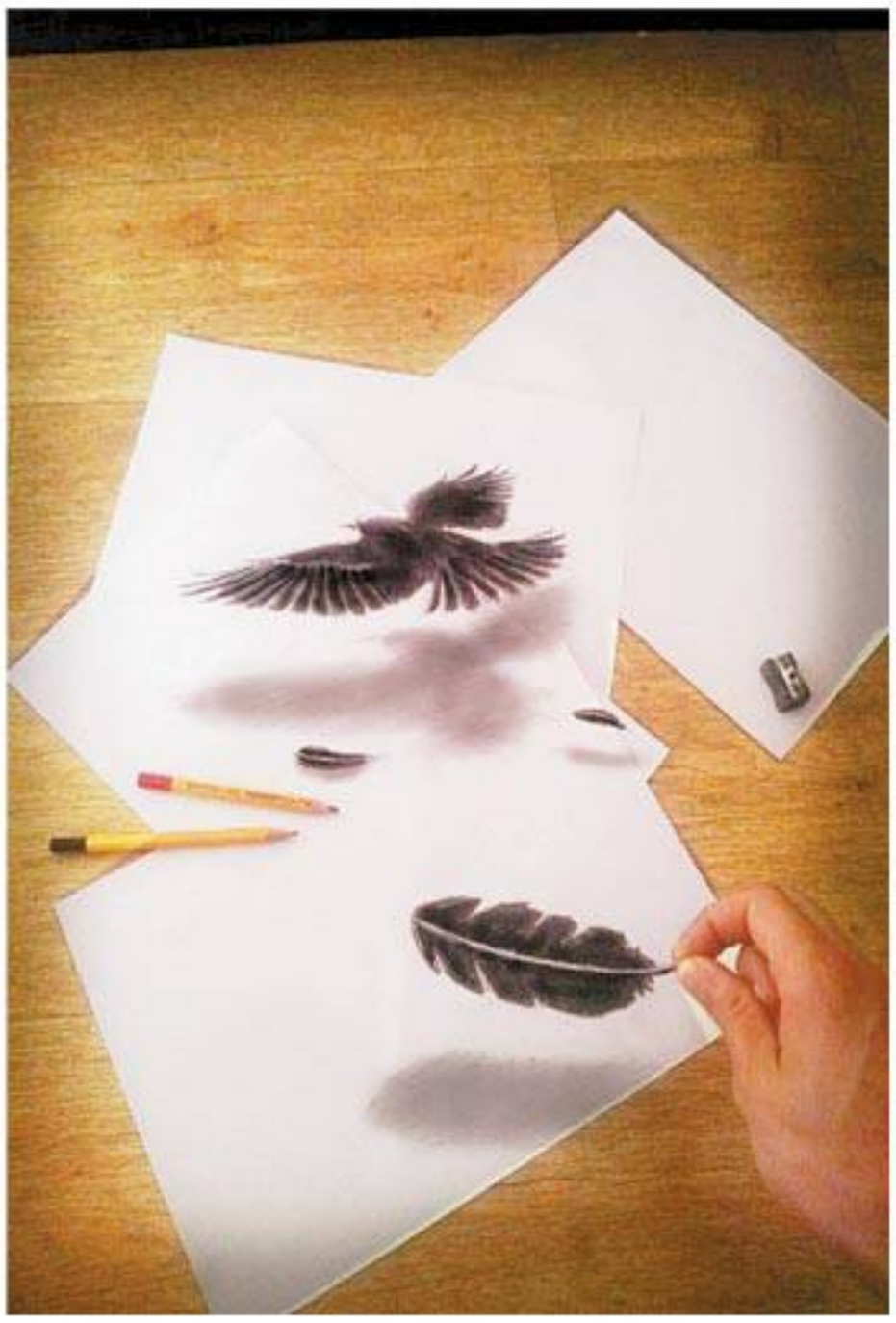

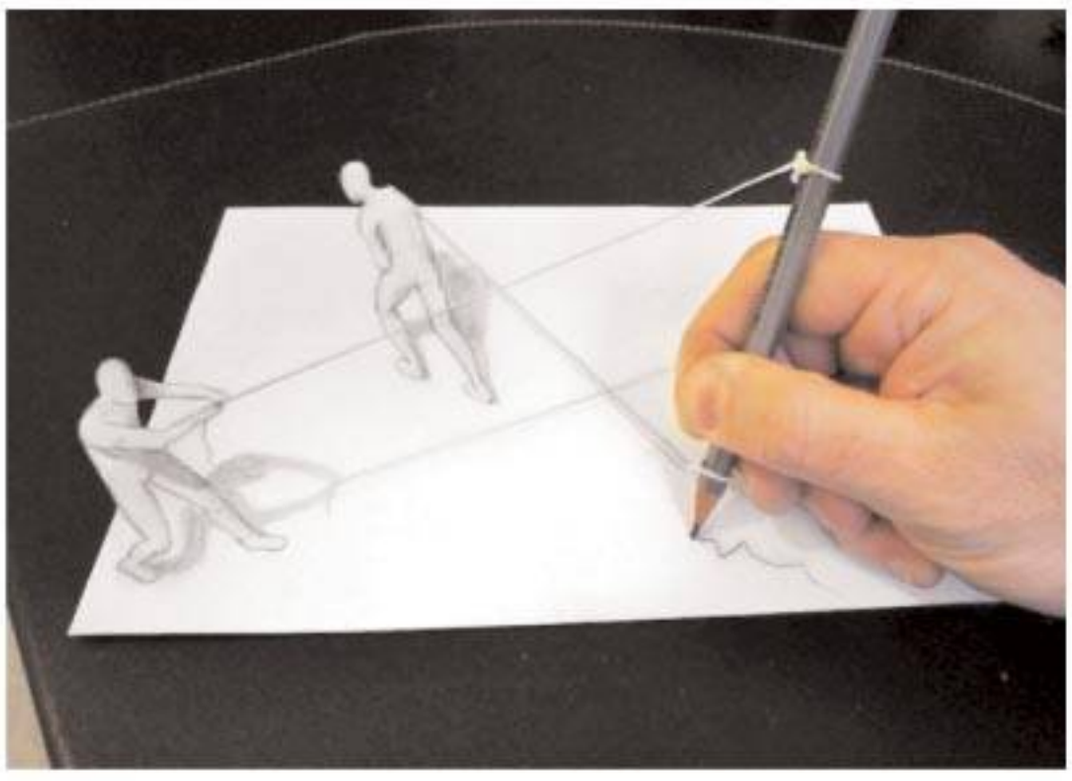

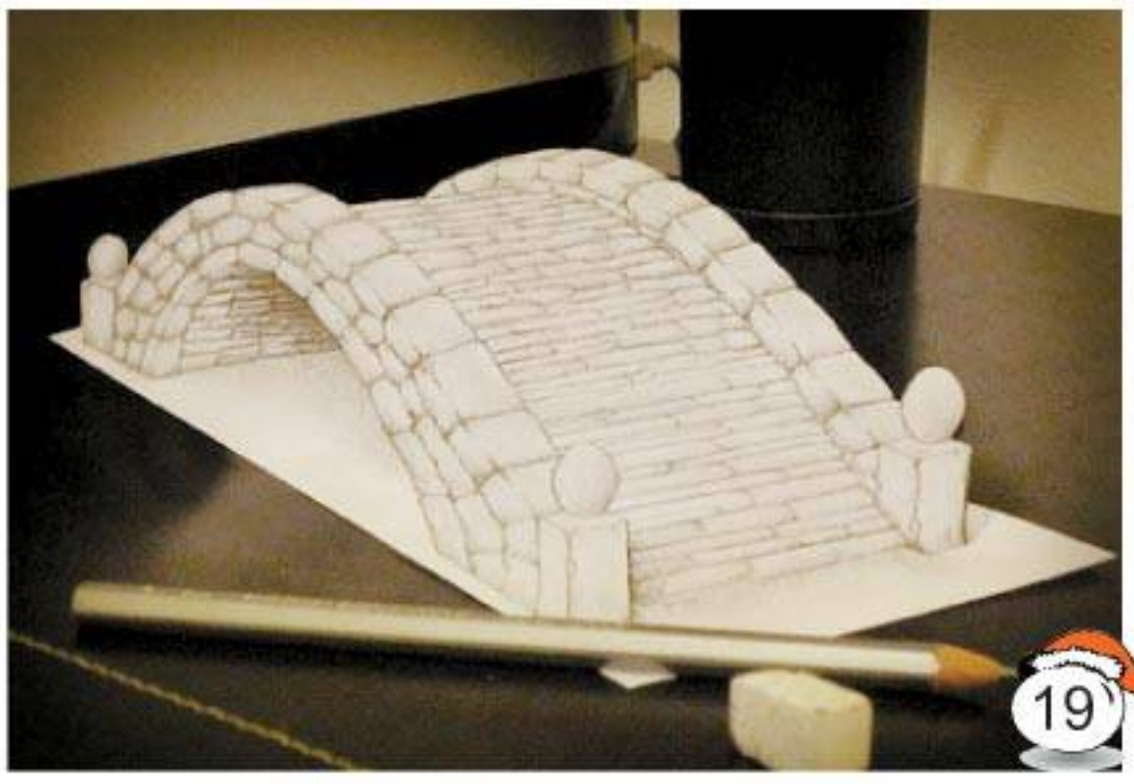

Christmas Quotes

May Lovely, Happy Times Decorate Your Holiday Season, May Warm, Special Memories Brighten Your New Year, May The Wonder of Christmas Be With You Forever.

- He who has not Christmas in his heart will never find it under a tree.
- The best of all gifts around any Christmas tree: the presence of a happy family all wrapped up in each other.
- Never worry about the size of your Christmas tree. In the eyes of children, they are all 30 feet tall.
- It is Christmas in the heart that puts Christr in the air.
- Remember, This December,That love weighs more than gold!
- This is the message of Christmas: We are nev alone.
- Christmas is the seas when you buy this year gifts with next year s money.
- The best Christmas tre come very close to exceeding nature.
- *Christmas gift suggestions:*

To your enemy, forgiveness. To an opponent, tolerance. To a friend, your heart. To a customer, service. To all, charity. To every child, a good example. To yourself, respect.

Ho Ho Ho!

Christmas Jokes!

Q. Why does Santa have 3 gardens?
A. So he can "hoe hoe hoe!"

Q. What do you get when Santa goes down a chimney with a lit fire?
A. "Crisp" Cringle!

Q. What do snowmen eat for lunch?
A. Ice bergers!

Q. Which of Santa's reindeer has bad manners?
A. RuDe-olph!

Q. How does Rudolph know when Christmas is coming?
A. He looks at his calen-DEER!

Q. What is the first thing elves learn in school?
A. The "elf"-a-bet!

Holiday Cheer

बच्चो, तुहें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तुहारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तुहें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वाय दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और अयास करें।

1. सीता खेल रही है।
Sita is playing.
सीता इज प्लेइंग।

2. आपको अधिक चोट तो नहीं आयी?
Hope, you are not badly hurt.
होप, यू आर नॉट बैडली हर्ट।

3. मैं पतंग उड़ा रहा हूं।
I am flying a kite.
आइ एम लाइंग ए काइट।

4. आज हम शतरंज खेलेंगे।
We'll play chess today.
वी'इल प्ले चैस टुडे?

5. मेरे पास पचास पैसे कम हैं।
I am short by fifty paise.
आइ एम शॉर्ट बाय फिटी पैसे।

6. मैं सवारी को पैदल चलने से अच्छा समझता हूं।
I prefer riding to walking.
आइ प्रिफर राइडिंग टु वॉकिंग।

7. यह हलवाई बासी वस्तुएं बेचता है।
This confectioner sells stale stuff/things.
दिस कनफेशनर सेल्स स्टेल स्टफ/थिंग्स।

8. तुमने मुझे एक रुपया कम दिया।
You have given me one rupee less.
यू हैव गिवन मी वन रुपी लेस।

9. कृपया आप बुरा न मानें।
Please don't mind this/ Please don't feel bad about it.
प्लीज डोंट माइंड दिस/ प्लीज डोंट फील बैड अबाउट इट।

10. यह पुस्तक धड़ाधड़ बिक रही है।
This book is selling like hot cakes./ This book is a selling sensation.
दिस बुक इज सेलिंग लाइक हॉट केस/ दिस बुक इज अ सेलिंग सैन्सेशन।

Antonyms

Begin- शुरुआत	End- अंत
Below- नीचे	Above- ऊपर
Bent- झुकना	Straight- सीधा
Best- सबसे अच्छा	Worst- सबसे बुरा
Big- बड़ा	Small- छोटा

Word-Power

- Assert- दृढ़तापूर्वक कहना Assess-आंकना
- Asset- स
- Assign- सौंपना
- Assimilate- सिमलित करना Avail-उपयोग, प्राप्ति

English-Hindi Phrases

For action- कार्रवाई के लिए।
File an appeal- अपील फाइल करना।
Favourable attitude- अनुकूल रुख।
Consequent upon- के परिणामस्वरूप।
Follow up action- अनुवर्ती कार्रवाई।
Fix a date for meeting- मीटिंग के लिए कोई तारीख

Synonyms

Bad- Evil, Immoral, Wicked, Corrupt, Sinful, Foul, Substandard, Poor, Inferior, Second-rate, Second-class, Unsatisfactory, Unacceptable, Deficient, Imperfect, Defective, Faulty, Shoddy.

IDIOM

Crocodile Tears- A show of sorrow that is not really felt.
He said that he was very sorry. But his tears were just crocodile tears.

वेटिकनसिटी दुनिया का सबसे छोटा देश है। इसका क्षेत्रफल 0.2 वर्ग मील है और इसकी आबादी लगभग 770 है। इनमें से कोई भी इसका परमानेंट नागरिक नहीं है।

अगर किसी पेड़ पर लगे अनानास को उल्टा कर दिया जाए, तो यह जल्दी पक जाता है।

रेगिस्तान धरती के विशाल क्षेत्र में विस्तारित है। महासागरों के बाद रेगिस्तान धरती के सबसे बड़े पर्यावरण तंत्र हैं। पृथ्वी की लगभग एक-तिहाई भूमि रेगिस्तानों से घिरी है।

संपूर्ण पृथ्वी के इतिहास में रेगिस्तान की उपस्थिति सदैव रही है।

सहारा मरुस्थल हर साल 800 मीटर तक फैल जाता है।

तथ्य निराले

बहुत सारी Dragonflies नदियों के पास रहती हैं, ताकि वह आसानी से मच्छरों-छोटी मक्खियों का शिकार कर सकें।

अमरीका से ज्यादा अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या एशिया में है।

Dreamt एकमात्र अंग्रेजी का ऐसा शब्द है, जिसमें अंत में mt होता है।

एक मुर्गी को 12 अंडे देने के लिए लगभग 1.5 किलो खुराक की आवश्यकता होती है।

एक पूरी तरह से उगा हुआ वृक्ष एक नए लगाए गए पौधे से 70 गुना ज्यादा पर्यावरण को साफ रखता है।

दुनिया के 80 प्रतिशत जंगल काट दिए गए हैं। अंग्रेजों के आने से पहले उत्तर भारत भी ज्यादातर जंगलों से घिरा हुआ था।

हमारे मुंह में एक दिन में 1 लीटर लार (saliva) बनती है।

हाथी एक इकलौता जानवर है, जो कूद नहीं सकता। इसके चार घुटने होते हैं।

हाथी लम्बे समय तक पानी में तैर सकते हैं।

हाथी दिन के 16 घंटे सिर्फ खाने में ही बिता देते हैं।

हाथी लगभग एक दिन में 120 किलो तक भोजन खा जाते हैं।

जानवरों में हाथियों का दिमाग सबसे बड़ा होता है।

नर उल्लुओं का वजन और आकार मादा उल्लुओं से कम होता है।

घोड़ा अपने वजन से पांच गुना अधिक बोझ खींच सकता है।

बाज की चोंच की शक्ति बहुत ज्यादा होती है। इसकी चोंच एक बंदूक की गोली से दुगुनी ताकतवर होती है।

सबसे बड़ी चींटियां ब्राजील में पायी जाती हैं। पर फिर भी इनकी लम्बाई छह मिलीमीटर ही होती है।

विक्टोरिया मेमोरियल

वि□टोरिया मेमोरियल कोलकाता के प्रसिद्ध और सुंदर स्मारकों में से एक है। इसका निर्माण वर्ष 1906 और 1921 के बीच भारत में रानी वि□टोरिया के 25 वर्ष के शासन काल के पूरा होने के अवसर पर किया गया था। वि□टोरिया मेमोरियल भारत में ब्रिटिश राज की याद दिलाने वाला भव्य भवन है। यह विशाल सफेद संगमरमर से बना संग्रहालय राजस्थान के मकराना से लाए गए संगमरमर से निर्मित है।

इसमें भारत पर शासन करने वाली ब्रिटिश राजशाही की अवधि के अवशेषों का एक बड़ा संग्रह रखा गया है। संग्रहालय का विशाल गु□बद, चार सहायक अष्टभुजी गु□बदनुमा छतरियों से घिरा हुआ है। इसके ऊंचे ख□भे, छतें और गु□बददार कोने वास्तुकला की भव्यता की कहानी कहते हैं। यह मेमोरियल 338 फीट लंबे और 22 फीट चौड़े स्थान में निर्मित भवन के साथ 64 एकड़ भूमि पर बनाया गया है।

लॉर्ड कर्जन, जो तत्कालीन भारतीय वायसराय थे, ने जनवरी 1901 में महारानी वि□टोरिया की मृत्यु होने पर इसे जनता के लिए राजशाही स्मारक के रूप में रखने पर प्रश्न उठाया। युवराज और भारत की जनता ने धन उगाही की उनकी इस अपील पर उदारता दिखाई और लॉर्ड कर्जन ने लोगों के स्वैच्छिक अंशदान से एक करोड़, पांच लाख रुपए की राशि से इस स्मारक की निर्माण की पूरी लागत जमा की। प्रिंस ऑफ वेल्स, किंग जॉर्ज पंचम, ने 4 जनवरी 1906 को इसकी आधारशिला रखी और वर्ष 1921 में इसे औपचारिक रूप से जनता के लिए खोल दिया गया। यह विशाल संरचना इस समय ब्रिटिश भारत के समय के स्मारक चिह्नों का एक संग्रहालय है।

यहां प्रसिद्ध यूरोपीय कलाकारों जैसे चार्ल्स डोली, जोहान जोफानी, विलियम हेजिज, विलियम सि□पसन, टिली केटल, थोमस हिके, बुलजार सोलविन्स, थोमस

सेंट केथेड्रल चर्च

गोवा की सबसे पुरानी और प्रतिष्ठित धार्मिक इमारतों में से यह भव्य 16 वीं शता□दी का स्मारक है। इसे पुर्तगाल शासन के दौरान रोमन केथोलिक द्वारा बनाया गया था। यह एशिया का सबसे बड़ा चर्च है। यह केथेड्रल एले□सेंड्रिया के सेंट केथेरिन को समर्पित है। जिनके भोज्य दिवस पर वर्ष 1510 में अल्फोंसो अल्बूकर्क ने मुस्लिम सेना को पराजित किया और गोवा शहर का स्वामित्व लिया। इसलिए इसे सेंट केथेरिन का केथेड्रल भी कहते हैं और यह पुर्तगाल में बने किसी भी चर्च से बड़ा है।

इस केथेड्रल को पुर्तगाली वाइसराय रिडोंडो ने पुर्तगाल के एक विशाल चर्च, जहां संपर्ा□ा, शा□ित और प्रसिद्धि हो, के एक ऐसे रूप में स्थापित किया था, जो अटलांटिक से प्रशांत महासागर तक समुद्र पर क□जा कर सके। इसके विशाल मु□त द्वार का निर्माण वर्ष 1562 में राजा डोम सेबास्टियो (1557-78) ने करवाया था। इसे सन् 1619 में काफी हद तक पूरा किया गया था। वर्ष 1640 में इसे अर्पित किया गया था।

यह चर्च 250 फीट लंबा और 181 फीट चौड़ा है। इसका अगला हिस्सा 115 फीट ऊंचा है। यह भवन पुर्तगाली-गोथिक शैली में टस्कन बाह्य सज्जा और कोरिंथियन अंदरूनी सज्जा के साथ बनाया गया है। केथेड्रल का बाह्य हिस्सा शैली की सादगी के लिए उल्लेखनीय है, जबकि इसकी अंदरूनी सजावट अपनी भव्यता से दर्शकों का मन मोह लेती है।

केथेड्रल के स्तंभ गृह में प्रसिद्ध घंटा है, जो गोवा में सबसे बड़ा और विश्व में एक सर्वो□ाम कृति माना जाता है। इसे बहुधा अपनी शानदार आवाज के लिए स्वर्ण घंटी कहा जाता है। यहां मु□य पूजा स्थल अले□सेंड्रिया के सेंट केथेरिन को समर्पित है। यहां दोनों ओर लगी तस्वीरें उनके जीवन और निर्माण के दृश्य प्रदर्शित करती हैं।

इनके अलावा यहां डेनियल्स द्वारा बनाई गई तस्वीरों का विश्व का सबसे बड़ा संग्रह रखा हुआ है। यहां की रॉयल गेलरी महारानी वि□टोरिया के जीवन से जुड़ी घटनाओं के तैलचित्रों का भण्डार है।

इस स्मारक की ऊंचाई 200 फीट है। यहां की शांति आपको इसके गलियारों में खो जाने के लिए मजबूर कर देती है। उ□ारी पोर्च के ऊपर आकृतियों का एक समूह मातृभूमि, विवेक और अधिग□यता का निरुपण करता है। मु□य गु□बद के आस-पास कला, वास्तुकला, न्याय, धर्मार्थ सहायता आदि की आकृतियां हैं।

वि□टोरिया मेमोरियल की व्यापकता और भव्यता को इस बात से समझा जा सकता है कि इसे उद्यान, पुस्तकालय जैसे विभिन्न प्रभागों में बांटा गया है। यहां टीपू सुल्तान की तलवार, प्लासी के युद्ध में उपयोग किये गए बेंत, वर्ष 18 70 से भी पहले की दुर्लभ वस्तुएं, अबुल फजल द्वारा लिखी गई आइने-अकबरी जैसी मूल्यवान पांडुलिपियां, दुर्लभ डाक टिकट एवं पश्चिमी तस्वीरों जैसी कीमती वस्तुएं भी यहां रखी गई हैं, जो दर्शकों के

नेव की दायीं ओर चमत्कारों का चेपल ऑफ क्रॉस बना हुआ है। ईसा मसीह की एक झलक इस विशाल, सादे क्रॉस पर वर्ष 1919 में प्रकट होने का उल्लेख है। मु□य पूजा गृह में विशाल सोने का आवरण चढ़े हुए वेदी पटल हैं। सेंट केथेरिन के जीवन के दृश्य, जिन्हें यह केथेड्रल समर्पित है, इसके छह मु□य पैनलों पर तराशे गए हैं। बायीं ओर के कक्ष में वर्ष 1532 के दौरान बपतिस्मा के अक्षर बनाए गए हैं।

यहां दुनिया भर से हजारों लोग आते हैं और इस चर्च को सभी धर्मों के लोग एक धार्मिक स्थल मानते हैं। यह गोवा का एक आकर्षक पर्यटक स्थल भी है। गोवा आने पर इस केथेड्रल को देखें बिना वापस जाने पर यात्रा को अधूरा माना जाता है। यानी पर्यटन और आस्था का संगम है यह केथेड्रल।

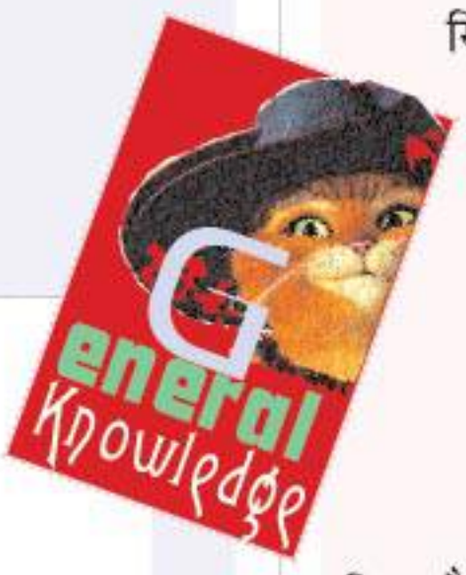

स्विट्जरलैण्ड

स्विट्जरलैण्ड का प्राचीन नाम हेलवेतिया था। दसवीं शता□दी में यह पवित्र रोमन साम्राज्य का एक अंग बन गया। वर्ष 1648 में वेस्टफेलिया संधि के बाद यह रोमन साम्राज्य से अलग हो गया, और इसकी स्वतंत्रता को मान्यता मिली। इससे पूर्व सन् 1291 में यहां स्विस परिसंघ का निर्माण हो चुका था। वर्ष 1798 में नेपोलियन ने इसे जीत

लिया था। सन् 1848 में यहां संविधान निर्माण हुआ। वर्ष 1863 में रेडक्रॉस संस्था की स्थापना भी यहीं हुई थी।

आधिकारिक नाम- स्कावीजेरिशे इद्‌गेनोसेन्सशा□ट-कॉन्फेडरेशन स्विस कन्फेडरेजियोन स्विजेरा।

राजधानी- बर्न। **मुद्रा-** स्विस फ्रैंक।

मानक समय- जी एम टी से 1 घंटा आगे।

भाषा- जर्मन, फ्रेंच, इटालियन, रोमन (सभी आधिकारिक)।

कुल जनसं□या- 80,14,000

क्षेत्रफल- 41,290 वर्ग किलोमीटर।

स्थिति- मध्य यूरोप में फ्रांस के पूर्व और इटली के उ□ार में स्थित है। **जलवायु-** विविधता लिए हुए और ऊंचाई से प्रभावित है।

मानचित्रानुसार- अधिकांश भाग पर्वतीय है। कई बड़ी झीलें भी स्थित हैं। **प्रमुख नदियां-** राइन, रोन।

सर्वोच्च शिखर-ड्यूफोर्सपिट्ज-4,634 मीटर[15,205 फीट]।

प्रमुख बड़े शहर- ज्युरिख, बर्न, जेनेवा, सेंट गैलन।

प्रमुख उद्योग- खाद्य पदार्थ, दुग्ध उत्पाद, चीनी, वस्त्र, जूते, रसायन, घड़ी। **प्रमुख फसलें-** गेहूं, म□का, त□बाकू, चुकंदर, सेव।

प्रमुख खनिज- लकड़ी, नमक, हाइड्रोपावर।

शासन प्रणाली- गणतंत्रात्मक। **संसद-** फेडरल असे□बली।

राष्ट्रीय ध्वज- लाल रंग पर सफेद क्रॉस निर्मित है।

स्वतंत्रता दिवस- 1 अगस्त, 1291 **प्रमुख धर्म-** ईसाई।

प्रमुख हवाई अड्डा- बेस्ले, बर्न, जेनेवा, लुगानो, ज्युरिख स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे।

इंटरनेट कोड- .ch

सेंटा की एंजल

क्रिसमस की रात बच्चों को उपहार देने के लिए सेंटा अपनी गाड़ी में निकलते हैं। उनकी गाड़ी में उपहार भरे होते हैं। इतने सारे उपहारों को बनाने में सेंटा की मदद चार जादुई बौने करते हैं। एक क्रिसमस की बात है। उपहार बनाने वाले चारों जादुई बौनों की तबियत गड़बड़ा गई। इनके बदले में सेंटा ने कुछ नए बौनों को रखा था। ये ट्रेनी बौने तेजी से उपहार नहीं बना पा रहे थे। बेचारे सेंटा क्रिसमस की तैयारियों में उलझे हुए थे। जैसे-तैसे उपहार तैयार करवा कर, सेंटा अपनी शान की सवारी स्लेज के पास पहुंचे। वहां पहुंच के सेंटा देखते हैं कि उनकी सवारी को खींचने वाले रेनडियर मतलब बारहसिंगा तो वहां हैं ही नहीं।

सेंटा ने सोचा कि दूसरे रेनडियर का इंतजाम बाद में कर लूंगा, पहले स्लेज में उपहार लाद लिए जाएं। पर यह □या! उनके थोड़े से उपहारों के बोझ से ही स्लेज टूट गई। स्लेज तो टूटी ही, साथ में उपहार भी टूट गए। सेब का शरबत पीने के इरादे से हताश सेंटा घर की ओर बढ़े।

घर पहुंचकर सेंटा ने अलमारी खोली। उसमें से शरबत का जग निकाला तो उनके होश उड़ गए। ट्रेनी बौने सारा शरबत पीकर खत्म कर चुके थे। आज का पूरा दिन सेंटा के लिए ऐसी ही गड़बड़ियों से भरा था। परेशान सेंटा के हाथ से शरबत का जग छूटकर जमीन पर गिर गया। उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए। अब, कांच किसी के पैर में न लग जाएं, इसलिए कांच के टुकड़ों को साफ करना भी जरूरी था, इसलिए सेंटा झाड़ू लेने गए। वहां का नजारा और भी दुखदायी था। दरअसल चूहे झाड़ू खा गए थे।

परेशान और हताश सेंटा सोच ही रहे थे कि □या करें, तभी दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। सेंटा ने दरवाजा खोला और देखा तो दरवाजे पर एक छोटी-सी, प्यारी-सी एंजल खड़ी थी। उसके हाथ में एक सुंदर और बड़ा क्रिसमस-ट्री था। प्यारी एंजल ने मुस्कराते हुए सेंटा से कहा, 'मैरी क्रिसमस सेंटा! आज कितना प्यारा दिन है न! मैं आपके लिए यह खूबसूरत क्रिसमस ट्री लायी हूं। □या आप इस क्रिसमस ट्री पर मुझे भी जगह देंगे?' एंजल ने सेंटा की पूरे दिन की उदासी को पल में छू-

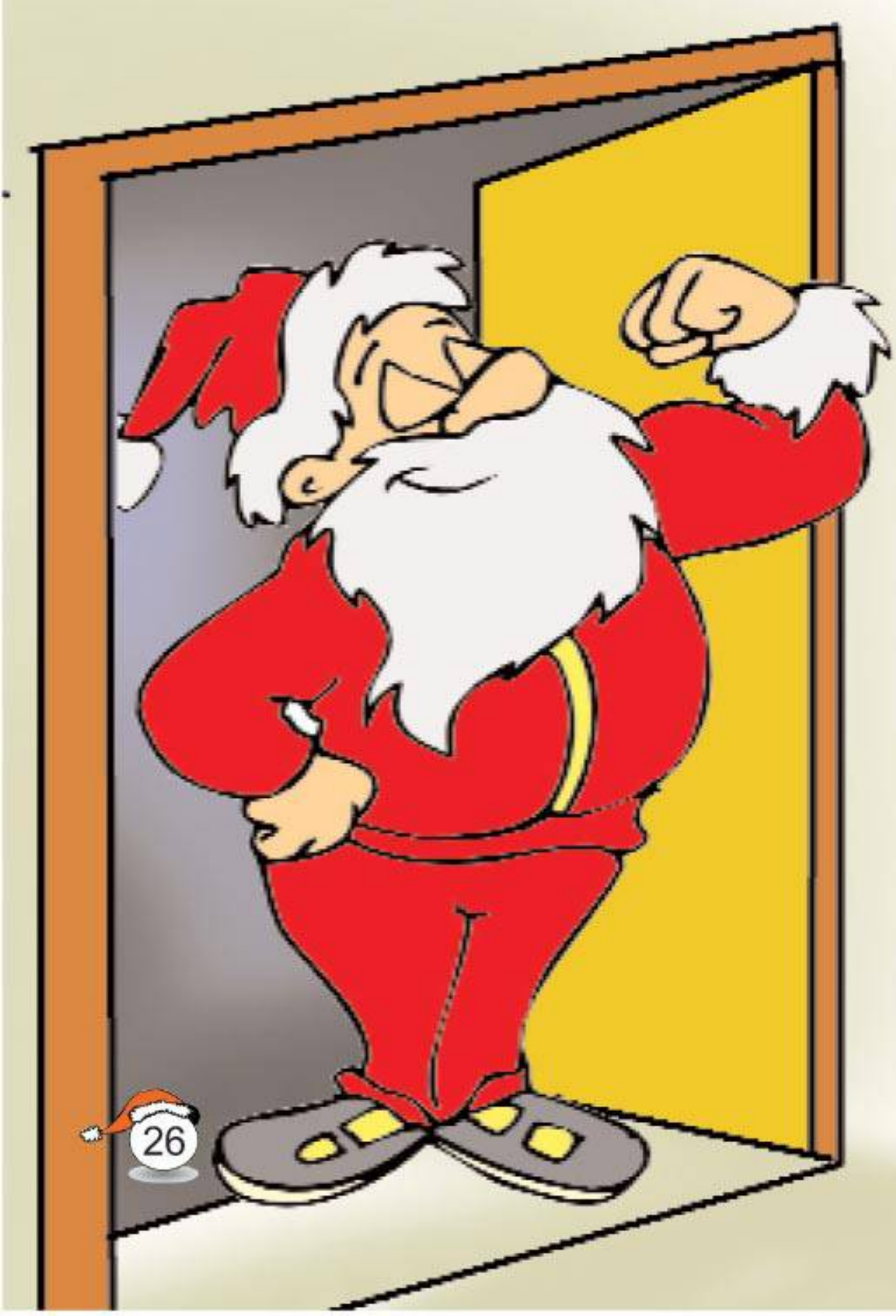

पांच लाख लाइटें

ऑस्ट्रेलिया की राजधानी कैनबरा में एक परिवार ने हाल में एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने अपने घर को 502,165 लाइटों से सजाया। रोशन घर को आम लोगों के लिए खोल कर उन्होंने चैरिटी के लिए पैसे जमा किए।

पारंपरिक मोमबत्तियां

क्रिसमस में प्रकाश से घरों की सजावट की शुरुआत 18वीं सदी में जर्मनी में हुई। यहीं से इस पर□परा का विस्तार यूरोप और अमेरिका तक हुआ। उस समय तक बिजली के बल्ब का आविष्कार नहीं हुआ था। सर्दियों की ठंडी अंधेरी रातों में परिवार क्रिसमस ट्री की शाखों पर

दिल लुभाने वाला

एडिसन ने ही पहली बार बिजली के छोटे-छोटे बल्बों को मिलाकर लट तैयार की थी। वर्ष 1880 में उन्होंने इसे न्यूजर्सी में अपनी प्रयोगशाला के बाहर लटकाया। आज दुनियाभर में लोग बल्बों से घरभर को रोशन करते हैं।

शहर से रूबरू

आमतौर पर शहर का प्रशासन या फिर अन्य कंपनियां शहर की मशहूर इमारतों को प्रकाशमान करने का बीड़ा उठाती हैं। यूरोप में हर शहर का मु□य चौराहा चमकीले क्रिसमस ट्री और बल्बों से सजा होता है, जैसे बर्लिन का यह नजारा।

औद्योगिक स्तर पर

छोटी-बड़ी लाइटों से सजावट की पर□परा उन देशों में भी आम हो गई है, जहां क्रिसमस मनाने वाले कम ही लोग हैं, जैसे चीन और जापान। लेकिन क्रिसमस के समय ग्राहकों को सजावट से लुभाना आसान है। यह मंजर है शंघाई के एक

मेडेलिन में जादू

कोलंबियाई शहर मेडेलिन में क्रिसमस की जगमगाहट 1955 से शुरू हुई और आज भी बेहद मशहूर है। हर साल यहां की सजावट देखने लोग दूर-दूर से आते हैं। पिछले साल के कार्यक्रम के लिए 2.7 करोड़ बल्बों पर 90 लाख डॉलर

पिछले कुछ सालों में कई लोगों ने पर्यावरण का □याल रखते हुए क्रिसमस की जगमगाहट के लिए एलईडी लाइटों का इस्तेमाल शुरू कर दिया है। इन लाइटों में ऊर्जा की खपत कम होती है। न्यूयॉर्क के रॉकफेलर सेंटर में वर्ष 2007 से सजावट के लिए एलईडी लाइटें इस्तेमाल हो रही हैं। पिछले साल भी 75 फीट का

सेंटा की उदारता

यह तस्वीर अमरीका के □लोरिडा के तट की है। स्पेंसर स्लेट नाम के एक व्यि□त सेंटा □लॉज के भेष में पानी में मछलियों के बीच दिखाई दे रहे हैं। स्पेंसर सालों से सेंटा के भेष में डुबकी लगाते हैं। उनके ग्राहक उनके साथ फोटो खिंचवाने के लिये जो पैसे देते हैं, वो बच्चों की एक

जादुई जूते

आसमान के तीन लड़के थे। बड़ा लड़का सूरज, छोटी लड़की पृथ्वी और सबसे छोटा नटखट चांद। वे तीनों अलग-अलग स्वभाव के थे। सूरज बड़ा होने के कारण सबका लाड़ला था। उसके मनचाहे काम न होने पर वह वस्तुओं की तोड़-फोड़ करता था। चांद सबसे छोटा था, वह भी बहुत शैतान था। इसके विपरीत बहन पृथ्वी इनके सभी काम करती और बिल्कुल सीधी-सादी थी। वह खाना बनाती और दोनों भाई जब तक नहीं आते, वह अकेले खाना नहीं खाती थी। जब तीनों मिलते, तभी खाना खाते थे।

एक दिन चांद और पृथ्वी खेल कर लौटे। तब उन्होंने एक आदमी जिन्हें वे नहीं जानते थे, उसे अंदर बैठा देखा। वह आदमी सिर पर ऊंची टोपी, लंबा लाल रंग का चोगा पहने था और उसकी दाढ़ी बहुत बड़ी थी। तब उनके पिता ने उन्हें बताया, 'यह तुहारे जादूगर बाबा हैं।'

चांद ने पूछा, 'पिताजी, ये हमें जादू दिखाएंगे?'

पिताजी बोले, 'हां-हां, यों नहीं?'

तब जादूगर बाबा चांद से बोले, 'अपना हाथ आगे बढ़ाओ और आंखें बंद रखो।' चांद ने वैसा ही किया। देखते ही देखते उसके हाथ में एक छोटा-सा खरगोश आ गया। चांद खुशी से झूमने लगा।

तभी पृथ्वी बोली, 'बाबा, मुझे खाने के लिए मिठाई ला दो।' और उसने अपनी आंखें बंद कर ली और हाथ आगे बढ़ा दिया। देखते ही देखते उसके हाथ में खूब सारी मिठाई आ गई। वह भी बहुत खुश हो गई।

तभी चांद की नजर बाबा के पास ही रखे झोले पर पड़ी। वह बोला, 'बाबा, इसमें या है? हमें भी बताइए ना।'

अब तो चांद और पृथ्वी दोनों ही जिद करने लगे। बाबा ने झोले में से दो जोड़ी जूते निकाल कर उन दोनों को दिखाए। जूते बहुत ही सुंदर थे। उनमें हीरे-मोती जड़े थे। उसमें से एक जोड़ी जूते लाल थे और एक जोड़ी सफेद थे। चांद बोला, 'बाबा, यह जूते हमें दे दो न।'

बाबा बोले, 'नहीं बेटा, यह जूते तुहारे काम के नहीं हैं। यह जूते जो एक बार पहनता है, वह उम्रभर चलता ही रहता है। अगर वो इन्हें उतारना भी चाहे तो भी नहीं उतार सकता।'

जब रात को सभी सो गए, तब पृथ्वी, जिसका मन अभी भी उन जूतों में ही था, उसने बाबा की बात की परवाह किए बगैर चुपके से वे लाल जूते बाबा के झोले में से निकाले और पहन लिए और घूमने निकल गई। उसे बहुत मजा आ रहा था। चलते-चलते सुबह होने को आ गई थी। उसने सोचा, चलो अब वापस घर चलते हैं। जैसे ही उसने पलटने की कोशिश की तो वह पलट ही नहीं पाई। वह बहुत घबरा गई। अपने पापा और भाइयों को याद करने लगी। उसे अब जादूगर बाबा की बातें याद आ रही थी और उसे अपनी गलती का एहसास था।

उधर घर पर चांद की आंखें खुली तो वह पास में बहन को न पा कर उठ बैठा। वह समझ गया कि हो न हो, दीदी वह सुंदर जूते पहन कर बाहर घूम रही होंगी। उसने बाहर की ओर देखा तो कोई नहीं था। वह बाबा के कमरे में गया और चुपके से सफेद वाले जूते निकालकर पहन लिए, फिर पृथ्वी को ढूंढ़ने निकल पड़ा। थोड़ी देर तक तो उसे बहुत मजा आया। जब वह

बड़ा लड़का सूरज, छोटी लड़की पृथ्वी और सबसे छोटा नटखट चांद। वे तीनों अलग-अलग स्वभाव के थे। जादुई जूतों का इनके साथ क्या खेल हुआ, जरा इस कहानी से जानें।

कहानी

थक गया और उसने रुकना चाहा तो वह रुक नहीं पाया। घबरा कर वह रोने लगा। पर अब या हो सकता था, उसे तो उम्रभर अब ऐसे ही चलते रहना था।

जब आसमान सो कर उठा तो उसने देखा कि पृथ्वी और चांद कमरे में नहीं हैं। उसने सोचा, वे जादूगर बाबा के पास होंगे। वह वहां गया, पर वे दोनों तो उनके पास भी नहीं थे। उसने झोली टटोली तो उसमें जूते नहीं थे। वह सारा माजरा समझ गया। वह बहुत दुखी हो गया, योंकि उसे पता था कि अब उसके दोनों बच्चों को जीवनभर चलते ही रहना पड़ेगा।

जब सूरज को अपनी बहन पृथ्वी और भाई चांद के बारे में पता चला तो उसे बहुत गुस्सा आया। उसे अपने भाई-बहन की बहुत याद आ रही थी। उसने सोचा, यों न मैं ऐसा कुछ करूं कि मैं हमेशा अपने भाई-बहन को देख पाऊं।

तब उसने एक उपाय सोचा। वह एक ऐसी जगह पर जा कर खड़ा हो गया, जहां से घूमते-घूमते पृथ्वी-चांद को वह देख सके और वह दोनों अपने बड़े भाई को देख कर खुद को अकेला न महसूस करें।

करोड़ों वर्ष बीत गए। तब से आज तक तीनों भाई-बहन एक-दूसरे को देखते रहते हैं, पर आपस में मिल नहीं पाते हैं।

-नरेन्द्र

परिश्रम और भाग्य
चोल राजा अपने मंत्रियों की समय-समय पर बुद्धि की परीक्षा लिया करते थे।
मंत्रीजी, क्या आप भाग्य में विश्वास करते हैं?
महाराज, भाग्य कुछ नहीं होता, परिश्रम से ही सफलता मिलती है।
लेकिन यह विद्वान महोदय इस बात से सहमत नहीं हैं।
महाराज, भाग्य कुछ नहीं होता!
यदि आप मुझे सोने के सिक्कों से भरा हुआ एक थैला दें, तो मैं इस बात को सिद्ध कर दूंगा।
राजा सोने के सिक्के देने के लिए सहमत हो गया।

विद्वान ने थैले को आधा सोने के सिक्कों से भर दिया।
अब मैं इस थैले को आधा किसी और वस्तु से भर देता हूं।
विद्वान ने थैले को आधा लड्डुओं से भर दिया।
हि... हि...
हुं!?
अंधेरा होने पर राजा, विद्वान और मंत्रीजी के साथ रवाना हुए।
इस थैले को यहां छोड़ देते हैं और देखते हैं क्या होता है?
दो लोग थैले के पास आये।
देखो! थैला रखा हुआ है!
लड्डू!! आओ इन को ले चलते हैं।
नहीं!

ये जहरीले हो सकते हैं।
हां, तुम ठीक कहते हो!
उनके जाने के बाद...
वे थैला छोड़ गये।
भाग्य ने उनका साथ नहीं दिया। कोई संदेह...
अब इसे पेड़ की इस शाखा पर लटका देते हैं...
जल्दी नीचे आ जाओ, कोई आ रहा है...
थैला...!
आओ देखते हैं...!
चढ़ना काफी मुश्किल है!
मैं पेड़ पर चढ़ कर, थैले को नीचे गिराता हूं।

आहा लड्डू!! मैं दो-चार तो खा ही लेता हूं।
कुछ लड्डू खाने के बाद...
कुछ लड्डू मेरे लिए भी फेंक दो।
ये लो! पकड़ो!
क्या...!?
लड्डुओं के नीचे सोने के सिक्के हैं...!!
महाराज, मैंने आपको पहले ही बताया था...
Jingle Bell Creations
महाराज, परिश्रम से ही कार्य सिद्ध होता है। अकेला भाग्य कुछ नहीं कर सकता!!
(समाप्त)

दिसम्बर-II, 2014

बालहंस

Poster

देश-विदेश में क्रिसमस

सेंटा कहीं ला बेफाना, कहीं सिंतर क्लास तो कहीं सेंट निकोलस

क्रिसमस त्योहार के सर्वव्यापी बनने का सबसे बड़ा कारण शायद सेंटा क्लॉज रहा है, जिसने दुनियाभर के बच्चों का मन मोह लिया। हमारा बालसुलभ मन कंधे पर उपहारों का बड़ा-सा बोरा लादे इस महान संत के विषय में तरह-तरह की कल्पनाएं करता रहता है।

25 दिस□बर की रात को हम बच्चे इस विश्वास के साथ गहरी नींद में खो जाते हैं कि रात को चुपके से वह हमारे घर आकर हमारा मनपसंद उपहार रख जाएगा। बच्चे हर साल बड़ी तन्मयता से सेंटा □लॉज के नाम अपनी चिट्ठी लिखने के बाद उसे एक मोजे में रखकर खिड़की में टांग देते हैं। अगले दिन जब वे सोकर उठते हैं तो उन्हें अपने उपहार जगमगाते क्रिसमस पेड़ के नीचे रखे मिलते हैं। चाहे इसके पीछे सच्चाई यह भी रही हो कि सेंटा आए न आए, लेकिन सेंटा का काम बच्चों के माता-पिता कर देते हैं। शायद वे उनका विश्वास नहीं तोड़ना चाहते। पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही इस पर□परा की मजेदार बात यह है कि ये बच्चे बड़े होते हैं, तब सच्चाई जान लेने के बावजूद वे भी सेंटा □लॉज के उपहारों से अपने बच्चों का मन लुभाने में कसर नहीं छोड़ते। ऐसी पर□पराएं जिस त्योहार के साथ जुड़ी हो, वह देश-

जापान तो मूल रूप से एक बौद्ध देश है, लेकिन चीन की ही तरह 19 वीं शता□दी में वहां भी इस त्योहार से संबंधित चीजों का निर्माण शुरू हो गया था। तभी से जापानी लोग क्रिसमस के नाम से परिचित होने लगे। हालांकि जापान में केवल एक प्रतिशत लोग ही ईसाई धर्म के अनुयायी हैं, लेकिन यह त्योहार बच्चों से जुड़ा होने के कारण लगभग हरेक जापानी घर में आपको सजा हुआ क्रिसमस पेड़ देखने को मिल जाएगा। जापानवासियों के लिए यह एक छुट्टी का दिन होता है, जिसे वे बच्चों के प्रति अपने प्यार को समर्पित करते हैं। जगह-जगह खिलौने, गुड़ियां, रंग-बिरंगी कंदीलें और अन्य चीजों से सजे बड़े-बड़े क्रिसमस के पेड़ देखने को मिल जाएंगे। जापान की सबसे खास चीज है- ऑरिगैमी से बना (कागज मोड़ कर तथा काट कर बनाया गया) पक्षी, जिसे ये लोग शांति का दूत कहते हैं। इसे जापानी बच्चे एक-दूसरे को उपहार में देते हैं।

ऑस्ट्रेलिया में इस त्योहार को मनाने का अपना अलग ही अंदाज है। दिस□बर में जब अन्य देश ठंड की चपेट में होते हैं, कहीं-कहीं बर्फ भी पड़ रही होती है। वहीं दूसरी ओर ऑस्ट्रेलिया में यह गर्मियों का मौसम होता है। वहां के लोग इस त्योहार को समुद्र के किनारे मनाते हैं, और इस अवसर पर अपने मित्रों तथा स्वजनों के लिए एक विशेष रात्रि-भोज का आयोजन करते हैं। इसमें आलूबुखारे की खीर विशेष रूप से बनाई जाती है। ऑस्ट्रेलियाई लोग अपने सगे-संबंधियों के साथ ही क्रिसमस मनाते हैं, चाहे इसके लिए उन्हें हजारों मील लंबी यात्रा ही □यों न करनी पड़े।

इजराइल में, जहां ईसा मसीह का जन्म हुआ था, क्रिसमस के अवसर पर दुनियाभर के अलग-अलग धर्मों के लोग तीर्थयात्रा पर आते हैं। बेथलेहेम में जिस स्थान पर ईसा ने जन्म लिया था, वहां आज 'चर्च ऑफ नेटिविटी' स्थित है। चर्च के आंगन में एक सुनहरा तारा बनाया गया है, कहते हैं कि ठीक उसी स्थान पर ईसा पैदा हुए थे। इस तारे के ऊपर चांदी के 15 दिये लटके हुए हैं, जो सदैव जलते रहते हैं। क्रिसमस के एक दिन पहले यहां लेटिन भाषा में विशेष प्रार्थना के बाद घास-फूंस बिछाकर जीसस के प्रतीक स्वरूप एक बालक की प्रतिमा रख दी जाती है। इजराइल के बहुसं□यक यहूदी लोग क्रिसमस के दिन 'हनु□का' नामक पर्व मनाते हैं। दो हजार साल पहले आज ही के दिन यहूदियों ने यूनानियों को हराकर जेर्स्सलेम के मंदिर पर फिर से अपना अधिकार कर लिया था। इस विजय की स्मृति में

मेक्सिको में क्रिसमस पर ईसाई धर्म तथा प्राचीन अजटेक धर्म का मिला-जुला स्वरूप देखने को मिलता है। वहां यह त्योहार 16 दिसंबर को ही शुरू हो जाता है। लोग अपने घरों को रंग-बिरंगे फूलों, सदाबहार पेड़-पौधों तथा

सुंदर कागज के कंदीलों से सजाते हैं। सूर्य भगवान की भव्य मूर्ति के समक्ष जीसस के जन्म को दर्शाने वाली झांकियां बनाई जाती हैं। इस दौरान हर शाम को मैरी तथा जोजफ की प्रतीकात्मक यात्रा दिखाई जाती है, जब वे दोनों रात बिताने के लिए एक सराय की खोज में निकलते हैं।

यूरोप के देशों में क्रिसमस अलग-अलग प्रकार से मनाया जाता है। **फ्रांस** में यह मान्यता प्रचलित है कि पेयर फुटार्ड उन सभी बच्चों का ध्यान रखते हैं, जो अच्छे काम करते हैं और 'पेयर नोएल' के साथ मिलकर वे उन बच्चों को उपहार देते हैं। **इटली** में सेंटा को 'ला बेफाना' के नाम से जाना जाता है, जो बच्चों को सुंदर उपहार देते हैं। यहां 6 जनवरी को भी लोग एक-दूसरे को उपहार देते हैं, क्योंकि उनकी मान्यता के अनुसार इसी दिन तीन बुद्धिमान पुरुष बालक जीसस के पास पहुंचे थे।

हॉलैंड में 'सिंतर क्लास' घोड़े पर सवार होकर बच्चों को उपहार देने आता है। रात को सोने से पहले बच्चे अपने जूतों में 'सिंतर क्लास' के घोड़े के लिए चारा तथा शक्कर भर कर घरों के बाहर रख देते हैं। सुबह उठने के बाद जब वे घर से निकलकर अपने जूतों की तरफ दौड़ते हैं, तब उन्हें उनमें घास तथा शक्कर के स्थान पर चॉकलेट तथा मेवा भरे देखकर बहुत आश्चर्य होता है। **बेल्जियम** में सेंटा को सेंट निकोलस के नाम से जाना जाता है। सेंट निकोलस दो बार लोगों के घर जाते हैं। पहले 4 दिसंबर को बच्चों का व्यवहार देखने जाते हैं, उसके बाद 6 दिसंबर को वे अच्छे बच्चों को उपहार देने जाते हैं।

आइसलैंड में यह दिन एक अनोखे ढंग से मनाया जाता है। वहां एक के बजाय 13 सेंटा क्लॉज होते हैं और उन्हें एक पौराणिक राक्षस 'ग्रिला' का वंशज माना जाता है। उनका आगमन 12 दिसंबर से शुरू होता है और यह क्रिसमस वाले दिन तक जारी रहता है। ये सभी सेंटा विनोदी स्वभाव के होते हैं।

डेनमार्क में सेंटा यानी 'जुलेमांडेन' बर्फ पर चलने वाली गाड़ी स्लेज पर सवार होकर आता है। यह गाड़ी उपहारों से लदी होती है और इसे रेंडियर खींच रहे होते हैं।

नॉर्वे के गांवों में कई सप्ताह पहले ही क्रिसमस की तैयारी शुरू हो जाती है। वे इस अवसर पर एक विशेष प्रकार का लॉग केक (लकड़ी के लट्ठे के आकार का केक) घर पर ही बनाते हैं। त्योहार से दो दिन पहले माता-पिता अपने बच्चों से छिपकर जंगल से देवदार का पेड़ काटकर लाते हैं और उसे विशेष रूप से सजाते हैं। इस पेड़ के नीचे बच्चों के लिए उपहार भी रखे जाते हैं। डेनमार्क के बच्चे परियों को 'जूल निसे' के नाम से जानते हैं और उनका विश्वास है कि ये परियां उनके घर की टांड पर रहती हैं।

फिनलैंड के निवासियों के अनुसार सांता उत्तरी ध्रुव में 'कोरवातुनतुरी' नामक स्थान पर रहता है। दुनियाभर के बच्चे उसे इसी पते पर पत्र लिख कर उसके समक्ष अपनी अजीबोगरीब मांगे पेश करते हैं। उसके निवास स्थान के पास ही पर्यटकों के लिए क्रिसमस लैंड नामक एक भव्य थीम पार्क बन गया है। यहां के निवासी क्रिसमस के एक दिन पहले सुबह को चावल की खीर खाते हैं तथा आलू बुखारे का रस पीते हैं। इसके बाद वे अपने घरों में क्रिसमस-ट्री सजाते हैं। दोपहर को वहां रेडियो

शेष पृष्ठ 38 पर...

(पृष्ठ 37 का शेष)

इंग्लैण्ड में इस त्योहार की तैयारियां नव□बर के अंत में शुरू हो जाती हैं। बच्चे बड़ी बेताबी से क्रिसमस का इंतजार करते हैं और क्रिसमस का पेड़ सजाने में अपने माता-पिता की सहायता करते हैं। चौबीस दिस□बर की रात को वे पलंग के नीचे अपना मोजा अथवा तकिये का गिलाफ रख देते हैं, ताकि 'फादर क्रिसमस' आधी रात को आकर उन्हें विभिन्न उपहारों से भर दें। जब वे अगले दिन सोकर उठते हैं तो उन्हें अपने पैर के अंगूठे के पास एक सेब तथा ऐड़ी के पास एक संतरा रखा हुआ मिलता है। इस अवसर पर बच्चे पटाखे भी जलाते हैं। यहां क्रिसमस के अगले दिन 'बॉ□सिंग डे' भी मनाया जाता है, जो सेंट स्टीफेन को समर्पित होता है। कहते हैं कि सेंट स्टीफेन घोड़ों को स्वस्थ रखते हैं। यहां बा□सिंग का मतलब घूंसेबाजी से नहीं है, बल्कि उन 'बा□स' (डि□बों) से है, जो गिरजाघरों में क्रिसमस के दौरान दान एकत्र करने के लिए रखे जाते थे। क्रिसमस के अगले दिन इन दानपेटियों में एकत्र धन गरीबों में बांट दिया जाता है।

सिंगापुर में भी इस त्योहार का विशेष मह□व है। यहां महीनों पहले से ही इसकी तैयारियां शुरू हो जाती हैं और सभी बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल में सजावट तथा रोशनी के मामले में परस्पर होड़ लग जाती है। हर साल यहां क्रिसमस के लिए कोई नई थीम ली जाती है। यदि थीम 'बर्फीली क्रिसमस' होगी तो पूरे सिंगापुर में इस दौरान चारों तरफ सजावट तथा रोशनी में बर्फ का ही अहसास होगा।

अमरीका में सेंटा □लॉज के दो घर हैं- एक कने□टीकट स्थित टोरिंगटन में तथा दूसरा न्यूयार्क स्थित विलमिंगटन में। टोरिंगटन में सेंटा अपने 'क्रिसमस गांव' में आने वाले बच्चों को अपनी परियों के साथ मिलकर उपहार देता है। इस अवसर पर इस गांव को स्वर्ग के किसी कक्ष की तरह सजाया जाता है। व्हाइटफेस पर्वत के निकट विलिंगटन में सेंटा का स्थायी घर है। हर साल एक लाख से अधिक लोग इस गांव को देखने आते हैं। अमरीका में सेंटा □लॉज नामक एक नगर भी है, जिसमें सेंटा की एक 23 फीट ऊंची मूर्ति है। सेंटा के नाम लिखे अमरीकी बच्चों के सभी पत्र यहीं आते हैं।

प्रस्तुतिः सरोज मित्तल

जीसस का जन्म

क्रिसमस श□द का जन्म क्राईस्टेस माइसे अथवा 'क्राइस्टस् मास' श□द से हुआ है। ऐसा अनुमान है कि पहला क्रिसमस रोम में 336 ईस्वी में मनाया गया था। यह प्रभु के पुत्र जीसस क्राइस्ट के जन्मदिन को याद करने के लिए पूरे विश्व में 25 दिस□बर को मनाया जाता है।

क्राइस्ट के जन्म के स□बन्ध में नए टेस्टामेंट के अनुसार व्यापक रूप से स्वीकार्य ईसाई पौराणिक कथा है। इस कथा के अनुसार प्रभु ने मैरी नामक एक कुंवारी लड़की के पास गैब्रियल नामक देवदूत भेजा। गैब्रियल ने मैरी को बताया कि वह प्रभु के पुत्र को जन्म देगी तथा बच्चे का नाम जीसस रखा जाएगा। वह बड़ा होकर राजा बनेगा, तथा उसके राज्य की कोई सीमाएं नहीं होंगी।

देवदूत गैब्रियल, जोसफ के पास भी गया और उसे बताया कि मैरी एक बच्चे को जन्म देगी, और उसे सलाह दी कि वह मैरी की देखभाल करे व उसका परित्याग न करे। जिस रात को जीसस का जन्म हुआ, उस समय लागू नियमों के अनुसार अपने नाम पंजीकृत कराने के लिए मैरी और जोसफ बेथलेहेम जाने के लिए रास्ते में थे। उन्होंने एक अस्तबल में शरण ली, जहां मैरी ने आधी रात को जीसस को जन्म दिया तथा उसे एक नांद में लिटा दिया। इस प्रकार प्रभु के पुत्र जीसस का जन्म हुआ।

हैप्पी क्रिसमस

क्रिसमस से जुड़े कुछ खास तथ्यों से आपको परिचित कराते हैं

लंदन के जॉन कालकोट होर्सली नामक एक चित्रकार थे। वर्ष 1843 में सर हेरी कोल के लिए उन्होंने सबसे पहला क्रिसमस कार्ड पेंट किया।

एक पार□परिक क्रिसमस डिनर में रोस्टिड टर्की, रोस्टिड आलू, क्रेनवरी सोस, सोसेजेज बेकोन में लिपटी हुई, पुडिंग, डेसर्ट जैसी डिशेज होती हैं।

इंग्लैण्ड की महारानी की पहली क्रिसमस स्पीच पहली बार वर्ष 1957 में टेलीविजन पर प्रसारित हुई थी।

क्रिसमस क्रेकर की ईजाद थो□स स्मिथ ने की थी।

एक पुरानी कथा के अनुसार उस दिन बनाई गई डबलरोटी में कभी फफूंदी नहीं लगती।

सन् 1843 में पहला क्रिसमस कार्ड एक अंग्रेज सर हेनरी कोल जे.सी. होर्सले द्वारा डिजाइन किया गया था, जिसकी 1000 कापियां बेची गईं।

इंग्लैण्ड ने बीसवीं सदी में सिर्फ सात व्हाइट क्रिसमस देखी हैं...। व्हाइट क्रिसमस का अर्थ है, जब उस दिन बर्फ रूई की तरह लन्डन वैदर सेन्टर की छत पर गिरती है।

सेंटा □लाज के रेन्डियर को डेशर, डान्सर, प्रेन्सर, वि□सन, कोमेट, □यूपिड, डोनर/डोन्डर, बिल्ट्जन और रुडोल्फ के नामों से जाना जाता है।

वर्ष 1647 में पूर्टियन लीडर ओलिवर क्रोमवेल के आदेश पर इंग्लिश पार्लियामेंट ने एक लॉ पास कर क्रिसमस मनाने की मनाही कर दी थी। जो इसका उल्लंघन करता, उसे गिर□तार कर लिया जाता था। सन् 1660 में यह प्रतिबंध हटा, जब पूर्टियन लीडर स□ा से हटे।

फादर क्रिसमस के दो पते हैं, ईडनबर्ग और नोर्थ पोल। जो पत्र 'टॉयलैंड' या 'स्नोलैंड' के पते पर भेजे जाते हैं वह ईडनबर्ग पहुंचते हैं। परन्तु जो पत्र 'द नोर्थ पोल' के पते पर भेजे जाते हैं, वे वहीं पहुंचते हैं, □योंकि सचमुच यह एक जगह का पता है।

युद्ध की विभीषिका पर मानवता की विजय

क्रिसमस का त्योहार पूरे विश्व में अत्यन्त उल्लास और गर्मजोशी के साथ मनाया जाता है। सभी धर्मों के लोगों के बीच यह एक खुशी के पर्व के रूप में समान रूप से स्वीकार्य है। आज से लगभग सौ साल पहले वास्तविक रूप में इस त्योहार ने युद्ध के दावानल को अपने प्रेम के आगोश में समेट लिया था।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान घटी इस घटना को लेखक-निर्देशक क्रिश्चियन कैरियन ने बड़े ही मार्मिक और प्रभावशाली ढंग से अपनी फिल्म 'मैरी क्रिसमस' में प्रस्तुत किया है। वर्ष 2005 के अंत में प्रदर्शित यह फ्रेंच फिल्म 'बेस्ट फॉरेन लैंग्वेज फिल्म' की श्रेणी में ऑस्कर पुरस्कार के लिए नामांकित हुई थी। इसके साथ ही इसे वर्ष 2006 के गोल्डन ग्लोब, बाफ्टा एवं सीजर्स जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों के लिए भी नामांकित किया गया था।

इस कहानी को यहां देने का उद्देश्य इस फिल्म की समीक्षा करना नहीं है, बल्कि यह बताना है कि खुशी और उल्लास के मौके ये पर्व-त्योहार किसी विभीषिका या मानवीय त्रासदी को कैसे खत्म कर सकते हैं। क्रिसमस के अवसर पर इस फिल्म की कहानी हमें संदेश देती है कि मानवता से बढ़कर इस दुनिया में कुछ भी नहीं है। मिल-जुलकर रहने में ही जीवन का मजा है।

कहानी के केंद्रीय पात्र तीन देशों की सेनाओं के कमांडर स्कॉटिश लेफ्टिनेंट गार्डन, फ्रेंच लेफ्टिनेंट ऑडबर्ट तथा जर्मन लेफ्टिनेंट निकोलस स्प्रिंक एवं स्प्रिंक की डेनिश प्रेमिका आना सोरेन्सन हैं। क्रिसमस के कुछ दिनों पहले फ्रेंच और स्कॉटिश सेनाएं मिलकर फ्रांस की जमीन पर बने जर्मन बंकरों पर हमला करती हैं। इस हमले में दोनों ओर से भारी जनहानि होती है, लेकिन फिर भी गतिरोध टूटता नहीं है। तब क्रिसमस की पूर्व संध्या पर फ्रेंच और स्कॉटिश सेनाएं फिर से हमले की योजना बनाती हैं।

जर्मन लेफ्टिनेंट निकोलस की प्रेमिका आना एक मशहूर ऑपेरा सिंगर है। उसे क्रिसमस के पूर्व जर्मनी के युवराज विल्हेम के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए बुलाया जाता है। इस कार्यक्रम के बाद आना को अपने साथ एक दिन के लिए निकोलस को ले जाने की भी इजाजत मिल जाती है, क्योंकि निकोलस स्वयं अच्छा गायक भी है। आना से मिलने के बाद निकोलस मोर्चे पर लौटने की बात कहता है तो आना भी जिद करके उसके साथ मोर्चे पर बंकर में आ जाती है।

प्रथम विश्व युद्ध जुलाई 1914 से नवम्बर 1918 तक चला। फिल्म का घटनाक्रम 1914 के क्रिसमस की पूर्व संध्या के समय का है। फ्रांस और जर्मनी की सीमा पर स्थित अलसास (फ्रांस) शहर में जर्मन सेना पर हमला करने के लिए फ्रांस और स्कॉटलैंड की संयुक्त सेनाएं बढ़ रही थीं। दोनों सेनाओं के बीच केवल कुछ सौ फीट का फासला रह गया था। बर्फ से ढकी ठंडी रात (24 दिसम्बर) में दोनों सेनाएं 'नो मैन्स लैंड' के दोनों ओर आकर खड़ी हो जाती हैं।

सेनाओं के यहां पहुंचने तक पूरी दुनिया में क्रिसमस के जश्न की शुरुआत हो चुकी होती है। जर्मन मोर्चे पर सैन्य अधिकारियों के आग्रह पर निकोलस एवं आना क्रिसमस कैरल्स गाते हैं। उनकी आवाज पर नो मैन्स लैंड की दूसरी ओर से स्कॉटेश सैनिक पुंगी बजाने लगते हैं। धीरे-धीरे दोनों ओर के सैनिक निकोलस के साथ सुर में सुर मिलाने लगते हैं और यह क्रिसमस गीत एक समूह गान में परिवर्तित हो जाता है। देखते ही देखते सीमा के दोनों ओर उत्सव का माहौल हो जाता है। सभी सैनिक क्रिसमस के त्योहार और अपने परिवारजनों को याद कर भावुक हो जाते हैं। आनंद और उल्लास के अतिरेक में वे सब गीत गाते हुए, पुंगी बजाते हुए नो मैन्स लैंड को फांदते हुए आकर एक-दूसरे से गले मिलने लगते हैं।

तीनों सेनाओं के कमांडर यह दृश्य देखकर 24 घंटे के 'क्रिसमस युद्ध विराम' पर सहमत हो जाते हैं। यह निर्णय सुनते ही सभी सैनिकों का उत्साह चरम पर पहुंच जाता है। वे सारी दुश्मनी, राष्ट्रीयता, नस्लवाद भुलाकर एक-दूसरे को बधाइयां देते हैं। चॉकलेट और अन्य खाने-पीने की सामग्री साझा करते हैं और अपने परिजनों के फोटो एक-दूसरे को दिखाते हैं तथा क्रिसमस के जश्न में डूब जाते हैं।

हालांकि तीनों सेनाओं के कमांडर अच्छी तरह जानते हैं कि युद्ध के चरम पर इस तरह दुश्मन के साथ मिलकर त्योहार मनाने के कितने गंभीर परिणाम हो सकते हैं, जिसमें कोर्ट मार्शल अथवा मृत्युदंड का सामना भी करना पड़ सकता है। किंतु वे किसी भी कीमत पर इस आनंद और सुख से वंचित नहीं होना चाहते।

अगले दिन क्रिसमस की सुबह सभी सेनाओं के अफसर साथ में कॉफी पीते हैं और दोनों ओर के मृत सैनिकों का क्रिसमस के दिन अंतिम संस्कार करने का निश्चय करते हैं। फिर वे नो मैन्स लैंड में फुटबॉल खेलते हैं। युद्ध विराम की

अवधि समाप्त होने पर सभी कमांडर अपने सैनिकों को वापस अपनी पोजिशन पर जाने का निर्देश देते हैं और अपने आप को सजा भुगतने के लिए मानसिक रूप से तैयार करते हैं। खुशी के साथ बिताये ये कुछ घंटे प्रत्येक सैनिक के मन में सवाल उठाते हैं कि आखिर हम लड़ क्यों रहे हैं? क्यों एक-दूसरे का खून कर रहे हैं? सामने वाले ने हमारा क्या बिगाड़ा है? युद्ध कितना कठिन हो जाता है जब आपका दुश्मन चेहराविहीन नहीं रह जाता।

यह फिल्म युद्ध के पागलपन पर सवाल उठाती है। पूरी फिल्म यह दर्शाती है कि युद्ध हमेशा राजनेताओं के दिमाग में जन्म लेते हैं। सेनापति युद्ध की योजना बनाकर मैदान में सिपाहियों को लड़ने-मरने के लिए भेज देते हैं। सिपाही यह तक नहीं जानते कि वे क्यों लड़ रहे हैं और इसमें जीत-हार का मतलब क्या होगा। युद्ध भले ही छोटे

क्रिसमस ट्री की मान्यताएं

क्रिसमस पर क्रिसमस ट्री का अपना ही महत्व है। क्रिसमस ट्री नामक पेड़ प्राचीन समय से ही मिस्र, चीन और इजरायल में होता रहा है और इसके साथ अनेक प्राचीन रीति-रिवाज भी जुड़ते गए। सामान्य रूप से विश्व के यूरोपीय देशों बेल्जियम, नार्वे, स्वीडन तथा हॉलैण्ड में तो भूत-प्रेत भगाने के लिए इसकी टहनियों का उपयोग किया जाता था। ऐसे स्थानों पर टहनियां रोप दी जाती थीं और यह मान्यता बन गई थी कि इसकी टहनियां रोपने से भूत-प्रेत नहीं आएंगे।

यूरोपीय देशों में तो क्रिसमस पर क्रिसमस ट्री लगाना अनिवार्य परंपरा-सी बन गई है। यदि प्राकृतिक वृक्ष न हो तो फिर नकली बनाए पेड़ खरीद कर घरों में लगाकर सजाए जाते हैं। आज बाजार में क्रिसमस ट्री के अनेक नकली वृक्ष मिलने लगे हैं। संपन्न वर्ग के लोग तो क्रिसमस ट्री को सोने-चांदी से भी सजाने लगे हैं।

एक मान्यता के अनुसार क्रिसमस ट्री को क्रिसमस पर सजाने की परंपरा जर्मनी से प्रारंभ हुई। यहां से 19वीं सदी में यह परंपरा इंगलैण्ड में भी पहुंच गई, जहां से सारे विश्व में यह प्रचलन में आ गई। अमेरिका में इसे जर्मनी के अप्रवासियों ने प्रारंभ किया था। वैसे क्रिसमस ट्री की कहानी प्रभु यीशु मसीह के जन्म से है। जब उनका जन्म हुआ था, तब उनके माता-पिता मरियम व जोसफ को बधाई देने वालों ने, जिनमें स्वर्गदूत भी थे, एक सदाबहार फर को सितारों से रोशन किया था। तब से ही सदाबहार फर के पेड़ को क्रिसमस ट्री के रूप में मान्यता मिली।

क्रिसमस ट्री को लेकर कई और मान्यताएं भी हैं। प्राचीन रोम में एक मान्यता के अनुसार इस वृक्ष की एक छोटी शाखा को एक शिशु ने भोजन और आवास के बदले कुछ आदिवासियों को दी थी। ऐसा माना जाता है कि वह शिशु और कोई नहीं, स्वयं प्रभु यीशु मसीह थे। घरों में क्रिसमस ट्री लगाकर लोग क्रिसमस पर अच्छे फलों की प्राप्ति की कामना करते हैं।

क्रिसमस ट्री को इंग्लैण्ड में लोग किसी के जन्मदिन, विवाह या किसी परिजन की मृत्यु हो जाने पर भी उसकी स्मृति में रोपते हैं। वे कामना करते हैं कि इससे पृथ्वी हमेशा ही हरी-भरी रहे।

प्राचीन इतिहास और कुछ कथाओं से यह भी पता चला है कि क्रिसमस ट्री का वृक्ष अदन के बाग में भी लगा था।

जब हव्वा ने उस वृक्ष के फल को तोड़ा और खाया, जिसे परमेश्वर ने खाने से मना किया था। तब इस वृक्ष की वृद्धि रुक गई और पत्तियां सिकुड़ कर नुकीली बन गईं। कहते हैं कि इस पेड़ की वृद्धि उस समय तक नहीं हुई, जब तक प्रभु यीशु का जन्म नहीं हुआ। उसके बाद यह वृक्ष बढ़ने लगा।

क्रिसमस ट्री के बारे में एक और कथा है कि एक बुढ़िया अपने घर देवदार के वृक्ष की एक शाखा ले आई और उसे घर में लगा दिया। लेकिन उस पर मकड़ी ने अपने जाले बना लिए। जब प्रभु यीशु का जन्म हुआ था, तब वे जाले सोने के तार में बदल गए थे। इस तरह के स□बन्ध में अनेक मान्यताएं, कहानियां एवं इतिहास है। कहा जाता है, पहले यूरोप में 'यूल' नामक पर्व मनाया जाता था, जो अब बड़ा दिन के उत्सव में घुल-मिल गया है। इस त्योहार में पेड़ों को खूब सजाया जाता था। स□भवतः इसी से क्रिसमस ट्री की प्रथा चल पड़ी।

वैसे क्रिसमस ट्री की पर□परा के पीछे ल□बी कहानी है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जगमगाते-चमकते क्रिसमस का स□बन्ध मार्टिन लूथर से था। मार्टिन लूथर ने छोटे-छोटे हरे-भरे पौधों पर जलती हुई मोमब□ी लगा दी, ताकि लोगों को स्वर्ग की रोशनी की ओर प्रेरित कर सके। यह प्रतीक था स्वर्ग की रोशनी का, जो पहले क्रिसमस के अवसर पर बेथलेहम में दिखाई दी थी। यह पर□परा जर्मनी में थी।

इसे बाद में ब्रिटेन लाया गया, जो राजघराने में लोकप्रिय हो गया। जर्मनी में देवदार के पेड़ को गुलाब के फूल, सेब और रंगीन पेपर से सजाया जाता था। प्रोटेस्टेंट सुधारवादी मार्टिन लूथर ने पहली बार इन्हें मोमबा□ियों से सजाया।

वर्ष 1834 में प्रिंस अल्बर्ट ने पहली बार राजघराने में क्रिसमस ट्री सजाया, जिसे नार्वे की महारानी ने प्रिंस को उपहार स्वरूप दिया था। कुछ लोगों का कहना है कि ईसा पूर्व से ही क्रिसमस ट्री की पर□परा कायम थी।

मिस्र के लोग शरद ऋतु में सबसे छोटे दिन का त्योहार मनाते थे। इस दिन वे खजूर के प□ी अपने घरों में लाते थे, जो जीवन का मृत्यु पर विजय का प्रतीक था। रोम के निवासी शनि त्योहार के दिन हरे पेड़ की शाखाओं को हाथ में लेकर ऊपर उठाते थे और त्योहार में शामिल होते थे।

क्रिसमस ट्री लगाने की शुरुआत ब्रिटेन के संत बोनीफस ने सातवीं शता□दी में की। उन्होंने त्रियक परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की प्रतीकात्मकता दर्शाने के लिये त्रिकोणीय लकड़ी को लोगों के सामने रखा। यह लकड़ी फर वृक्ष की थी। सदाबहार फर वृक्ष को ईसा पूर्व भी पवित्र माना जाता था।

मार्डन क्रिसमस ट्री की उत्पति जर्मनी से 16वीं शता□दी में हुई। उस समय वहां आदम और हौवा के नाटक में स्टेज पर फर का पेड़ लगाया जाता था। स्टेज पर एक पिरामिड भी रखा जाता था। जिसे हरे प□ी, मोमबा□ियों से सजाया जाता था। इसके सबसे ऊपर एक सितारा लगाया जाता था। बाद में 16वीं शता□दी में फर का पेड़ और पिरामिड एक हो गये और इसका नाम हो गया, क्रिसमस ट्री।

18वीं शता□दी में क्रिसमस बेहद लोकप्रिय हुआ। बाद में यह इंग्लैण्ड में लोकप्रिय हुआ। उन्नीसवीं सदी में क्रिसमस ट्री उ□ारी अमेरिका में आया और यहीं से इस पर□परा ने पूरी दुनिया में जगह बना ली। आज क्रिसमस ट्री का अच्छा बाजार है। वर्तमान संदर्भ में क्रिसमस ट्री की पर□परा पेड़ों के संरक्षण और प्रदूषणमु□त

क्रिसमस में कैंडिल का भी काफी मह□व है। कैंडिल की कहानी कुछ यूं है। एक हजार वर्ष पहले ऑस्ट्रेलिया के एक गांव में छोटा परिवार रहता था। पति और पत्नी रात के अंधेरे में आने-जाने वालों के लिए बाहर दरवाजे पर प्रतिदिन एक कैंडिल जलाकर रख देते थे। दूसरे देश से युद्ध छिड़ा और समाप्त होने के बाद किसी ने गांव में सूचना दी कि युद्ध समाप्त हो गया। पूरे गांव में लोगों ने अपने घरों के बाहर कैंडिल जलाई। उस दिन 24 दिस□बर की रात थी। इसको क्रिसमस से जोड़ दिया गया।

क्रिसमस पर सजावट

क्रिसमस पर सभी लोग अपने घर की सजावट सबसे अच्छी करने की कोशिश करते हैं। क्रिसमस की सजावट में कई परंपरावादी चीजें भी होती है जो घर को और भी ज्यादा डेकोरेटेड और खूबसूरत बनाती हैं।

- क्रिसमस के दिनों में लाल रंग का उपयोग सबसे ज्यादा किया जाता है, जो सर्दी के दिनों में गर्मी का अहसास देता है। इसके अलावा माहौल में भी गर्माहट ला देता है। ऐसे ही कई अन्य परंपरावादी तरीके हैं जिनसे हम क्रिसमस के दौरान घर को सजा सकते हैं।
- क्रिसमस ट्री सजाए बगैर क्रिसमस की सजावट पूरी नहीं हो सकती। इसलिए इसको रिबन और सिल्वर रंग के बबल से सजाएं।
- डाइनिंग टेबल पर फलों को खूबसूरत फ्रूट बास्केट में सजाएं। आप चाहें तो फलों का पिरामिड भी बना सकते हैं। क्रिसमस लुक देने के लिए संतरों का इस्तेमाल ज्यादा करें।

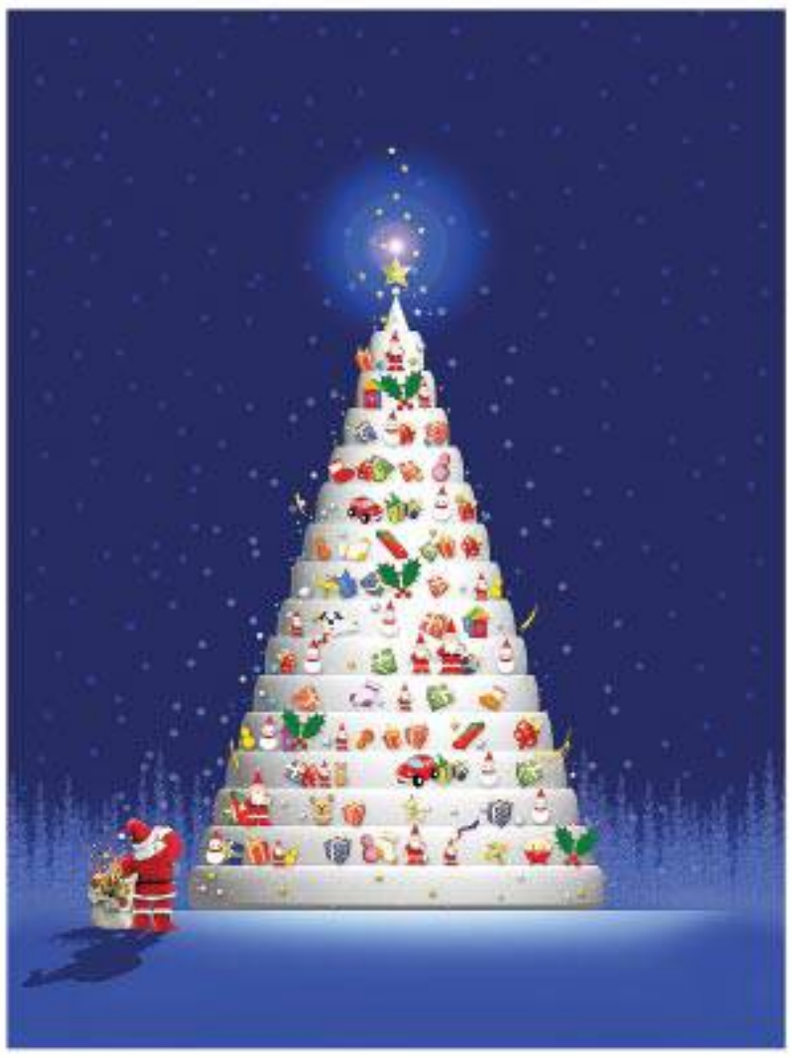

- विटोरियन काल से, क्रिसमस के दौरान पेपर डेकोरेशन सबसे ज्यादा की जाती है। इसमें पूरे घर को पेपर की स्टाइलिश कटिंग से सजाया जाता है।
- हरी माला और लाल रिबन का इस्तेमाल करते हुए बंदनवार बना सकते हैं जो माहौल में गर्माहट भरेगा और एक ट्रेडिशनल लुक भी देगा।
- क्रिसमस रोशनियों का त्योहार है। इस दिन ड्राइंगरूम में सुंदर-सा झूमर लगाएं और साथ ही डेकोरेटिव लाइट्स भी लगाएं। इससे न सिर्फ रूम सुंदर दिखेगा, बल्कि उसमें रुमानियत भी भर जाएगी।
- डार्क कलर के कुशन व कवर इस्तेमाल करें। डार्क शेड के पर्दे लगाएं। कालीन बिछाएं और इस तरह

पुराने क्रिसमस ट्री को ऐसे करें साफ

सदाबहार क्रिसमस वृक्ष डगलस, बालसम या फर का पौधा होता है जिस पर क्रिसमस के दिन सजावट की जाती है। अनुमानतः इस प्रथा की शुरुआत प्राचीन काल में मिस्रवासियों, चीनियों या हिब्रू लोगों ने की थी। पर आजकल तो शहरों में क्रिसमस ट्री बाजारों से ही खरीद लिया जाता है। कामकाजी लोगों को क्रिसमस पर एक दिन की छुट्टी मिलती है, इसलिये वे नकली क्रिसमस ट्री या फिर आर्टिफिशियल क्रिसमस ट्री खरीद कर उसे ही सजा कर सेलिब्रेट करते हैं। पर अगर आपके घर पर पहले से ही पुराना क्रिसमस ट्री रखा है तो उसे फेंकने के बजाए दुबारा साफ कर इस्तेमाल कर लीजिये। हम आपको बताते हैं कि इसे कैसे साफ करना होता है।

- रूई की बॉल्स को साबुन के घोल में डुबो लें और फिर उससे क्रिसमस ट्री को साफ करें। इसके बाद साफ कपड़े से पोंछना न भूलें।
- अगर आपका क्रिसमस ट्री बहुत विशाल है तो उसे वैयूम लीनर से ही साफ करें। सफाई के दौरान ध्यान दें कि उसमें से बहुत तेज हवा न आ रही हो। अन्यथा क्रिसमस ट्री के पुर्जे हिल सकते हैं। पेड़ के ऊपर से हवा नीचे की ओर फेंकें, जिससे मिट्टी नीचे की ओर आ गिरे।
- साबुन का घोल बाल्टी में घोलें। फिर उसमें कॉटन का कपड़ा डुबोएं और निचोड़ें। इस कपड़े से क्रिसमस ट्री की पत्तियों और तने को

क्रिसमस की डिक्शनरी

प्रतीकों के जरिए बात कहने की परंपरा बहुत पुरानी है। भाषा के विकास से पहले अपनी बात प्रतीकों से ही समझायी जाती थी। क्रिसमस में भी बहुत सारी प्रतीकात्मक चीजें हैं। आइए जानते हैं इनके क्या हैं मायने...

सेंटा □लॉज : क्रिसमस पर बच्चों को जिस श□स का बेसब्री से इंतजार रहता है, वो है सेंटा □लॉज। सेंटा □लॉज वास्तव में संत निकोलस की कहानी से प्रेरित पात्र है। प्राचीन काल में संत निकोलस नाम के एक संत थे जो गरीब बच्चों और नाविकों की रक्षा करते थे। सेंटा □लॉज नाम निकोलस के डच नाम सिंटर □लास का अपभ्रंश है।

रीथ (पुष्पहार) : क्रिसमस पर दरवाजे पर एवरग्रीन रीथ रिंग (फूलों की माला) को टांगने की प्रथा प्राचीन समय में रोम में शुरू की गई थी। यह विजय और उमंग का प्रतीक होती थी। क्रिसमस रीथ सर्दी के मौसम में जीवन को शां□ित देने का प्रतीक है। दरवाजे पर रीथ टांगने का मतलब है कि आने वाले वर्ष में सौभाग्य और ढेर सारी खुशियां घर के अंदर आये।

क्रिसमस ट्रीः क्रिसमस अधूरा है बिना क्रिसमस ट्री के। दुनियाभर में क्रिसमस पर सभी लोग तरह-तरह से क्रिसमस ट्री को सजाते हैं। प्राचीन समय में मिस्र में क्रिसमस ट्री जैसे लगने वाले पाम के पेड़ के आस-पास इकट्ठा होकर सर्दी की छुट्टियां मनाते थे। इसके अलावा जर्मनी में लोग अपनी घर में सदा हरा रहने वाले इस पेड़ को रखना अच्छा मानते थे और इसे फल, रंगीन पेपर की स्ट्रिप्स, कैंडी आदि से सजाते थे।

स्टॉकिंग्स (मोजे): उपहारों और टॉफियों से भरा लाल और सफेद रंग का मोजा क्रिसमस का खास आकर्षण होता है। इसके पीछे एक कहानी है कि एक गरीब आदमी की तीन बेटियां थीं। उसकी गरीबी और उन प्यारी-प्यारी लड़कियों पर संत निकोलस को बहुत दया आई। उन्होंने एक रात सोने के सि□कों से भरा बैग लिया और उस आदमी के घर जाकर गहरी नींद में सो रही उसकी तीनों बेटियों के मोजों में ढेर सारे सोने के सि□के डाल दिए। तब से लेकर आज तक क्रिसमस पर स्टॉकिंग्स में गि□ट रखने की परंपरा चली आ रही है।

द नटिविटी : क्रिसमस पर अ□सर झांकी देखने को मिलती है कि छोटी-सी झोंपड़ी में मदर मैरी बैठी हुई है। उनके आस-पास बकरी और गाय आदि जानवर हैं और गोदी में यीशू जीसस। यह झांकी एक तरह से क्रिसमस की पूरी कहानी बयां करती है। इसलिए क्रिसमस के दिन यह झांकी सजाने का प्रचलन है।

घंटियां : जिंगल बेल... गाना तो हम सभी बचपन से सुनते आ रहे हैं। क्रिसमस के दिन घंटियों का उपयोग दुष्ट आत्माओं को भगाने के लिए होता है। पारंपरिक तौर पर घंटियां खुशी प्रदर्शित करने का भी तरीका होती थीं जो जीसस के पैदा होने पर लोगों को मिली थी।

सितारे : क्रिसमस पर गोल्डन स्टार्स का भी अपना अलग मह□व है। क्रिसमस वाले दिन क्रिसमस ट्री पर सबसे ऊपर गोल्डन स्टार सजाया जाता है। स्टार क्रिसमस की कहानी का प्रतीक है, जिसके मुताबिक जब यीशू पैदा हुए थे तो उसी व□त एक तारा टूटकर गिरा था। उसी की याद में क्रिसमस ट्री को स्टार्स से सजाया जाता है।

स्नोमैन : स्नोमैन बनाने की पर□परा पुरानी लोक कला

क्यों → और → कैसे?

कुछ वृक्ष सदा हरे रहते हैं

अधिकतर वृक्ष ऐसे होते हैं, जिनमें एक विशेष मौसम के दौरान इनकी सारी पत्तियां धीरे-धीरे पीली होकर झड़ जाती हैं, और पूरा पेड़ लगभग पत्तियों से रहित हो जाता है। मौसम के बदलाव के साथ इनमें फिर से नई कोंपलें फूटती हैं। और कुछ ही समय में वृक्ष फिर से हरा-भरा हो जाता है। इसके विपरीत कुछ ऐसे वृक्ष भी होते हैं, जो वर्षभर सदैव एक जैसे बने रहते हैं। इन पर मौसम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

ऐसे वृक्ष ही सदा हरित या सदाबहार वृक्षों की श्रेणी में आते हैं। इनमें पाइन, फर, स्प्रेसेस आदि प्रमुख हैं। ऐसे

वृक्षों की पत्तियां बिल्कुल झड़ती ही न हों, ऐसा नहीं है। हां, दूसरे वृक्षों की तरह ये एक मौसम में एक ही बार सबकी सब नहीं झड़ती और चूंकि पुरानी पत्तियां झड़े, इससे पहले ही नई उनका स्थान लेने के लिए पूरी तरह तैयार हो चुकी होती हैं। इसलिए पेड़ की शक्ल-सूरत में कोई अंतर नहीं आता, और परिवर्तन मालूम नहीं पड़ता।

आप यदि कभी ऐसे इलाके से गुजरे जहां आपको इस तरह के सदाबहार पेड़ों को नजदीक से देखने का अवसर मिले, तो वहां जमीन पर बिखरी सूखी पत्तियां इस बात का सबूत दे देंगी कि ये वृक्ष भी पत्तियां बदलते हैं।

अकेला हाथ भी गांठ लगा ले!

सामग्री– साठ सेंटीमीटर लम्बी रस्सी का एक टुकड़ा।

शुरू करो– रस्सी के टुकड़े को दाहिने हाथ पर इस तरह लटकाओ ताकि इसे अंगूठे से दबाया जा सके। ऐसा करते समय यह देखना भी जरूरी है कि हाथ के पीछे की ओर लटकता हुआ रस्सी का भाग आगे वाले भाग से थोड़ा छोटा ही रहे।

अब अपनी छोटी अंगुली को इस स्थिति में ले आओ, जिससे रस्सी का अगला भाग

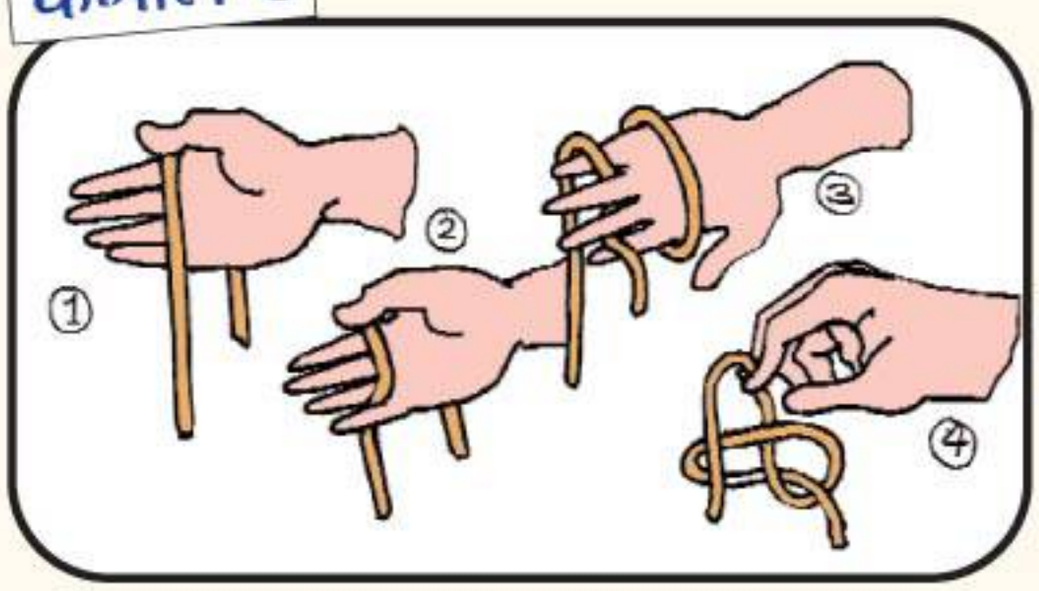

अनामिका और इसके बीच आ जाये। बस, इसके साथ ही हाथ को धीरे-धीरे दक्षिणावर्त घुमाना शुरू करो। ताकि तुम्हारा अंगूठा फर्श की ओर इशारा करने लगे।

ऐसा करते हुए तुम आसानी के साथ रस्सी का पिछला भाग अपनी तर्जनी ओर मध्यमा के बीच दबा सकते हो। बस, जैसे ही तुम ऐसा कर लेते हो तो समझ लो कि तुम्हारा काम पूरा हो गया। तर्जनी और मध्यमा के बीच रस्सी पर दबाव बनाते हुए तुम जैसे ही इसे झटका दोगे, रस्सी में जादू की तरह एक गांठ लगी नजर आने लगेगी। इसे देखकर दर्शक तो क्या पहली बार तुम खुद भी हैरान रह जाओगे कि एक हाथ से रस्सी में गांठ? और तुम्हारे मुंह से शायद निकल पड़े वाह!

-आइवर

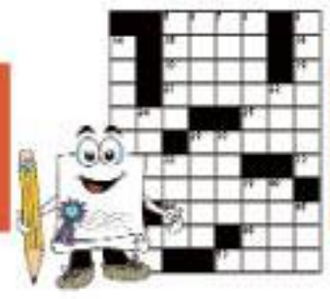

CrossWord PuzzLeS

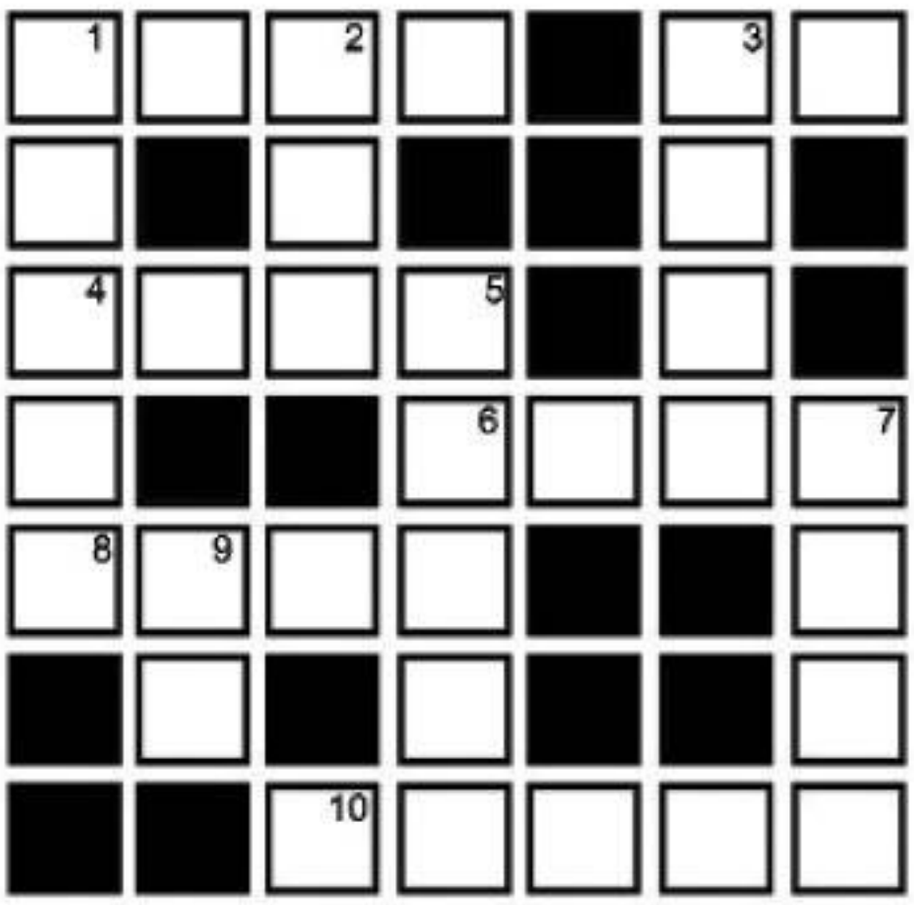

बाएं से दाएं

1. अनुचर, पीछे चलने वाला, अनुकरण करने वाला (4)।
3. ज्योति, प्रकाश, मदार या आक (2)।
4. किसी के शरीर पर वस्त्र, आभूषण आदि धारण कराना (4)।
6. एक तरह की मिठाई (3)।
8. गणेश, पार्वती का पुत्र (4)।
10. तैयार किया हुआ, रेडीमेड (2,3)।

ऊपर से नीचे

1. उपयोग न होना, जो किसी काम का न हो (5)।
2. अत्यधिक कष्ट (3)।
3. अजीर्ण, भोजन का नहीं पचना (4)।
5. किसी से मनचाहा काम कराना (2,3)।
7. बड़ी महिला के लिए आदरसूचक श□द (4)।
9. जीवन, प्राण (2)।

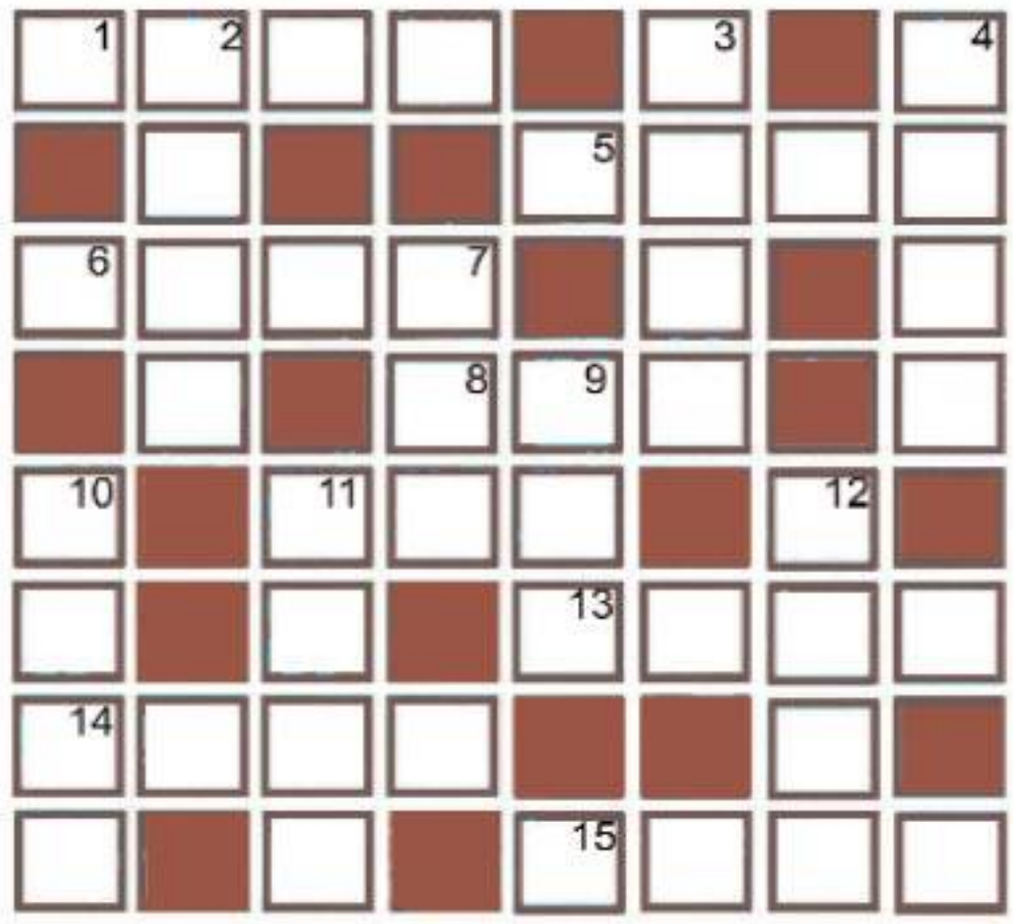

ACROSS

1.Exchange or deliver for money or its equivalent (4).

5. Expressed without speech (4).

6. Of a light grey (4).

8. The most global of Glaxo Smith Kline's gastrointestinal products (3).

11. Goddess of criminal rashness and its punishment (3).

13. The words of something written (4).

14. On their or its own initiative, without external prompting or explicit demand (4).

15. Penetrate or cut, as with a knife (4).

DOWN

2. Beat severely with a whip or rod (4).

3. A Japanese from of wrestling (4).

4. Any place of pain and turmoil (4).

7. Up to the present time (3).

9. Conclusive in a process or progression (3).

10. Having exactly identical identity or relevant properties (4).

11. Of or being the lowest female voice (4).

12. An opening that permits escape or release (4).

Answer

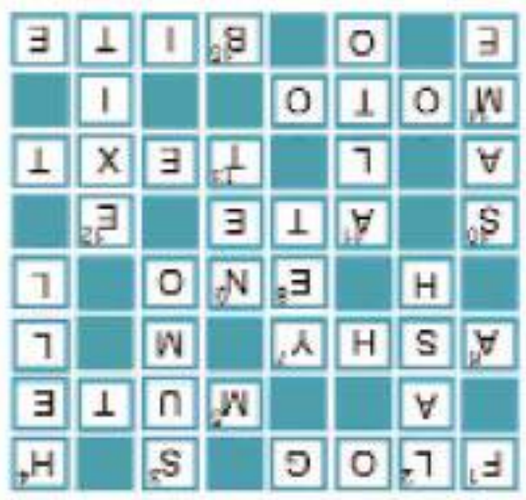

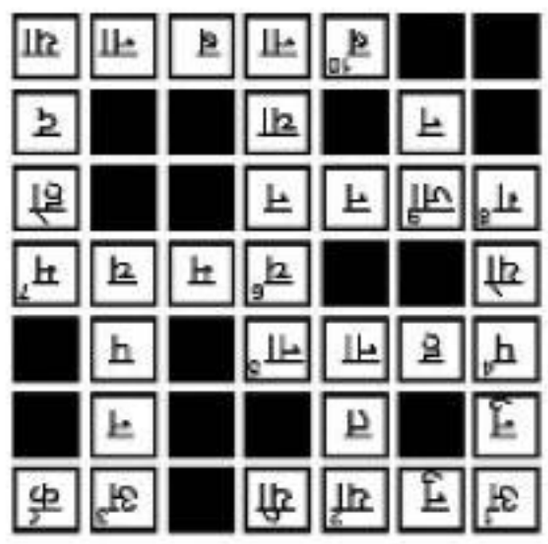

निकिता शर्मा
जयपुर (राज.)

मोईन खान
कोटा (राज.)

पल्लवी अरुण मंगल
ब्यावर (राज.)

मन में जगी उमंग

गर्मी गई सर्दी आयी
सबके मन में उमंग जगायी।
अब ताप से कष्ट नहीं मिलेगा
हर दिल में उत्साह जगेगा।

बोला सूरज धीरे से आके
क्यों झूठी करते हो बातें।
हमसे बच के नहीं जा पाओगे
ठंड में मेरे ही शरण आओगे।

–घनश्याम शरण श्रीवास्तव, पिरौना (उ.प्र.)

सर्वोत्तम

सबसे बड़ा भय- पाप
सबसे बड़ा सत्य- मृत्यु
सबसे पवित्र वस्तु- ज्ञान
सबसे सर्वोत्तम दिन- आज
सबसे सर्वोत्तम धन- संतोष
सबसे उपयुक्त समय- अभी
सबसे मूल्यवान वस्तु- समय

सबसे बड़ी भूल- समय की बर्बादी
सबसे बड़ी आवश्यकता- सामान्य ज्ञान
सबसे बड़ा विश्वासी मित्र- अपने दोनों हाथ
सबसे बड़ी देश सेवा- आदर्श नागरिक बनना

–अखिलेश राजभर, सायर, गाजीपुर

बालमंच

लिटिल स्टार

हिन्दी फीचर फिल्मों के माध्यम से अपने अभिनय के दम पर फैजान खान लिटिल स्टार बन गया है। फिल्म 'कृष 3' में वह ऋतिक रोशन जैसे सितारे के साथ अपने अभिनय की चमक बिखेरने में सफल रहा। वह सिल्वर स्क्रीन पर अपने हर सीन में प्रखर होकर उभरा। वह कहता है, 'कृष 3' में मेरा अभिनय सबने पसंद किया। आज में जहां भी जाता हूं, तुरंत पहचान लिया जाता हूं। दरअसल सफल फिल्म से बाल कलाकारों की प्रतिभा में चार चांद लग जाते हैं। 'कृष 3' मेरे लिए मील का पत्थर सिद्ध हुई है।'

फैजान बचपन से ही एक्टिंग करने लग गया था। स्कूल के समर कैम्प और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में वह लघु नाटकों में भाग लेने लगा। वहां उसे स्कूल टीचर्स ने बड़ा सहयोग किया। वह कहता है, 'टीचर्स डे हम क्यों मनाते हैं, अब समझ में आने लगा है। वे हमें किताबी ज्ञान ही नहीं देते, अपितु हमारी ढेर सारी प्रतिभा से हमारा परिचय करवाते हैं। हमारी विशेषताओं को नई उड़ान देते हैं। आज मैं फिल्म, सीरियल एवं मॉडलिंग कर रहा हूं। चाइल्ड सेलिब्रिटी के रूप में उभरा हूं तो इस पृष्ठभूमि में मेरे टीचर्स का बड़ा योगदान रहा है।'

फैजान खान

'कृष 3' मूवी में उसे यूं ही अवसर नहीं मिला। बल्कि इसके लिए उसे इंटरव्यूज, स्क्रीन टेस्ट और एक्टिंग वर्कशॉप के दौर से गुजरना पड़ा। 'कृष 3' की कामयाबी के बाद उसे 'रामलीला' में नायक रणवीर सिंह के भतीजे की लम्बी भूमिका ऑफर हुई। वह बताता है, 'गुजराती पृष्ठभूमि की फिल्म 'रामलीला' में मुझे बड़ा मजा आया। सैट पर नया परिवेश, भाषा, कॉस्ट्यूम देखने व समझने का मौका मिला। मुझे बड़ी-सी पगड़ी पहनकर अभिनय करना अच्छा लगा। रामलीला के बाद मेरे पास बड़े बैनर की फिल्मों के प्रस्ताव आने लगे हैं। अभी मैं मॉडलिंग में व्यस्त हूं।'

पढ़ाई में फैजान एक कदम आगे ही है। उसे नियमित रूप से स्कूल जाना पसंद है। वह 'ए' ग्रेड से उत्तीर्ण होता आ रहा है। वह आलू-परांठा और दही का शौकीन है। फुटबॉल उसका पसंदीदा खेल है। वह चित्रकला में भी रुचि रखता है।

–राजू कादरी रियाज

शब्द युग्म

आतप- धूप

अतप- ठण्डा

अचल- पर्वत, स्थिर

अंचल- आंचल

अमित- बहुत

अमीत- शत्रु

अर्चन- पूजा

अर्जन- संग्रह

अंश- भाग, हिस्सा

अंस- कन्धा

पर्यायवाची शब्द

अनुमान- अंदाज, कयास, अटकल
इंद्र- देवराज, सुरपति, पुरन्दर, देवेश
आयु- उम्र, वय, अवस्था, वयस, जिन्दगी
अश्व- घोड़ा, तुरंग, वाजी, हय, घोटक, सैन्धव
आकाश- नभ, अ□बर, गगन, आसमान, खगोल

ठगाये ठाकुर कहलाता है।
Man learns by experience.
उ□मीद पर दुनिया जीती है।
Hopes is the food of man.
विपत्□ा में कोई साथ नहीं देता।
No one worships the setting Sun.

Ball of foot- एड़ी
Ball of eye- आंख का गोलक या तारा
To open the ball- नृत्य आर□भ करना
To keep the ball rolling- काम जारी रखना

अंतर है

Naughty-शैतान
Knotty-कठिन
Patrol-पहरा लगाना
Petrol-पेट्रोल
Rain-वर्षा
Rein-लगाम
Peace-शांति
Piece-टुकड़ा

एक के तीन

Idiot-इडियट	बुद्धू	अतिमूढः
Wise-वाइज	बुद्धिमान	मतिमान्
Brainy-ब्रेनी	दिमागदार	तीव्रबुद्धिः
Proud-प्राउड	अहंकार	अभिमानम्

लोकोक्तियां

अपना हाथ जगन्नाथ- स्वयं का काम स्वयं द्वारा ही स□पन्न करना उपयु□त है।
अपना सोना खोटा तो परखैया का □या दोष- हम में ही कमजोरी हो तो बताने वाले का □या दोष।
अब पछताए □या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत-हानि हो जाने व हानि से बचने का अवसर चले जाने के बाद पश्चाताप करने से कोई लाभ नहीं।

उर्दू/ हिन्दी

आसान- सुगम, सरल, सहज
आली- विशाल, बड़ा, महान
इंजिमाम- जुड़ना, सटना, मिलना
आसमान- आकाश, गगन, अ□बर

One Word

A citizen of the world- **Cosmopolite.**
One who dies without a will- **Intestate.**
A man who is easily irritated- **Irritable.**
Inserting new matter in a book- **Interpolate.**

प्रस्तुतिः किशन शर्मा

- ऐसी जमीन जो अच्छी उत्पादक हो- **उर्वरा।**
- जिसके ऊपर किसी का उपकार हो- **उपकृत।**
- जो छाती के बल चलता हो (सांप आदि)- **उरग।**
- किसी के संबंध में कुछ लिखने/वर्णन करने योग्य- **उल्लेखनीय।**

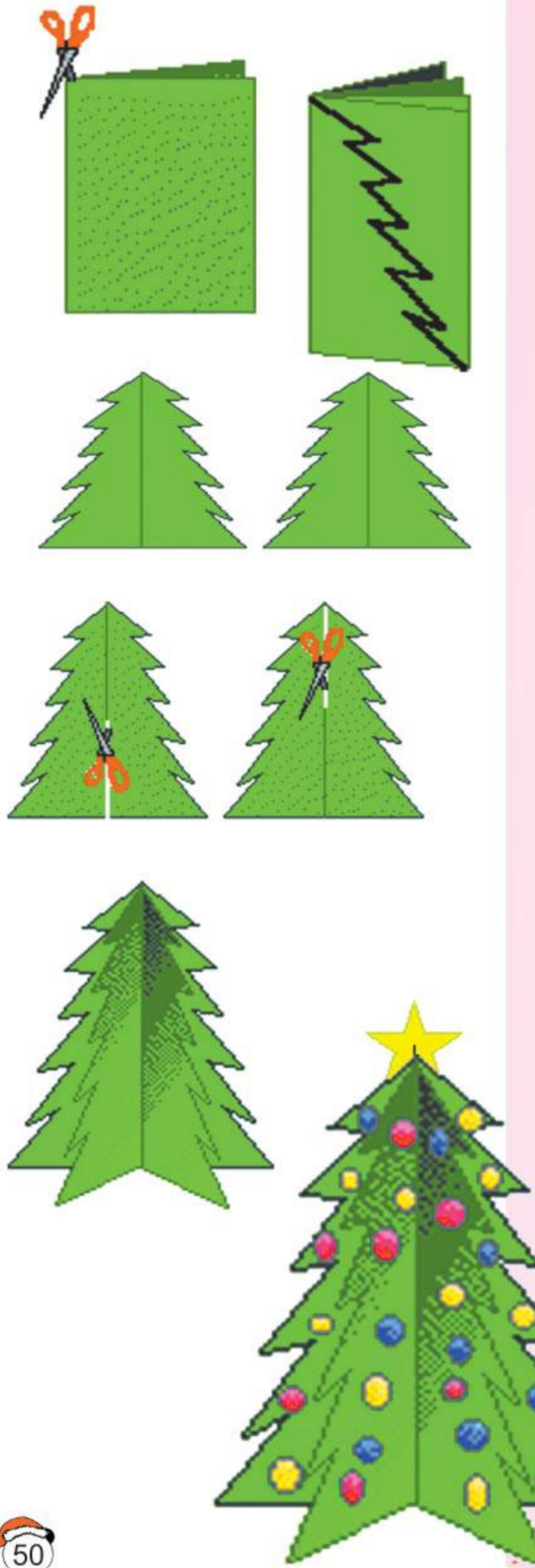

क्रिसमस ट्री

सामग्री : थर्माकोल शीट-2, पोस्टर कलर, ग्लिटर्स, फेविकोल, कटर, डेकोरेशन का सामान, जो आप करना चाहें।

विधि : थर्माकोल शीट पर पेंसिल से ट्री का आकार बना लें। दोनों को एक ही आकार में काट लें। पोस्टर कलर करने के पश्चात डेकोरेशन कर दें। जैसे लेस लगाना हो, ग्लिटर्स चिपका दीजिए। स्टोन, बॉल, छोटे-छोटे गिफ्ट लटका दीजिए।

सूखने के पश्चात बीच में एक लाइन खीचें तथा बिल्कुल सेंटर में निशान लगा दें। एक शीट को ऊपर से तथा दूसरी को नीचे से काट कर चीरा लगाएं। नीचे से कटी हुई शीट को ऊपर से कटी हुई शीट के ऊपर से अंदर डालें। जब दोनों कट आपस में मिल जाएं, तब ऊपर एक स्टार लगा दें। इसे किसी भी कोने में रखा जा सकता है।

art junction

सेंटा फेस

सामग्री : ड्रॉइंगशीट, फेविकोल, मार्कर पैन, कैंची, पोस्टर कलर।

विधि : ड्रॉइंगशीट को गोलाई में काटें। उस पर सेंटा का चेहरा बनाएं। मार्कर पैन से एक टोपी (कुप्पीनुमा) काटकर कैप पहना दें। पतली-पतली पट्टियां काटकर इन्हें गोल-गोल लपेट दें तथा सेंटा के दाढ़ी की जगह एक-एक पट्टी चिपकाते जाएं। सेंटा का फेस तैयार है। इसे दीवार पर चिपकाएं या डोरी बांधकर लटका दें।

माथापच्ची

	1		5		
	3	5	6		
5		3	2		
			3		
3	4	6			
	5	1		6	3

A. खाली चौखानों में ऐसी संख्या भरो जो एक लाइन में दोबारा न आए।

B. भालू को गुफा तक पहुंचाओ। उसे रास्ता नहीं मिल रहा।

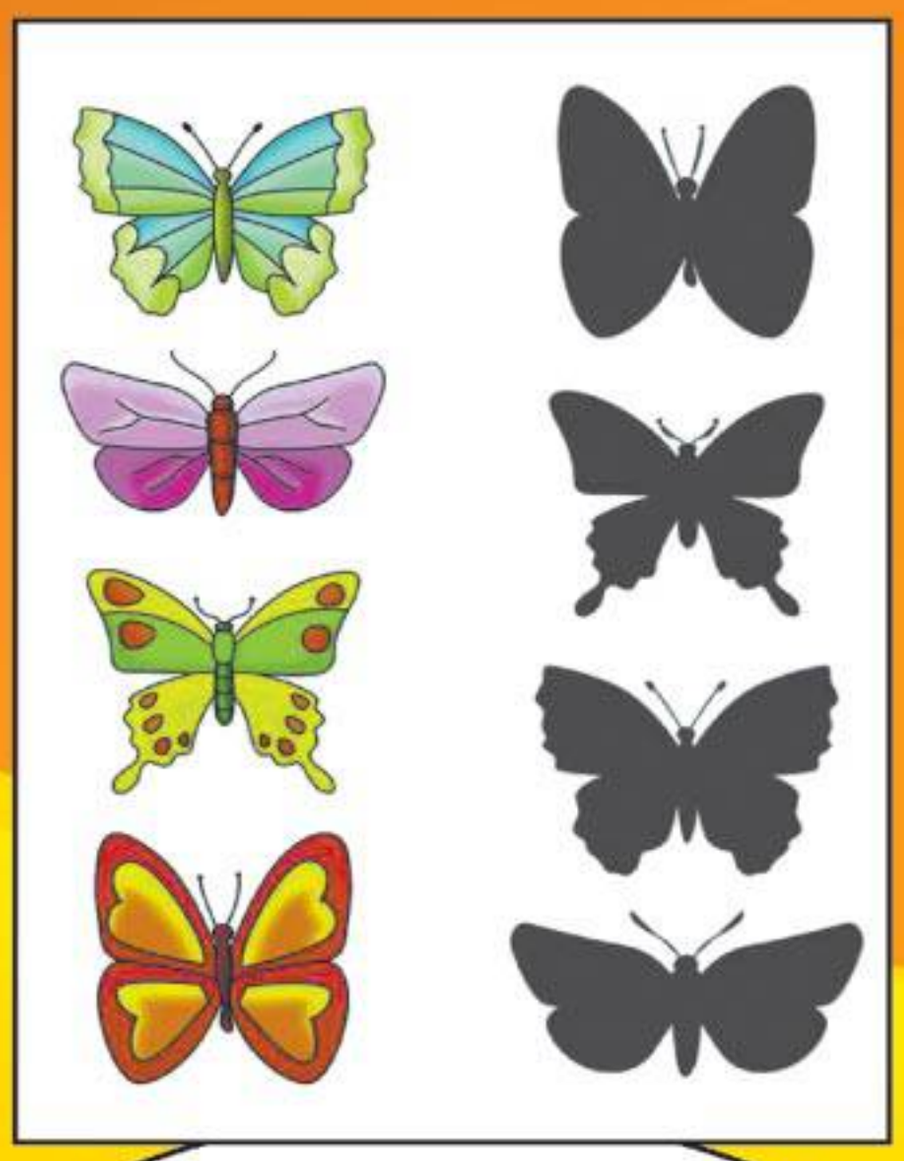

C. किस तितली का शेडो कौनसा है?

D. स्टेप बाय स्टेप चित्र बनाओ।

E. अंतर बताओ

उत्तर

1. तोड़े के फाल के उपर के बाल तोड़े है।
2. बिल्डिंग में खिड़की नहीं है।
3. नोट की बैप में डिजाइन नहीं है।
4. तोड़े की टाई नहीं है।
5. नोट की नुंबर उपाया है।
6. नोट की सांस्कृति की लाइट में बल्ब नहीं है।
7. तोड़े के जूते में पोंते नहीं है।
8. आसमान में 2 पक्षी उड़ रहे है।

F. कौन किस डिब्बे में पैक होगा?

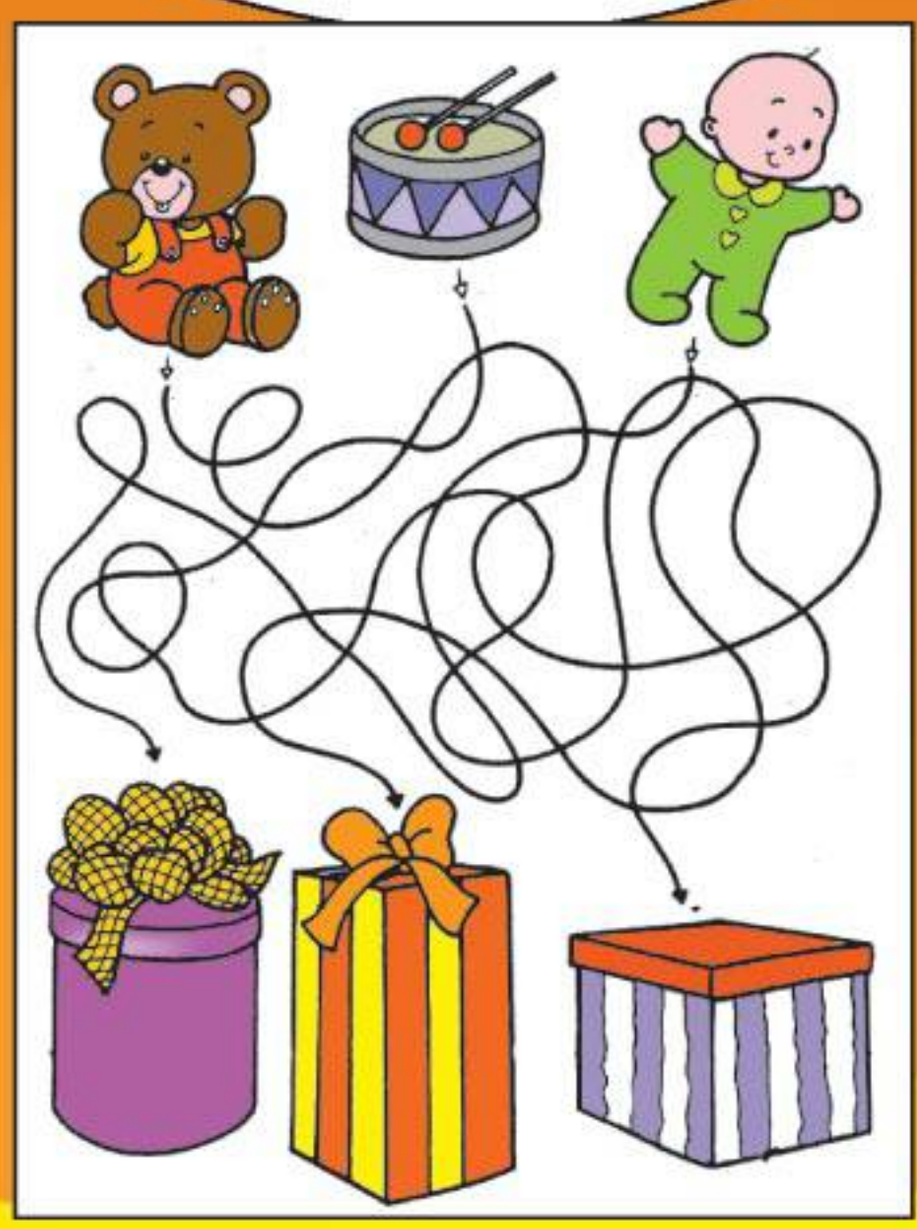

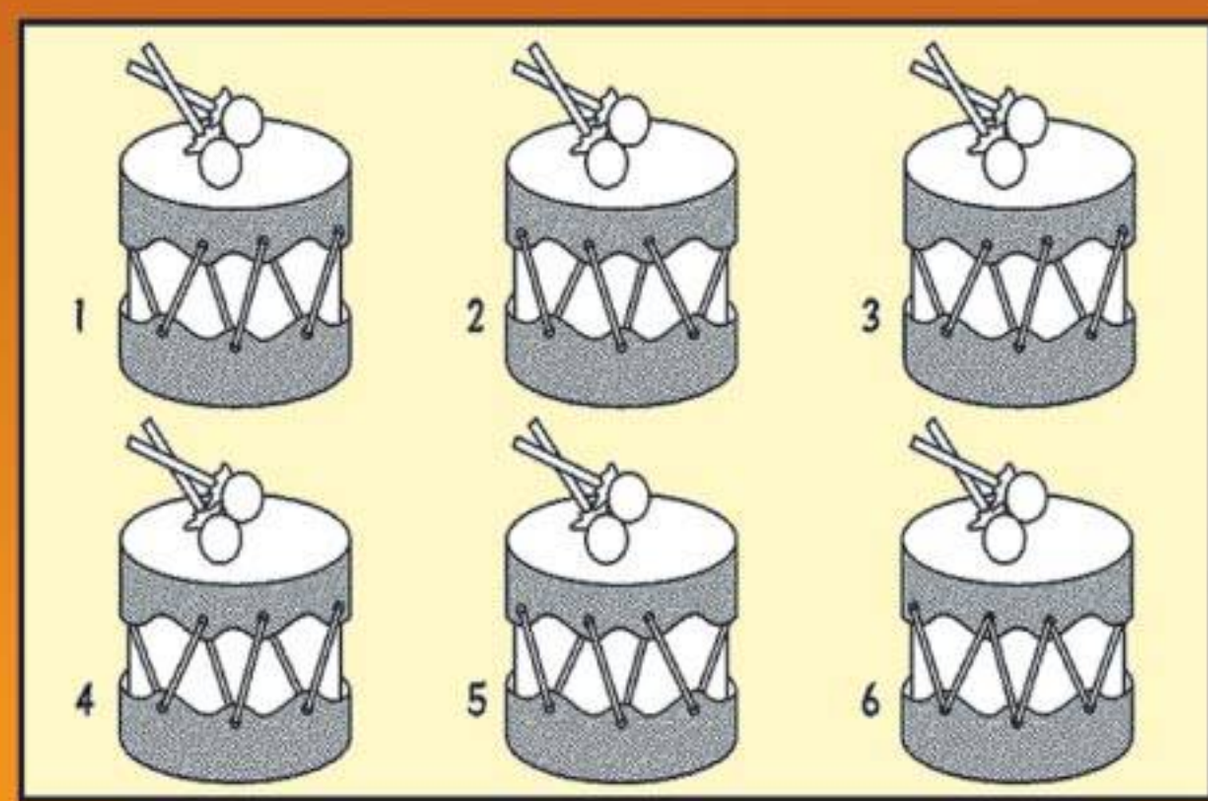

G. जोड़ा पहचानो।

1, 3

H. खाली गोलों में ऐसी संख्या भरें, जिनका तीनों तरफ से योग 17 हो।

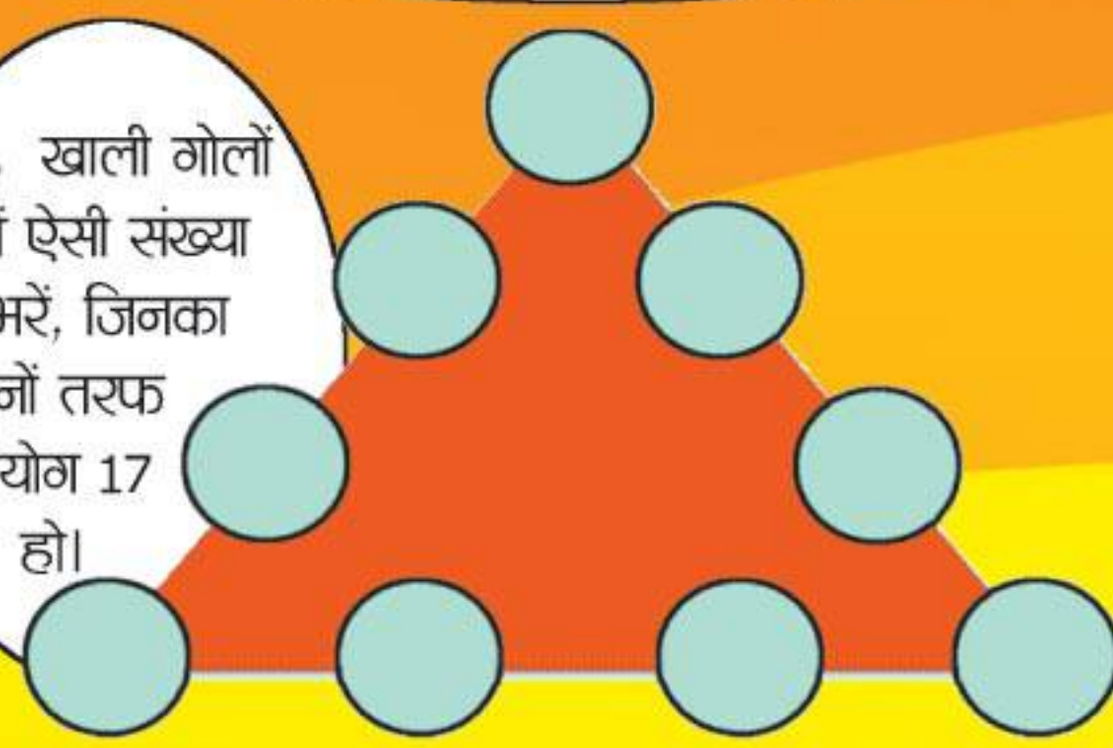

I. बच्चों के पास कितनी बिल्लियां हैं?

10 बिल्लियां

J. डॉट टू डॉट

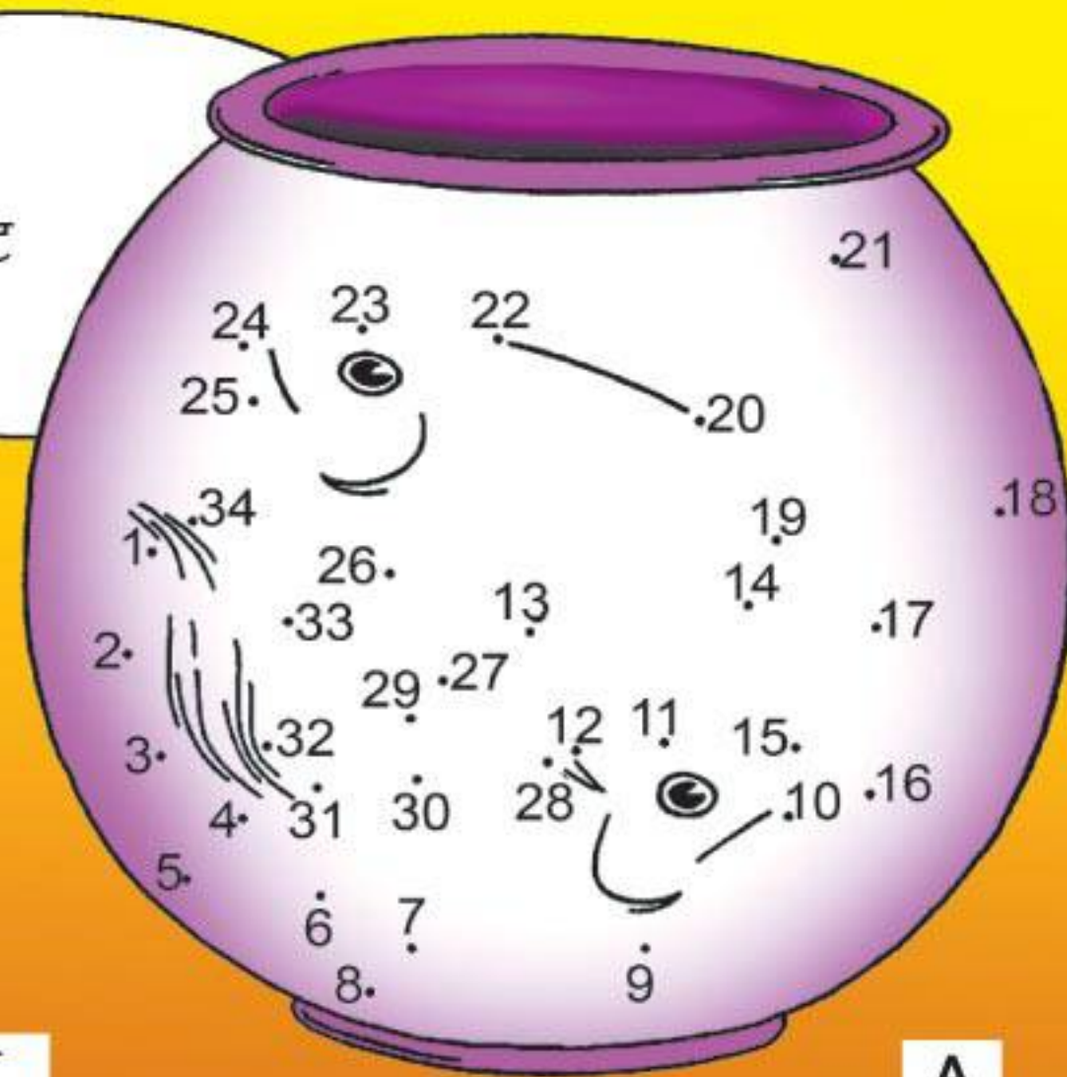

उत्तर

H

A

4	1	2	5	3	6
1	3	5	6	2	4
5	6	3	2	4	1
6	2	4	3	1	5
3	4	6	1	5	2
2	5	1	4	6	3

KidsClub

राहुल कुमार
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-बीकानेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

लवली सिंह
उम्र- 7 वर्ष
स्थान-जमालपुर गोगरी
रुचि-पढ़ना, खेलना।

सुनील कुमार सरोज
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-कालिन्दीपुरम
रुचि-पढ़ना, खेलना।

राहुल जैन
उम्र- 8 वर्ष
स्थान-झालरापाटन (राज.)
रुचि-पढ़ना, ड्रॉइंग।

नकुल व्यास
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-जोधपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

संजय कुमार पटेल
उम्र- 11 वर्ष
स्थान-कालिन्दीपुरम
रुचि-पढ़ना, घूमना।

मो. एहतशाम
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-खैरी बांका (बिहार)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

शिखर मिश्रा
उम्र- 10 वर्ष
स्थान-सूरत (गुजरात)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

तेजस प्रभात
उम्र- 11 वर्ष
स्थान-बिजनौर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

साक्षी सिंह
उम्र- 2 वर्ष
स्थान-जमालपुर गोगरी
रुचि- खेलना, टीवी।

राहुल कुमार
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-इनायतपुर (बिहार)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

अंशुमान प्रभात
उम्र- 6 वर्ष
स्थान-बिजनौर (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

विभूति भटनागर
उम्र- 5 वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-ड्रॉइंग, डांसिंग।

कमलेश विश्नोई
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-सांचौर (बिहार)
रुचि-पढ़ना, □यूजिक।

अंकुर
उम्र- 9 वर्ष
स्थान-समस्तीपुर (बिहार)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

उमेश स्वर्णकार
उम्र- 8 वर्ष
स्थान-उदयपुर (राज.)
रुचि-पेंटिंग, तैरना।

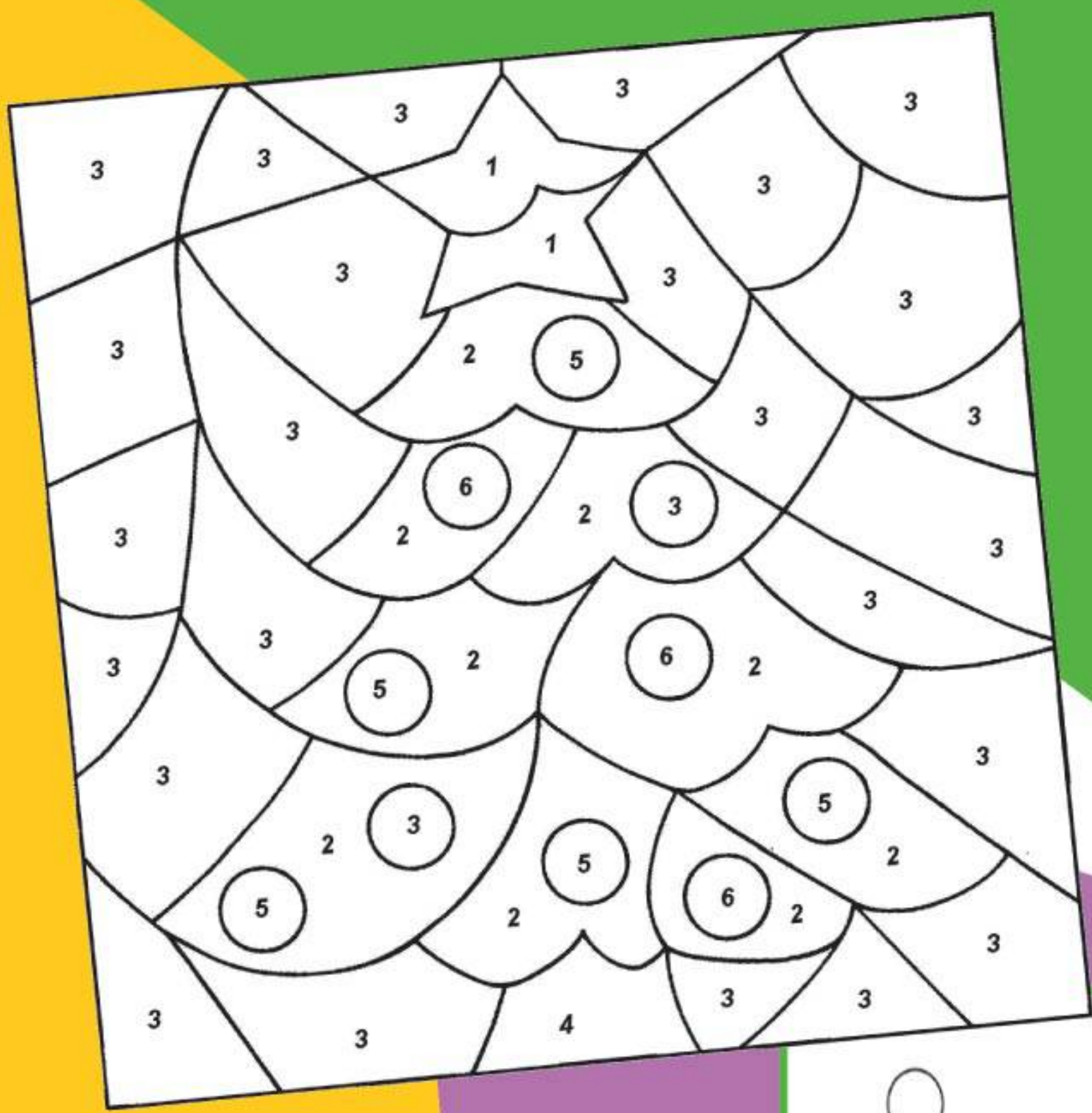

नंबर के आधार पर रंग भरो।

1 में पीला रंग
2 में हरा रंग
3 में आसमानी रंग
4 में भूरा रंग
5 में लाल रंग
6 में नारंगी रंग

स्टेप बाय स्टेप चित्र बनाओ।

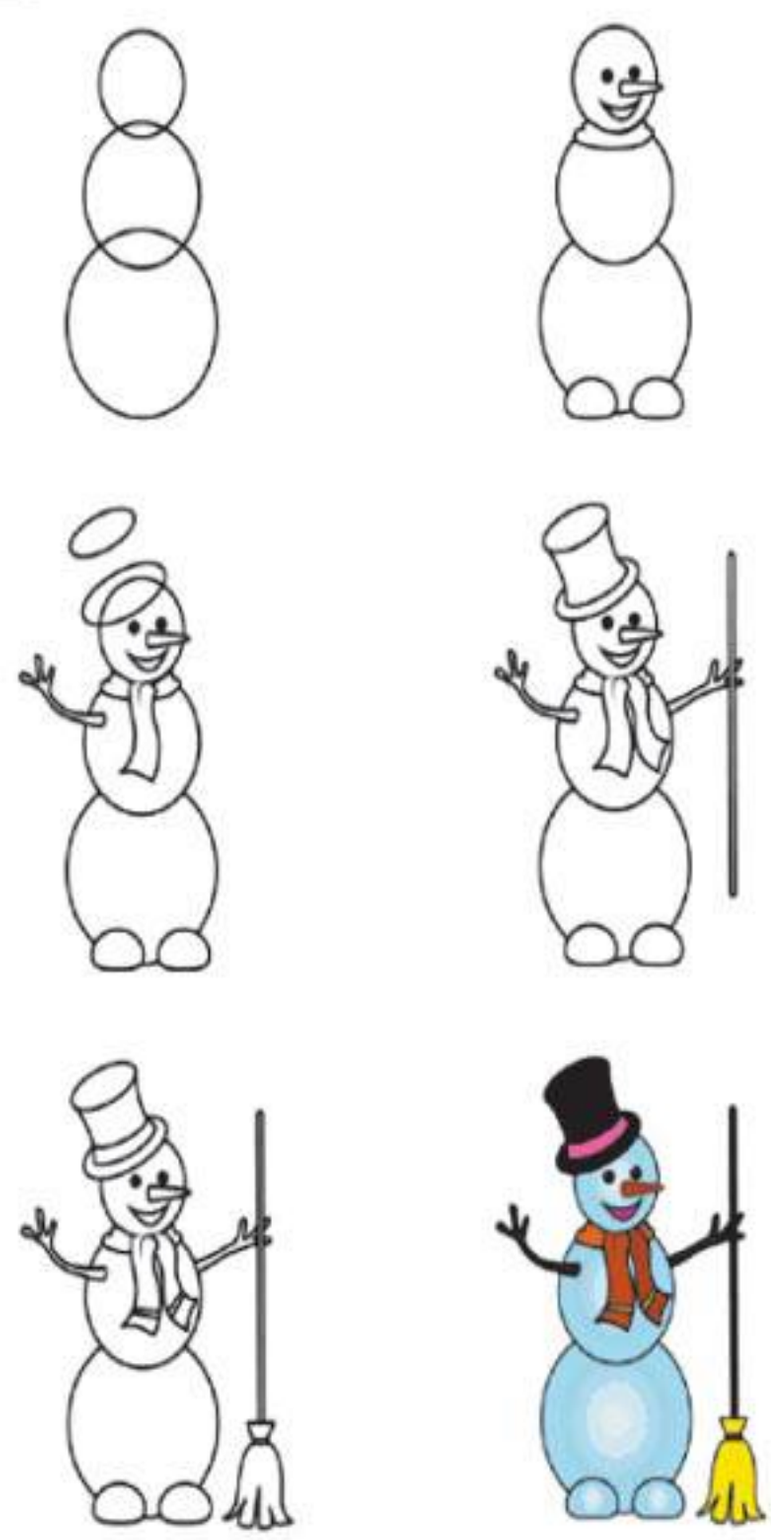

ठिकाना तो बताना

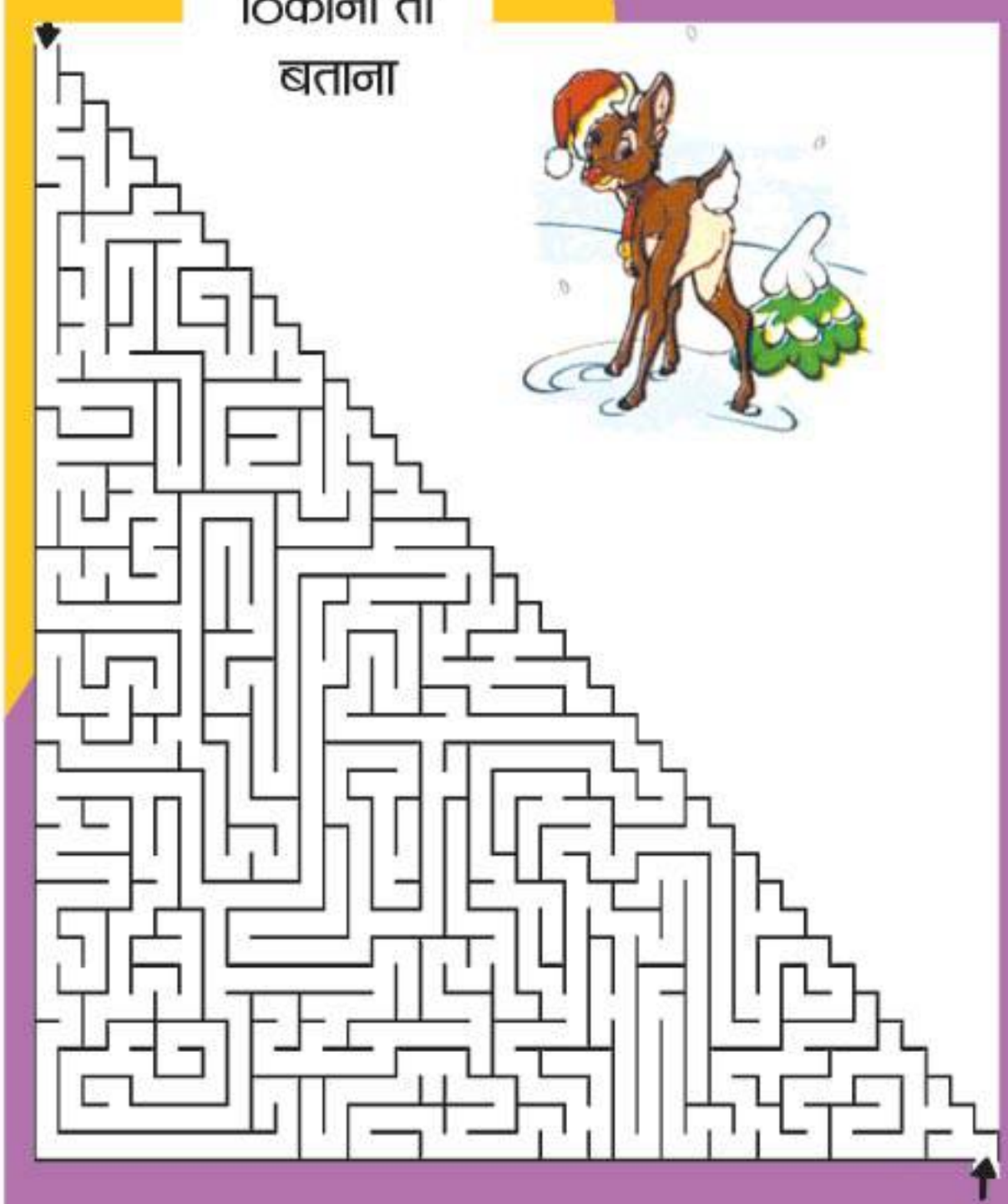

चीन के 10 सबसे खतरनाक सांप

चीन सिर्फ महान दीवार, जायंट पांडा और अलौकिक ड्रैगंस के लिए ही मशहूर नहीं है, बल्कि सबसे खतरनाक सरीसृप भी यहां पाए जाते हैं। एनिमल प्लेनेट के खोजी नाइजेल मार्वन निकलेंगे इस खोज पर और बनाएंगे चीन के दस सबसे खतरनाक सांपों की सूची-

मैगषैन वाइपर- यह दुनिया में इकलौती वाइपर प्रजाति है, जो वेनम थूंक सकती है। हालांकि वेनम थूंकने में वे कोबरा जितने सटीक नहीं होते हैं। इन सांपों की पूंछ का सिरा बेहद रंगीन होता है। जब वे छोटे होते हैं तो इसका इस्तेमाल शिकार को आकर्षित करने के लिए होता है। वे अपनी पूंछ को पत्तियों या घास के बीच में हिलाकर शिकार को आकर्षित करते हैं।

हंडेऊड पेसर- यह एक नुकीली नाक वाला वाइपर होता है। यह मध्यम आकार का सांप होता है, जो पांच फुट से जरा-सा लंबा हो सकता है। इसके जहर में शानदार एंटी-कॉग्युलैंट होता है, जो खून को पतला कर देता है। इसका इस्तेमाल दिल के दौरे से पीड़ित मरीजों के इलाज में होता है। इस सांप के डसने के दो घंटे के भीतर ही इसका एंटी-वेनम लेना जरूरी है, क्योंकि उसके बाद यह असरदार साबित नहीं होता और व्यक्ति की जान

काली धारियों वाला समुद्री करैत- यह सांप काफी मोटा और भारी होता है। करैत आमतौर पर शांत व दब्बू प्रकार के होते हैं और वे शायद ही किसी को डसने की कोशिश करते हैं। वे अपने जीवन का ज्यादातर समय समुद्र में बिताते हैं, लेकिन उन्हें पीने के लिए स्वच्छ पानी चाहिए होता है। वे सहवास करने, अंडे देने और अपना भोजन पचाने के लिए जमीन पर आते हैं। चपटे पैडल के कारण वे पानी के नीचे आसानी से तैर सकते हैं।

चीनी करैत- यह सांप एक मध्यम आकार का सांप होता है, जिसकी लंबाई 2 मीटर तक हो सकती है। ऑस्ट्रेलिया के बाहर यह जमीन पर रहने वाला सबसे जहरीला सांप होता है। वे अक्सर रात में सड़कों पर शिकार की तलाश में निकलते हैं। अक्सर उन्हें सड़क पर किसी कार के नीचे आकर मरी छिपकली को खाते देखा गया है। लेकिन आमतौर पर इनकी विशेषज्ञता अन्य सांपों का शिकार करना है। ये छोटे धारीदार करैतों का शिकार करते हैं और अपनी ही प्रजाति के सांप भी खाते हैं। यह प्रजाति आमतौर पर दक्षिण-पूर्वी एशिया, दक्षिण चीन और ताइवान के गर्म हिस्सों में पायी जाती है।

कोबरा- चीन में दो प्रकार के छोटे कोबरा होते हैं- मोनोकल और चीनी। इन दोनों के ही फन पर खूबसूरत निशान बने होते हैं। ये बेहद खतरनाक होते हैं और इनकी दृष्टि भी बहुत अच्छी होती है। ये किसानों के दोस्त होते हैं और चूहों का शिकार करते हैं। मोनोकल कोबरा शुरू से ही काफी जहरीले होते हैं। उनका जहर न्यूरोटॉक्सिक यानी स्नायु तंत्र पर प्रभाव डालने वाला होता है, जिससे व्यक्ति को लकवा हो सकता है।

रसेल्स वाइपर- इस सांप की फुंफकार पृथ्वी पर मौजूद सांपों में सबसे तेज होती है। इसे चेन सांप भी कहा जाता है, क्योंकि इसकी पीठ पर काले रंग के निशान होते हैं। छोटा रसैल वाइपर कीड़ों, बिच्छुओं, जमीन पर रहने वाले केकड़ों का भोजन करता है। जब यह बड़ा हो जाता है तो चूहों का शिकार करता है। इसके जहर का मानव शरीर पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, जिससे शरीर में खून के थक्के जम जाते हैं और गुर्दे भी बेकार हो जाते हैं। इसका जहर मानव की पीयूष ग्रंथि को भी प्रभावित कर सकता है, जिससे मनुष्यों की यौवन प्रक्रिया उलट जाती है।

हाबू- चीन में मौजूद सबसे आक्रामक सांपों में से एक प्रजाति यह है। कभी-कभार तो ये किसी चलती हुई वस्तु की परछाई पर ही हमला कर देते हैं। अन्य पिट वाइपरों की तरह इनकी आंख और नथुनों के बीच गर्मी पहचानने वाले पिट्स होते हैं, जिस वजह से ये अंधेरे में भी अपने शिकार को देख सकते हैं। इनके डसने से जख्म के आसपास खून के छाले पड़ जाते हैं।

साधारण समुद्री करैत- यह करैत की ज्यादा सुडौल प्रजाति है। इसके शरीर पर खूबसूरत नीले छल्ले बने होते हैं। काली धारी वाले समुद्री करैत के मुकाबले यह ज्यादा जहरीला होता है। लेकिन उसी की तरह यह भी कभी-कभार ही डसता है। शिकार करते समय यह सांप 6 घंटे तक पानी के नीचे रह सकता है। इन करैतों में मिलने वाला वेनम यानी जहर सबसे

मामुषी- एक बहुत खूबसूरत और छोटी पूंछ वाला सांप है। यह पिट वाइपर परिवार से ताल्लुक रखता है, □योंकि इसकी आंखों और नथुनों के बीच गर्मी महसूस करने वाले पिट होते हैं। आमतौर पर इन सांपों का आकार एक मीटर से अधिक नहीं होता है। ये उन क्षेत्रों में रहना ज्यादा पसंद करते हैं, जहां खेती-बाड़ी बहुत होती है। चीन के लोगों के अनुसार देश में सांप द्वारा डसे जाने के कुल मामलों में से 70 फीसदी के लिए यही प्रजाति जि□मेदार होती है। यूं तो ये सांप बड़ी सं□या में लोगों को डसते हैं, लेकिन ये छोटे सांप कभी-कभार ही जानलेवा साबित होते हैं।

चाइनीज बैंबू वाइपर- इस प्रजाति के सांप बहुत लोगों को डसते हैं, और छोटे से छोटे चिकित्सा केंद्र पर भी इस सांप के जहर का एंटी-वेनम मिल जाएगा।

यह सांप दिखने में बहुत खूबसूरत होता है, लेकिन इसका एक ही दंश इतना दर्द देता है कि उसका असर 24 घंटे तक रहता है। हालांकि ये सांप व्यवहार में आक्रामक नहीं होते हैं। ये ऊंचाइयों पर

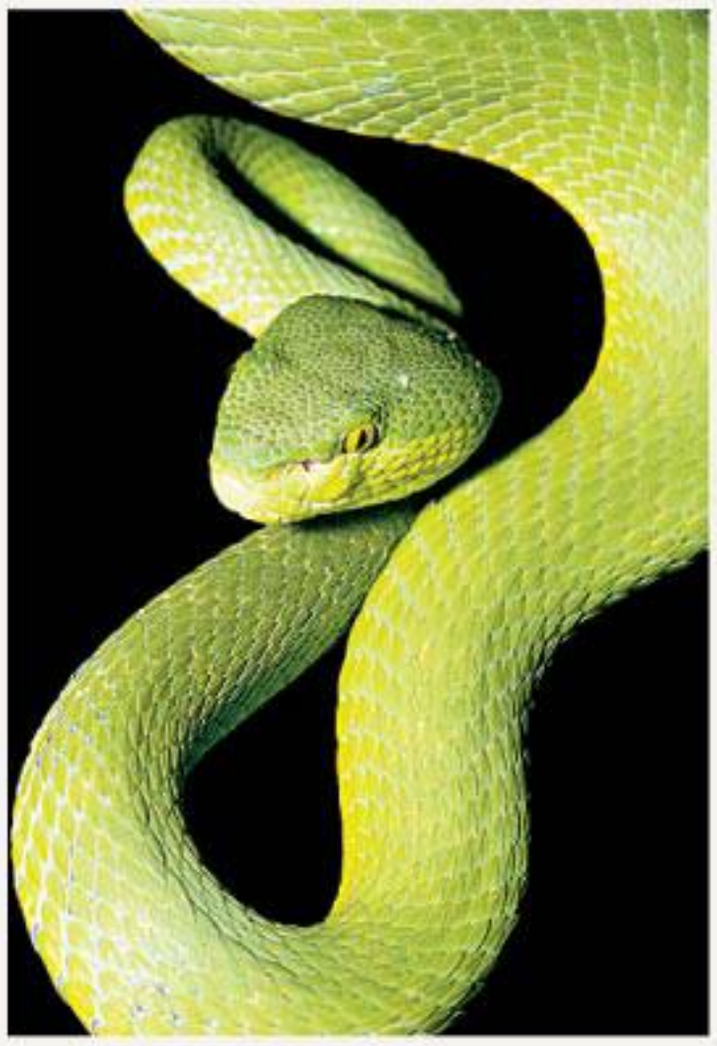

नीचे दिये गए सवाल का सही जवाब दें, और एनिमल प्लेनेट से इनाम पाएं।

- **किस सांप की फुंफकार पृथ्वी पर मौजूद सांपों में सबसे तेज होती है?**

(A) कोबरा (B) चीनी करैत
(C) मैगषैन वाइपर (D) रसेल्स वाइपर

Name.....
Address.....
City.....Pin.....Phone.....
Date of birth...../...../ .....
Email id.....

एंट्री फॉर्म को पूरा भरें और इसे इस पते पर भेज दें-

Animal Planet- Balhans Contest
P.O. Box No. 10534, New Delhi- 110 067

खतरनाक सांपों के बारे में अधिक जानने के लिए एनिमल प्लेनेट पर हर दोपहर 12 बजे देखें 'डेडलिएस्ट स्ने□स विद नाइजल मार्वेन।'

पिछले बार पूछे गए सवाल 'रैटल स्नेक के शरीर का कौन-सा भाग शिकारी को विचलित करने/शिकारी का ध्यान भंग करने के लिए आवाज करता है,' का सही जवाब है - पूंछ।

शर्तें : कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी क□यूनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही एंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई एंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

नवम्बर प्रथम, 2014

1. **तन्वी राठी,** इंदौर (म.प्र.)
2. **स्वाति श्रीवास्तव,** गोमती नगर, लखनऊ (उ.प्र.)
3. **कु. शुभतारा,** लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)
4. **विनय कुमार पटेल,** कालिंदीपुरम्, इलाहाबाद (उ.प्र.)
5. **संजना दिवाकर,** मुरादाबाद (उ.प्र.)
6. **शिखर गुप्ता,** शिवपुर, वाराणसी (उ.प्र.)
7. **अवेश अंसारी,** बूंदी (राज.)
8. **तेजबीर सिंह,** दिलकुशा, लखनऊ (उ.प्र.)
9. **सुहानी जोशी,** जयपुर (राज.)

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

सराहनीय प्रयास

1. **प्रतीक जैन,** जयपुर (राज.)
2. **ईवांशी अग्रवाल,** उदयपुर (राज.)
3. **कु. विभा जोशी,** अ□बाला (हरियाणा)
4. **आशीष केसरी,** पुराना भोजपुर (बिहार)
5. **पीयूष रंजन,** पटना (बिहार)
6. **जिशान अहमद,** गाजीपुर (उ.प्र.)
7. **सुषमा नंद कुमार,** परभणी (महाराष्ट्र)
8. **आयुषी,** नसीराबाद (राज.)
9. **तन्मय गुप्ता,** कोटा (राज.)
10. **आयुष,** मैसूर (कर्नाटक)
11. **दुष्यंत सिंह चौहान,** बीकानेर (राज.)
12. **अनूला वाणी,** हजारीबाग (झारखंड)
13. **जुगल किशोर सैनी,** थोई, सीकर (राज.)
14. **अनुष्का सिंह,** मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
15. **स्वप्निल मौर्य,** अहमदाबाद (गुजरात)

ज्ञान प्रतियोगिता- 361 का परिणाम

1. **विमल वर्मा,** बीसलपुर, पीलीभीत (उ.प्र.)
2. **सुनिता शर्मा,** जयपुर (राज.)
3. **प्राची जिंदल,** अहमदाबाद (गुजरात)
4. **मेधा जैन,** जयपुर (राज.)
5. **नीलिमा अग्रवाल,** आगरा (उ.प्र.)
6. **संध्या शर्मा,** सहारनपुर (उ.प्र.)
7. **देवन्द्र कुमार,** कांवट, सीकर (राज.)
8. **श्यामल कुमार सिंहा,** हीरापुर, धनबाद (झारखंड)
9. **अंजली रांका,** □यावर (राज.)
10. **अलंकृता नेगी,** लखनऊ (उ.प्र.)

ज्ञान प्रतियोगिता- 361 का सही हल

जीतू रॉय, योगेश्वर द□ा, सरदार सिंह, एम.सी. मैरीकॉम

1. विटामिन सी
2. जूलॉजी
3. नमक का
4. ऑ□सीजन
5. विटामिन डी

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

विशेषः कृपया अपना पता पूरा लिखें। पिनकोड नंबर अवश्य लिखें। बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी।

ज्ञान प्रतियोगिता

364 परखो ज्ञान, पाओ इनाम

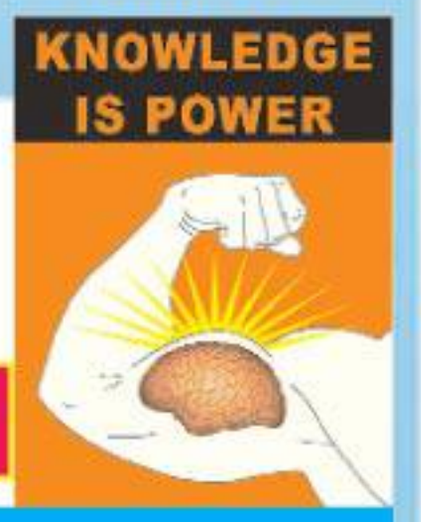

1. पिन कोड न□बर में कितने अंक होते हैं?

(अ) पांच

(ब) छह

(स) सात

2. हमारे देश का मोबाइल कोड न□बर □या है?

(अ) प्लस 90

(ब) प्लस 91

(स) प्लस 92

3. कॉलेज को हिन्दी में □या कहते हैं?

(अ) विद्यालय

(ब) महाविद्यालय

(स) विश्वविद्यालय

4. जूलॉजिकल गार्डन को हिन्दी में □या कहते हैं ?

(अ) अभयारण्य

(ब) संग्रहालय

(स) चिड़ियाघर

5. एक किलोमीटर में कितने मीटर होते हैं ?

(अ) एक हजार

(ब) दो हजार

(स) तीन हजार

नीचे एक धार्मिक स्थल का चित्र है। पहचानिये।

.....

ज्ञान प्रतियोगिता- 364

नाम.....

पता.....

.....पोस्ट .....

जिला.....

राज्य.....पिनकोड.....

विशेषः कृपया अपना पता पूरा लिखें। पिनकोड नंबर अवश्य लिखें। बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी।

जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार

चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए (प्रत्येक को सौ रुपए) भेजे जाएंगे।

हमारा पता बालहंस, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

रंग दे

1000 रुपए के पुरस्कार

दोस्तो, इस चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को काटकर (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 25 दिसम्बर, 2014 तक भिजवाना है। अगर आपकी उम्र 15 वर्ष या इससे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। पते में पिनकोड अवश्य लिखें। बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रविष्टियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

पिनकोड.....

दूंढो तो...

नीचे लिखी गई आकृतियों को चित्र में ढूंढ़ना है। इतना करके चित्र में रंग भी तो भरो, देखो कितना मजा आता है!

डर के बदलाव

1. एक चमगादड़ ज्यादा है।
2. छोटा बादल का टुकड़ा गायब है।
3. कद्दू पर मुंह बना है।
4. भूत रो रहा है।
5. जूते के निशान की जगह पंजे के निशान हैं।
6. नीचे पत्थर की जगह फूल रखा है।
7. खोपड़ी रखी है।
8. ऊपर लगे पत्थरों पर दिल बना है।
9. दूसरे पत्थर के ऊपर कुछ नहीं बना।
10. तीसरे पत्थर पर आंख-मुंह बना है।

उत्तर

बिल्ली से बिल्ली

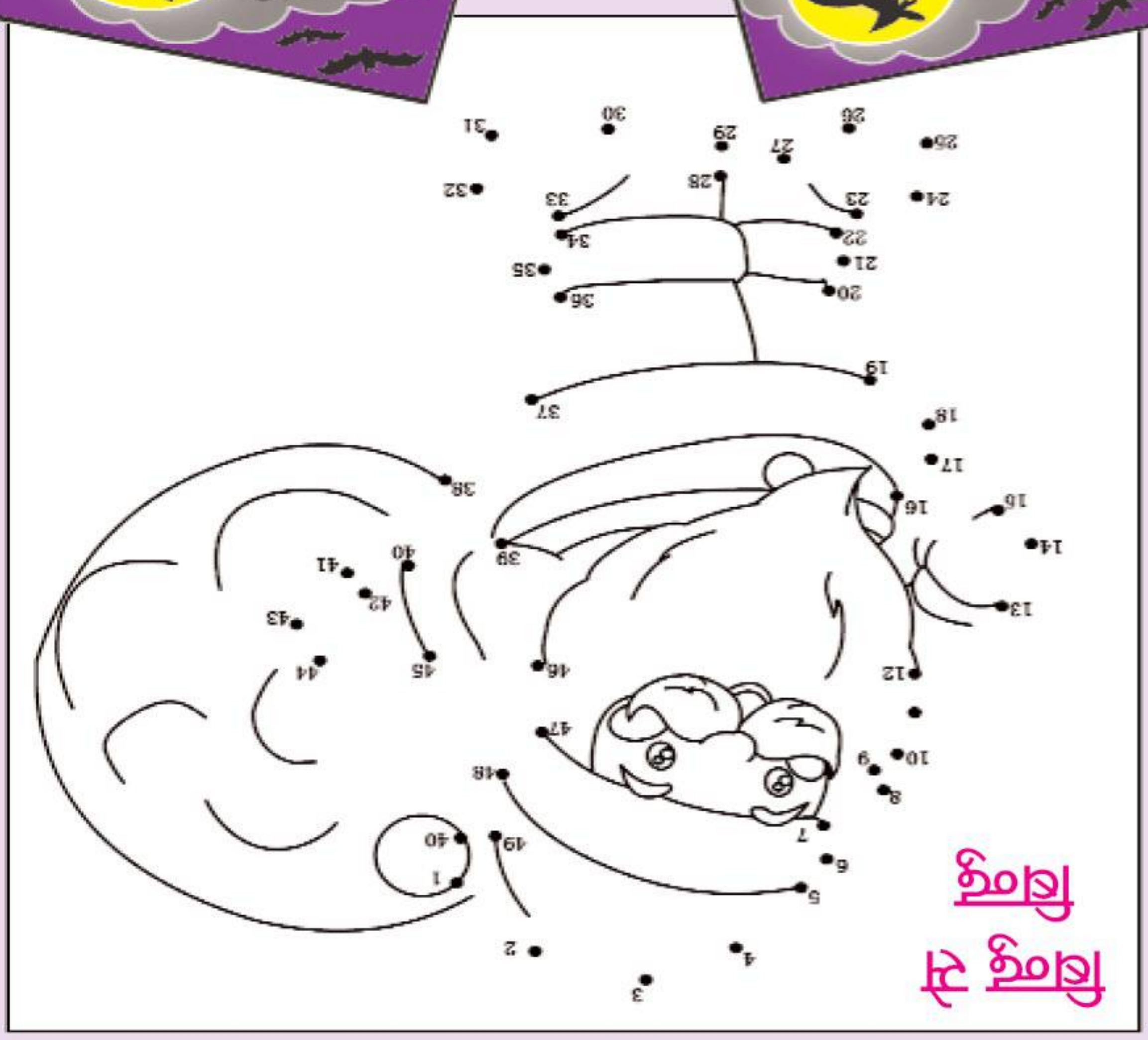

भीखू
शेर की सुरक्षा
कॉन्सेप्ट- उन्नी
ड्रॉइंग- सिमि मुहम्मा
भीखू...
मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए।
बोलो, तुम्हें क्या चाहिए?
नखरू साहब अंदर सो रहे हैं। उनकी नींद में कोई व्यवधान नहीं पड़ना चाहिए।
मैं तो बिल्कुल व्यवधान नहीं डालूंगा।
मैं तुम्हारी बात नहीं कर रहा हूं। उसने मुझे यहां गार्ड के रूप में खड़े होने के लिए कहा था।
मैं तो अपने घर जा रहा...
तुम्हें यहां मेरी जगह गार्ड के रूप में खड़ा रहना ही पड़ेगा।

...और यहां कोई आये तो उसे मार के भगा देना।
अरे! अरे! एक मिनट वहीं रुको।
क्यों क्या बात है?
तुम यहां से धीरे-धीरे खिसक रहे हो?
और यदि मैं ऐसा नहीं करूं तो?
मैं तुम्हें बहुत मारूंगा।
बाहर क्या हो रहा है?

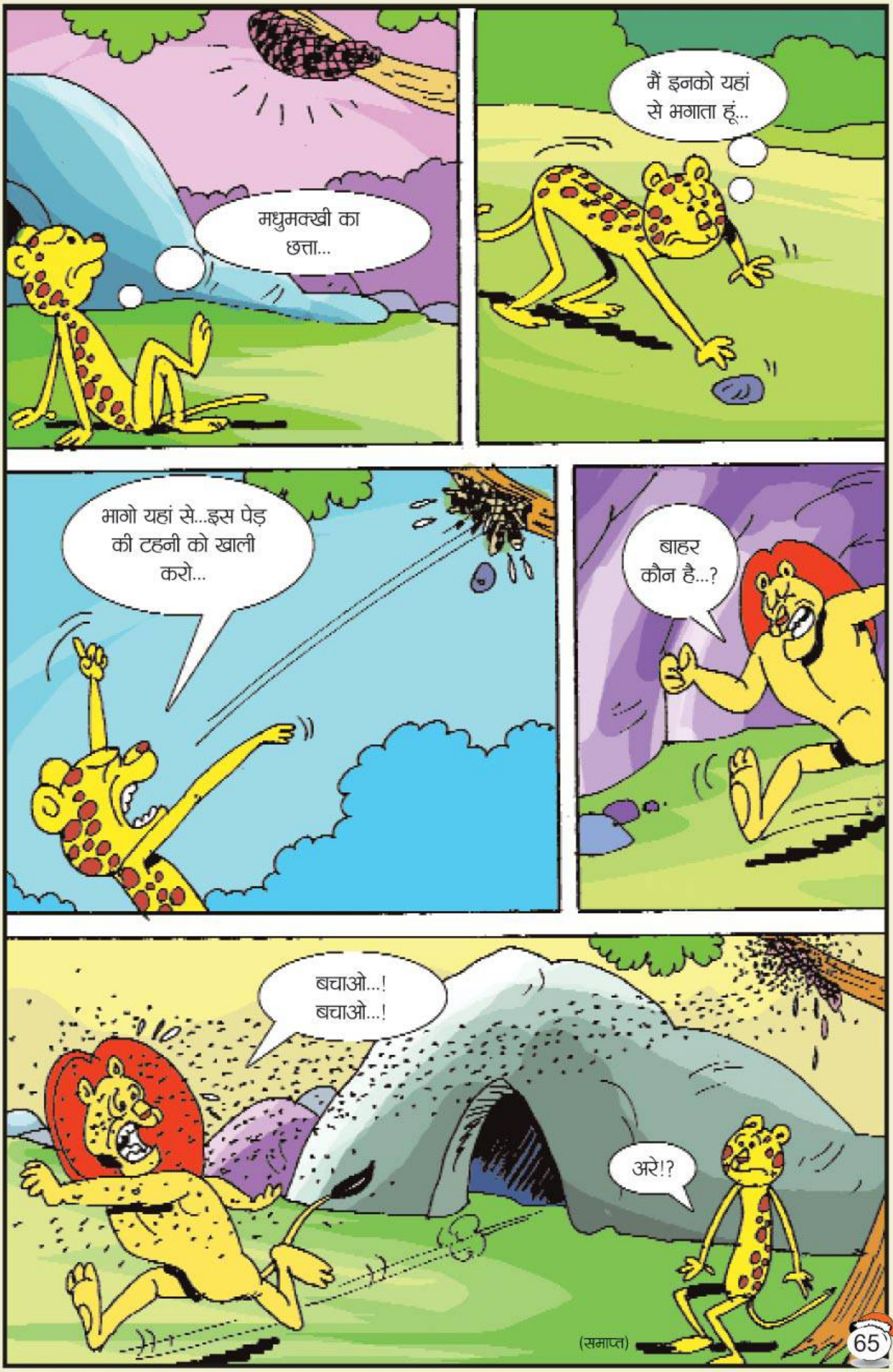
मधुमक्खी का छत्ता...
मैं इनको यहां से भगाता हूं...
भागो यहां से...इस पेड़ की टहनी को खाली करो...
बाहर कौन है...?
बचाओ...! बचाओ...!
अरे!?
(समाप्त)

मैं बालहंस विगत चार साल से नियमित पढ़ रहा हूं। इसके सभी पृष्ठों पर विशेष जानकारियां होती हैं। हमारा पूरा परिवार बालहंस पढ़ता है। साथ ही मेरे दोस्त भी इसे नियमित पढ़ते हैं। इसमें प्रकाशित होने वाले हर स्तंभ काफी रोचक-मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक होते हैं। कहानियां काफी रुचिकर-हृदयस्पर्शी होती हैं। इस अंक में चाचा नेहरू के जीवन से जुड़ी जानकारियां और चित्रकथा रोचक, ज्ञानवर्द्धक थी। तथ्य निराले बहुत ही मजेदार लगते हैं। सामान्य ज्ञान में बृहदेवश्वर मंदिर की जानकारी अच्छी लगी। सीख सुहानी हमें नैतिक ज्ञान देती है।

-नचिकेता वत्स,
लारी, अरवल (बिहार)

ज्ञान की गंगा बहाती
महीने में दो बार आती।
इसकी हर बात निराली
बच्चों को खूब लुभाती
प्रतियोगिताएं ज्ञान बढ़ातीं।
रंग दे रंगना सिखाती
गुदगुदी सबको हंसाती
हिन्दी-अंग्रेजी सिखाती
हमारे जेब खर्च में ही
हमें ढेरों जानकारियां देती।
बालहंस टीम को बधाई
इतनी सुंदर मैगजीन बनाई।

-कविता इनकिया,
नागौर (राज.)

I am regular reader of Balhans magazine. I like very much Stories, Balhans news, Seekh Suhaani, Illusion, Amazing Facts, Jokes etc. Balhans is quite good and very interesting.

-Anshuman Surya,
Lakhisarai (Bihar)

इनके पत्र भी मिले

-ज्योति छाबड़ा, चास, बोकारो
-ल□यांस पुरोहित, उज्जैन (म.प्र.)
-राहुल कुमार, चकदाहा (बिहार)
-हार्दिक जैन, □यावर (राज.)
-गौरव गालव, छबड़ा, बारां (राज.)
-वि□की वर्मा, कुशीनगर (उ.प्र.)
-सुरेश बुंदेल, टोंक (राज.)
-क्षितिज कुमार, जहानाबाद
-अतुलानंद मौर्य, एकौनी (बिहार)
-स्नेहिल, केशरी नगर (बिहार)
-चेनसुख, जालनियासर (राज.)
-दीप चन्द्र गुप्ता, इंदौर (म.प्र.)
-राजेन्द्र गोयल, बाड़मेर (राज.)
-नूर फातिमा, पकरी बरावां (बिहार)

सब्सक्रिप्शन फॉर्म

बालहंस

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (480/-रुपए)..... वार्षिक (240/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (120/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया फोन नं. 0141-3005825 पर संपर्क करें।

राशि इस पते पर भेजें-

बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर

नोटः बालहंस पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पाने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेजा जाएगा। देर से भेजी गई आपत्तियां अस्वीकार होंगी।

स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशकः रघुनाथ सिंह द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रा. लि., केसरगढ़, जे.एल.एन. मार्ग/5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं. 73-74, रीको औद्योगिक क्षेत्र, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. 46292/86, सम्पादकः आनन्द प्रकाश जोशी

Happy Christmas